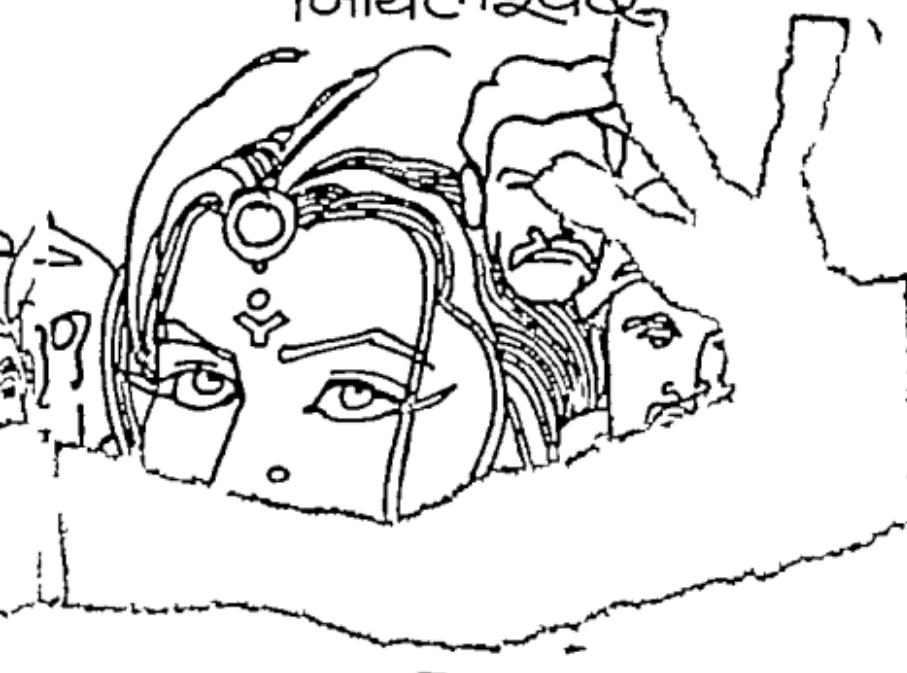




रुग्निया

मिथिलैश्वर



सरस्वती विहार

बो० टी० रोड, साहस्रनाथ, दिल्ली-110032

मूल्य : सोलह रुपये (16.00)

© मिथिलेश्वर . 1980

प्रथम संस्करण : 1980

प्रकाशक | सरस्वती विहार
जी०टी०, रोड, शाहदरा
दिल्ली-110032

JHUNIA (Novel) by Mithileshwar

समर्पण

चिठा स्व० प्रो० बंसरोपन साल
उपर्युक्त विभागाध्यक्ष वाणिज्य विभाग
ए० डी० बैद कमिउन बाहा) को
विनकी संपर्कमयी विन्दी
बाधाओं से सड़ने के
मिए मुझे आज
भी समझाएगी
रहती है।

क्रम

सूनिया/६
संघीता बसवर्णी/१७
नरेश बहु/८८
पहसी पट्टना/१२१

झुनिया

बेहुं की कलाई चुक हो गई। हर साथ की तरह इस साल भी रात में ही बेहुं की कटनी पुरुह हुई। दिन में सूरज आय उत्तमता है इसीसे यात्र में ही कटनी होती है। यत्र अधिया जलने पर कटनिहार अपने-अपने बर्तों से निकलते हैं। फिर बाठ बचे सुबह तक कटनी चालू रहती है। बाठ बच के बाद बद सूरज की किरणें आग बग जाती हैं उसी कटनिहार अपने-अपने बर्तों की ओर भीट लाते हैं।

कटनी के दिनों में वहे कहार हरिहर की आँखों से नीद उड़ जाती है। उसके जैस मबद्दलों के लिए में ही कुछ दिन अपने होते हैं। रोपनी कटनी और दबनी ये तीनों मौसम ऐसे होते हैं। जिनमें गांव के मबद्दलों को जीने-जान उठा कमाहर वर्ष भर के लिए संचित करन का मीका मिलता है। इन दिनों में जो मबद्दल आकस कर देता है उसे पूरे वर्ष मर छाले करते पहुंचे ही और उसका एक-एक दिन आगुओं में डवा दुमा बीतता है।

हरिहर के कानों में ठाकुरबारी के घटे भी आवाज मुनाई पड़ती है। बाज से बाहर ठाकुरबी का एक विशाल महिर है। प्रतिदिन रात के बाष्प बचे ठाकुरबी का भौम समता है। भौम समते समय मंदिर के सामुद्रों द्वारा चूप लेव मालाज मैं बटे जाए जाते हैं। बाज के मबद्दलों के लिए घटों की यह आवाज रात अधिया जाने की सूचना होती है। बेहुं की कटनी के दिनों में यह आवाज मुनते ही मबद्दल अपने-अपने बर्तों से मरते हैं।

खटिया से उठ बैठता है हरिहर। झुनिया को जगाने के लिए आगे बढ़ता है। झुनिया उमकी एकमात्र लड़की है। वचपन में ही मा और भाई उसे छोड़कर चले गए। उनका डोरा पूर गया था। भगवान ने उन्हें अपने पास बुला लिया। तब ने झुनिया की परवरिश हरिहर ही करता आ रहा है। वच्ची थी झुनिया तो हरिहर को कोई फिकर नहीं थी। लेकिन झुनिया की उम्र बाध सकने की क्षमता भी तो हरिहर में नहीं थी। झुनिया जवान हो ही गई। और जब से जवान हुई है झुनिया, हरिहर मुझीवत में पड़ गया है। गाव में झुनिया के बारे में अफवाहे और बातें वह रोज ही सुनता है। फिर भी जानवृक्षर अनजान बनने की कोशिशें किया करता है। लेकिन यह सिर्फ हरिहर ही जानता है कि भीनर में नग्न सच्चाई जानते हुए भी ऊपर से अनजान बनता कितना कष्टदायक होता है। पर क्या करे हरिहर? टूटी हुई मट्टी और फूटी हुई हड्डिया में कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता। गरीबों की हालत भी ऐसी ही होती है। उनका घर एक टूटी हुई मट्टी और उनकी जिन्दगी एक फूटी हुई हड्डिया होती है।

“उठ री!” हरिहर झुनिया को झकझोरता है। झुनिया कुनमुनाते हुए करवट बदलती है। एक क्षण को वह अपना हाथ-पैर ऐंठनी रहती है। फिर बैठकर आख मलने लगती है। हरिहर बोलता है, “चल, सभी चले गए होंगे। दो-चार बोझा काट लिया जाए। अभी से इस तरह मोएगी तो कैसे होगा? अभी तो पूरी कटनी बाकी है।”

झुनिया उठ खड़ी होती है। कहती है, “चलो, मैं बाहर के दरवाजे में ताला लगाकर आती हूँ।” हरिहर चल देता है। जानता हैं, झुनिया उमके पीछे क्यों आना चाहती है। अभी आगन में जाएगी। फिर कोने बाले घर के दियरखे से बीड़ी-नलाई लेकर कमर में खोनेगी। एक बीड़ी सुलगाकर मुरुमुकाएगी और तब आएगी। वचपन में ही मा के मर जाने से टोला-पडोम की लड़कियों ने उसे मेला-बाजार धूमाना तथा बीड़ी मृक-मुकाना सिखा दिया है। हरिहर को मजदूरी से फुर्मत मिलती नहीं थी कि इसे देवे। और अब तो ‘आदत’ ने भी आगे बढ़कर झुनिया के लिए बीड़ी जखरत हो गई है। खाना बनाते, आराम करते और इसी तरह प्रायः हर वक्त वह बीड़ी पीती रहती है। जब कभी हरिहर पर उनकी नजर पड़

जाती है, वह बीड़ी बुझकर यह कान पर लोड सेती है। फिर हरिहर के हृत्ये ही कान से बीड़ी उतारकर सुनपा सेती है। हरिहर की सवता है कि अब बहुत बचिया समय नहीं है। जस्त ही भूतिया अब उठके सामन भी बीड़ी पीता खुक कर देती।

योद्धा से बाहर सङ्क के किनारे थासे प्राइमरी हड्डम को सापते हुए हरिहर और भूतिया पुसिया पर आ यए। कस की भाँति भाँत भी ऐ राणा बहादुरसिंह के घेत में ही आएंगे। राणा बहादुरसिंह उसके योद्धा के सबसे बड़ी गृहस्थ है। उनके पास एक सी बाबन बीबा घेत है और एक ही जगह। उनके टेन दो बाबन बिनबाना कहा जाता है। योद्धा में सबसे अच्छी फसल उनके लेन में ही दैदा होती है। इसके में दो-दो सी बीबा रखने वाले गृहस्थ हैं पर राणा बहादुरसिंह की तरह फसल ऐ नहीं काट पाते हैं। भैंडिन इसका यत्सव यह नहीं कि राणा बहादुरसिंह को तरह और सीबों का घेत असर नहीं है। भाजकम दैदा ऊंचर घेत में नहीं, बस्ति योद्धा के बस पर होती है। योद्धा के लोप बनियाते हैं कि राणा बहादुरसिंह का बी० बी० ओ से सेन-जेत है। इस योद्धा के नाम पर भिठना कुछ बाद पास होता है सब राणा बहादुरसिंह को ही भिस जाता है।

योद्धा में कटनी भी सबसे पहले राणा बहादुरसिंह के लेत में ही लगती है। उनका घेत कट जाने के बाद दूसरे के लेत में कटनी लगती है। हर जगह 'सोइही' का हिसाब है। सोइहू बोझे काटने पर एक बीम्बा मिसता है। सो गोद के कटनिहार सबसे पहले राणा बहादुरसिंह का लेत ही काटते हैं। उनके घेत की फसल बहुत चमी और बासियाँ बनायें से भरपूर होती हैं। दूसरे के लेत में भिठना समय लगता है। उससे कम समय में ही राणा बहादुरसिंह के लेत में सोइहू बोझे कट जाते हैं। फिर दूसरे के लेत में सोइहू बोझे जानने के उपसर्व में भिसे बोझ से दुगुना बनाया राणा बहादुरसिंह के लेत से भिसे बोझे से भड़ता है। इसीसे गोद का कोई भी कटनिहार राणा बहादुरसिंह के घेत में जानने का असर नहीं लोता है।

राणा बहादुरसिंह के बाद वह चौदह और पञ्चीस बीबा के कुछ गृहस्थ उम योद्धा में हैं। राणा बहादुरसिंह के बाद उमके लेत भी कटनी सूफ होती है। उनमें से कुछ तो दूटो-धपते यहाँ तक पिर पहुँचे।

कि कटनिहार भी बन गए हैं। लेकिन कुछ उठाने जा रहे हैं। वे राणा वहादुर्रसिंह तक अपने को उठाने की कागिय में लगे हैं।

हरिहर और सुनिया के 'वावन विगहवा' तक पहुँचते-पहुँचते कटनी लग चुकी होती है। वे भी एक किनारे बैठकर काटने लगे। हवा का तेज मकोरा बहुत अच्छा लगता है। रात की शीतलता हवा में धुल-मिल गई है। लेकिन ऊपर का सुहाना वातावरण और ठडक पैर के नीचे की छब्ब-खावड जमीन से तनिक भी मेल नहीं खाती। जगह-जगह से पैर में मिट्टी के सूने नुकीले कोने चुभ जाते हैं तथा गेहूँ का कटा हुआ धना खरोचे लगा देता है। लेकिन तेजी से काटने की आपाधापी में इन नव कुछ का कोई रुपाल नहीं करता। निरन्तर अधिक काटने की नालमा पैरों को पत्थर बना देती है, जो पूरी कटनी सब कुछ भहने के लिए अभ्यस्त हो जाते हैं। फिर भी पैर में किसी तरह का चुभन हरिहर को अपने बड़े लड़के की याद दिला देती है। इसी वावन विगहवा की कटनी में उसका लड़का हमेशा के लिए उससे जुदा हो गया। हरिहर को आज भी इम बात का विश्वास है कि उसके लड़के को माप ने ही काटा था। लेकिन राणा वहादुर-मिह ने अपने खेत को बदनामी से बचाने के लिए भूत का ग्रसना और डायन का वाण लगाना ही प्रचारित कर दिया था। हरिहर को साफ याद है, जब उसका लड़का कटनी करते-करते ही पसर गया था, तब हरिहर दो-चार कटनिहारों के साथ उसे टाग-टुगकर किनारे की मेड पर ले आया था। किनारे की मेड पर चौकी लगाए इतमीनान से राणा वहादुरसिंह बैठे थे। वरावर कटनी के भय वे इसी तरह बैठते हैं। अपनी टार्च की रोशनी में उन्होंने हरिहर के लड़के को देखा था। उसकी आवें एकदम लाल-लाल हुई थी और वह अद्वेहीशी की स्थिति में था। उसने कहा था, 'मेरे पैर में किसी चीज ने काट लिया है।'

उसके पैर को देखा गया था। उसके पैर में जब्दम के कई निशान थे—मिट्टी के भूने नुकीले कोनों के चुभने तथा गेहूँ के घनों के खरोचने का। बव यह पहचानना मुश्किल था कि किसी जन्तु के काटने का निशान दौन-ना है? इसीलिए राणा वहादुरसिंह ने नवों को मुश्किल में डाल दिया था फि इसे किसी भी चीज न नहीं काटा है। भूत का ग्रसना और

बापन का बाब भगवा बताते हुए उन्होंनि यह बताया था कि इसे मूरछा
बा गई है। फिर हरिहर को उन्होंने कहा था कि इसे चर पर से बाकर
माराम से मिटाए। हरिहर उसे बेकर चर आया था। चर आने के बाटे
चर बाद उसके मुह से काफी झाम बाते रखा था। फिर हरिहर के मास
भाष-बौद्ध करने के बाबतुल भी उसका सङ्का नहीं बच सका था। हरिहर
उपर यह दुख यहा नहीं जा रहा था। लेकिन राणा बहादुर्रच्छ है उसे
सत्त्वना दी दी कि क्या करोये? त्रियका काल पूरा आता है उसे कोई
योग नहीं सकता। भयबान के यहाँ से उसका बुलावा आया था।
हमारे और तुम्हारे दोनों से वह दूसरा बासा नहीं था।

हरिहर बाब भी इस देत में कटनी करने आता है तो उसका मन दृढ़
एवं स भर आता है। इस देत की पुरामी मोटी पश्चात्तियों में अनेक सुराखों
हैं। उन सुराखों में से कई बार कई विषयों से सांचों को उसने चुपत निकलत
देता है। उसने ही कर्यों प्राय सभी कटनिहारों ने देता है। लेकिन कटनी
करने से कहाँ कोई बाब आता है! पेट का भयबर इन सांचों से प्रभाव
भयावह है। उसकी कुर माय हर भय को कुर कर देती है। सोग भूमिया
बेकर देतों में कुद पड़ते हैं। उनकं सामने बीबन की एक ही व्याक्ता होती
है—काल आ आने पर कोई योग नहीं सकता। क्या देत या महत,
काल आ आने पर कहीं भी आइयी बच नहीं पाएगा। राजा परीक्षित को
आने की साज कोहिण की पर्दी लेकिन वे बच नहीं सके।

रात के सातवें पहर बाब निकल आता है। कटनिहारों का मन बाय
बाम हो जाता है। उनके हाथ की रफ़तार और दैब हो जाती है। कई के
कठ कुछ गीत भी गुनगुनाते रहते हैं। जासकर सोमाह कुछ तेज-तेज
बाबाब में बाने रहता है। सोमाह को आदनी रात में भूमिया बहुत बच्छी
रहती है। आदनी रात ही कर्यों बंधकार में भी सोमाह की आदों के
बाब भूमिया की आड़ति ठरती रहती है। सोमाह अपने कुछ कटनिहार
मिजों से कहता है कि वह हरा के रस से ही पहचान लेता है कि भूमिया
कहाँ बैठी है। भूमिया के शरीर की लोंबी यज उमाह को बैदेन किए
रहती है ऐसा सोमाह अपने मिजों से बताता है। लेकिन उसके मिज कहते
हैं कि तू क्यनू हो पाया है। कहाँ उसके दरीर से कोई गंभ आती?

कटनी हम लोग तो वरावर उसके करीब करते हैं। पर सोमाह अपने मिश्रो की बात पर कान नहीं देना है। वह कहता है कि मुझे खेत, खलिहान, गली कहीं भी झुनिया नजर आती है तो वस, उसी समय उसके शरीर की सोधी गध मेरी नाक मे घूम जाती है।

यह सोमाह झुनिया की तरह ही अब अपने मा-वाप का अकेला वज्चा है। उसकी तीन बहनें थीं, जिनकी शादिया हो चुकी। अब वे अपनी ससुराल में हैं। सोमाह की शादी की बात भी उसके मा-वाप चलाते हैं, पर वह लड़ वैठना है। लेकिन वह चाहकर भी अपने मा-वाप को वह नहीं बता पाता है कि वह झुनिया मे शादी करना चाहता है। दरअसल ऐमा इस गाव मे कभी हुआ ही नहीं है कि उस गाव की ही किमी लड़की को इस गाव का ही कोई लड़का रख ले। इसीने सोमाह वरावर झुनिया को लेकर इस गाव से भाग जाना चाहता है। लेकिन झुनिया तैयार ही नहीं होती है। तैयार होने की तो बात अलग है, झुनिया सोमाह को प्यार भी नहीं दे पाती है। सोमाह अपने हृदय का सपूर्ण प्यार समर्पित करता रहता है, पर झुनिया की ओर से कोई जवाब नहीं मिलता। सोमाह के मिश्र बताते हैं कि तुम्हारा प्यार एकतरफा है और जब तक प्यार दोतरफा नहीं हो पाता, तब तक प्यार मे गुल नहीं खिलता है। इसीमे सोमाह अपने प्यार को दोतरफा बनाकर गुल खिलाने की कोशिशों मे सलग्न रहता है। झुनिया को पा लेना उसके लिए विश्व पर विजय प्राप्त कर लेना है।

अचानक फिल्मी गानों की मधुर आवाज कटनिहारों को चौंका देती है। वे चौकन्ना होकर देखते हैं। गाव से आने वाली पगड़ी पर सूट-वूट मे लैस एक खूबसूरत नौजवान कधे पर ट्राजिस्टर लटकाए चला आ रहा है। कौन है? —यह जानने की जिज्ञासा सभी कटनिहारों के मन को मथने लगती है। फिर जब वह नौजवान धीरे-धीरे काफी करीब आ जाता है तब राणा बहादुरसिंह के आम-पाम रहने वाले कुछ कटनिहार उसे पहचान जाते हैं। वह राणा बहादुरसिंह का लाडला पुत्र निखिल बहादुर है। आज ही शाम को शहर से आया है। एम०ए० पाम कर गया। पढ़ने के लिए शहर गया था। अब स्थायी रूप मे रहने के लिए गाव आ

गया है। यहर की सौन्दर्यास को नोकरी से क्या होया? इतना लेत
बघार है कौन देखेगा? याजा बहावुर्धिह तो अब बूझे हो जाए हैं।

निलिम बहावुर अपने जब की पगड़ियों पर चूमने समता है।
बगह-बगह भुक-भुककर कटनिहारों को देखता जाता है। एहाएक
मूनिया के पास पहुँचते ही उसके कदम ठिक जाते हैं—इतना आहवान
सीखवंश। यठीजा बदन। किर मी कटनी कर रही है। वह आहवंश से
भीषक हो देर तक मूनिया को देखता रहता है। किर पूछता है, “किसी
देटी हो?”

वह आत्म नवाकर बोलती है ‘हरिहर कहार की।

“कौन हरिहर कहार?” वह दुवारा पूछता है।

“आप महीं पहुँचानिएपा बदुमाजी वीजे स हरिहर कहार बोलता
है। आप बहुत छोटे थे तब मैं आपको वीजे पर बिठाकर छड़क पर
पुमाया करता था।

बद्धा कहो क्या हाल है?

‘सब इत्तर की छपा है बदुमाजी।

“कितन महके हैं तुमको?

‘महके महीं हैं बदुमाजी। एक महका आपकी उम्र का पा वह
ईस्तर क पास चला गया।

‘और महकी?’

‘सहकी यही एक मूनिया है।

“इसकी माँ?

‘इसकी माँ महीं है। वह भी परसोक सिंचार पड़ी। माँ और माँ
का प्यार इसे महीं बदा था।

“क्या करोगे। सब इत्तर की भीता है। और सब तो ‘ठीक है
न?’

“सब ऊपर जाने की बया है बदुमाजी।”

इसके बाद दोनों जामोज़ हो गए। हरिहर कटनी में मणगूल झो बया
और निलिम मूनिया को चूर्जे लगा। भभी-भभी मूनिया भी पहटकर
निलिम को देत लेती। और यही जात मीमांस के ऊपर जाह की घर

कटनी हम लोग तो वरावर उसके करीब करते हैं। पर सोमारू अपने मिथ्रो की बात पर कान नहीं देता है। वह कहता है कि मुझे खेत, खलिहान, गली कही भी झुनिया नजर आती है तो वस, उसी समय उसके शरीर की सोधी गध मेरी नाक में धूम जाती है।

यह सोमारू झुनिया की तरह ही अब अपने मां-बाप का अकेला चच्चा है। उसकी तीन बहनें थीं, जिनकी शादिया हो चुकीं। अब वे अपनी ससुराल में हैं। सोमारू की शादी की बात भी उसके मां-बाप चलाते हैं, पर वह लड़ बैठता है। लेकिन वह चाहकर भी अपने मां-बाप को यह नहीं बता पाता है कि वह झुनिया में शादी करना चाहता है। दरअसल ऐसा इस गाव में कभी हुआ ही नहीं है कि इस गाव की ही किसी लड़की को इस गाव का ही कोई लड़का रख ले। इसीसे सोमारू वरावर झुनिया को लेकर इस गाव से भाग जाना चाहता है। लेकिन झुनिया तैयार ही नहीं होती है। तैयार होने की तो बात अलग है, झुनिया सोमारू को प्यार भी नहीं दे पाती है। सोमारू अपने हृदय का सपूर्ण प्यार समर्पित करता रहता है, पर झुनिया की ओर से कोई जवाब नहीं मिलता। सोमारू के मिथ्र बताते हैं कि तुम्हारा प्यार एकतरफा है और जब तक प्यार दोतरफा नहीं हो पाता, तब तक प्यार में गुल नहीं खिलता है। इसीसे सोमारू अपने प्यार को दोतरफा बनाकर गुल खिलाने की कोशिशों में सलग्न रहता है। झुनिया को पा लेना उसके लिए विश्व पर विजय प्राप्त कर लेना है।

अचानक फिल्मी गानों की मधुर आवाज कटनिहारों को चौंका देती है। वे चौकन्ना होकर देखते हैं। गाव से आने वाली पगड़ही पर सूट-वूट में लैस एक खूबसूरत नौजवान कधे पर ट्रांजिस्टर लटकाए चला आ रहा है। कौन है? —यह जानने की जिज्ञासा सभी कटनिहारों के मन को मथने लगती है। फिर जब वह नौजवान धीरे-धीरे काफी करीब आ जाता है तब राणा वहादुरसिंह के आस-पास रहने वाले कुछ कटनिहार उसे पहचान जाते हैं। वह राणा वहादुरसिंह का लाडला पुत्र निखिल वहादुर है। आज ही शाम को शहर से आया है। एम०ए० पाम कर गया। पड़ने के लिए शहर गया था। अब स्थायी रूप से रहने के लिए गांव आ

माया है। लहर की सौन्दर्यास की नीकरी से क्या होया ? इतना खेड़ बघार है कौन देखेगा ? याणा वहादुर्यसिंह तो अब दूड़े हो चमे हैं।

निलिम वहादुर अपने लेत छी पगड़दियों पर धूमने लगता है। अमह-जगह मुक्त-मुक्तकर कटनिहारों को देखता जाता है। एकाएक भुविया के पास पहुचते ही उसके कदम ठिक आते हैं—इतना आकर्षक सीन्वर्य ! गठीसा बदन। फिर भी कटनी कर रही है। वह आशर्य से भीषक हो देर तक भुविया को देखता रहता है। फिर पूछता है, “किसकी बेटी हो ?

वह बाल न आकर बोसती है “हरिहर कहार की !”

“कौन हरिहर कहार ?” वह दुआरा प्रूछता है।

“आप मही पहचानिएगा बदुबाबी पीछे से हरिहर कहार बोसता है, “आप बहुत छोटे थे तब मैं आपको कंधे पर बिठाकर उड़ार पर भुमाया करता था।

बच्चा कहो क्या हास है ?

‘सब हरिहर की इया है बदुबाबी !

कितने लड़के हैं तुमको ?’

“सहके मही है बदुबाबी ! एक सहका आपकी उम्र का वह ईस्वर के पास जासा गया।

‘और सहकी ?’

“सहकी मही एक भुविया है।

“इसकी माँ ?”

“इसकी माँ नहीं है। वह भी परसोक चिचार दई। माई और माँ का प्यार इसे नहीं बदा था।

“क्या करोगे ? सब ईस्वर की सीसा है। और सह तो दौह है न ?”

“सब ईस्वर जासे की दया है बदुबाबी !”

इसके बाद दोनों सामोए हो गए। हरिहर कटनी देना चाहते हैं— और निलिम भुविया को चूरने लगा। बभी-बाबा-दृष्टि दृष्टि लगाकर निलिम को देख लेती। और यही बात मोनार्थ बढ़ार बहु दृष्टि लगा-

प्रहार करती है। उसे निखिल अपना सबसे बड़ा दुश्मन प्रतीत होने लगता है, यह जानते हुए भी कि वह उसीके बेत में कटनी कर रहा है। उसे भुनिया पर भी गुस्सा आता है कि वह क्यों उसे पलटकर देखती है। उसके हाथ एकदम से शिथिल हो जाते हैं। उससे गेहूं के पौधे काटे नहीं जाते। वह बुरी तरह बेचैन हो उठता है। यह जानकर कि निखिल अब स्थायी रूप से गाव में रहने के लिए आ गया है, उसे अपना प्रणय-भविष्य एकदम अधिकारपूर्ण लगने लगता है। फिर एक स्थिति ऐसी आती है कि हसिया फेंककर सिर-दर्द का बहाना बना पास ही की मेड पर बैठ जाता है।

सुबह के तड़के ही सतसनी की तरह यह खबर पूरे गाव में केल जाती है कि हरनाम जेल से छूटकर आ गया है। अबकी दफाँ वह तीसरी बार जेल से छूटकर आया है। इस बार उसका शरीर काफी भरा-भरा लगने लगा है तथा मूँछें बहुत बड़ी-बड़ी हो गई हैं। उसका चेहरा पहले से कहीं अधिक खूबार और भयावह ही गया है। अपने आ जाने की सूचना देने के लिए वह पूरे गाव का चक्कर एक बार लगा चुका है।

अब क्या किया जा सकता है? कौन-सा रास्ता अब शेष बचा है? राणा बहादुरसिंह को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। हरनाम को पहली दफा गिरफ्तार करवाने के बाद राणा बहादुरसिंह गहरी नींद सोए थे। उन्हें लगा था कि जेल की सजा भुगत चुकने के बाद बच्चू अब कभी चौरी-बदमाशी नहीं करेगा। इसीलिए जब पहली दफा हरनाम जेल से छूटकर आया था तो राणा बहादुरसिंह उसकी हरकतों पर विशेष गौर करने लगे थे। लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हो पाया, जैसा उन्होंने सोचा था। हरनाम के रखने में कहीं कोई बदलाव नहीं आया था। पुन दूसरी बार राणा बहादुरसिंह ने उसे गिरफ्तार करवाया था। इस बार थाना पर उसे हटरो से पिटवाया भी था। पर इस दूसरी बार भी हरनाम जेल की अवधि समाप्त कर लौट आने पर तनिक भी नहीं बदला, बल्कि पहले से कहीं और ज्यादा कठोर हो गया था। राणा बहादुरसिंह को दूसरी बार जेल से लौट आने पर हरनाम ने पानी पिला दिया था। उनकी आधी से अधिक

फलसे ओरी से कटवा भी थी और बालान में सोए हुए उन्हें एक रात अपने मित्रों से पिटवाया भी था। वे उससे बुरी तरह ठंग हो जुके थे। फिर काफी भाग-दीक्षकर तथा कई सालों की फलसें का मुनाफ़ भूटाकर उन्होंने तीसरी बार उमे मिरफ़तार करवाया था। और इस तीसरी बार भी वह पुनः भूटकर आ पया है। इस बार वह छिप्के कठोर ही नहीं हुआ है बल्कि एकदम भूतार और भयंकर हो पया है। राणा बहादुरसिंह के अन्तर्मन मित्रों ने उन्हें बताया है कि गोब्र में बूझते ही हरनाम न चुनीती थी है कि अब राणा बहादुरसिंह उसे कभी गिरफ़तार नहीं करवा सकते हैं। इसी निए राणा बहादुरसिंह पहरी सोच में दूब पए हैं।

दरअसल राणा बहादुरसिंह और हरनामसिंह की यह सहाई बहुत पुरानी नहीं है। वे भी हरनाम राणा बहादुरसिंह से काफी छोटा हैं। वे अब दूड़े हो पए हैं और उसकी जबाबी तो अभी-अभी आई है। योद्धा के जीव बताते हैं कि अपनी विराटरी के परीक्ष हरनाम को कई बार बोह कई बगह इस्तमास करने के बाद भी अब राणा बहादुरसिंह उसके मौकों पर काम नहीं आए थे तो वह फूंककार रठा था। फिर गमत तरीके से उसमे उनके ऊपर बार करना शुरू किया था। चूंकि राणा बहादुरसिंह सम्पत्तिसासी थे। योद्धा उनका था। लोय-नाम उनके थे। इसीमिए उन्होंने तीम-तीम बार हरनाम को पकड़वा कर जेह मिजवाया था। मगर इस बीच हरनाम ने अपने को काफी मज़बूत कर सिखा था और अब तो मरपूर माहम और काफी शक्ति के साथ हरनाम इस बीच में यादा हो पया है। राणा बहादुरसिंह को इसीमिए अब सारे रास्ते और दरवाजे बद नज़र आने लगे हैं।

हरिहर की मझे म शाराब पीते हरनाम को अपना हमरज औंकिदर मिस पया। जागिदर का राजनीतिक औद्योग अब याद की देखाइयों को छुने पया है। गोब्र के अध्य युवकों की तरह मैट्रिक या थी। ए। करन के बाद जौमिल्ल रोड़ी रोटी में गही फँसा बल्कि बचपन से जमी अपने मन की यज्ञनीतिक सगल को उसने और अधिक विस्तार दिया। अनन्ती इस छोटी उम्र में ही उसने कितनी पाठियां छोड़ी और पढ़ी। दरअसल उसके लिए पाठियों का कभी महस्त मही पया। पूनाम सहने वासे अपनि

जिनमें उसे कुछ लाभ होता था, जो उसे कुछ लेते-देते थे, वह उन्हींका प्रचार करता था, चाहे वे किसी भी पार्टी के क्यों न हो। इस डलाके के कई लोगों को उसने एम० एल० ए० वना दिया है। इमीलिए इस इलाके में उसकी पूरी बाक है। इस गाव में भी उसकी भरपूर लोकप्रियता कायम हो गई है। गाव के अमीर-गरीब, दोनों वर्ग उसे चाहते हैं। चमरटोली और दुसाघ टोली में सरकारी नल और कुएँ का इतजाम उसने करवा दिया है। अमीर वर्ग की लेवी सूखाप्रस्त क्षेत्र घोषित करके उसने माफ करवा दिया है। गावके तमाम लोग कहते हैं कि जोर्गिंदर एक सही राजनीतिक व्यक्ति है। उसका जन्म इस गाव के उद्धार के लिए ही हुआ है। जोर्गिंदर की मिट्टी के मकान के स्थान पर उठ आए पक्के मकान से गाव के लोग काफी प्रभावित हैं। वे अपने बच्चों को भी राजनीति सिखाने तथा जोर्गिंदर के शार्गिंद बनाने नी कोशिश में लगे रहते हैं।

“हरनाम को देखते ही जोर्गिंदर अपने राजनीतिक लहजे में कहता है “दरे हरनाम, यहा हो। जब से तुम आए हो, तब से मैं तुमको खोज रह हूँ।”

“कहो, क्या हाल है?” हरनाम पूछता है।

“सब ठीक है। तुम्हारे लिए मैंने दारोगा, इन्स्पेक्टर, डी० एम० पी० और एम० पी० को तग कर दिया था। जानते हो, एम० पी० का ट्रान्सफर हो रहा था। वे वहुत मुश्किल में पड़ गए थे। मेरे सामने गिडगिडां लगे। बस, मैंने अपने एम० एल० ए० को भिडा दिया था। फिर कहना, उनकी बदली रोक दी गई। अब बच्चू को जो कहूँगा सो करने तुम अब मौज से रहो। जब तक यह एस० पी० रहेंगे, कोई तुम्हें गिरफ्त करने नहीं आएगा।”

हरनाम गदगद हो जाता है। वह अभी एकदम अनुभवहीन है। पहले भी जोर्गिंदर ने कई बार उसे इस तरह का आश्वासन दिया है। इनके बाबजूद भी वह गिरफ्तार हुआ है। फिर भी उसे झटका नह है। जोर्गिंदर की बातें इतनी प्रभावशाली और अनरदार होती हैं। गदगद हो ही जाते हैं। उन्हें जोर्गिंदर अपना परम हितंपी लगते हैं।

हरनाम बोनिवर का हाथ पकड़ते हुए कहता है, “बैठो यार, जोका
पियो। कोई सदा है ? ”

जोनिवर बैठकर हरनाम के साथ ही पीले लगता है। फिर कहता है,
नहीं दोस्त सदा क्या ? तुम्हारी एक मन्त्र दी काढ़ी है। इसेक्षण आ
रहा है। देखना, चमटोली और दुसाप टोली के नोब भाहूने न पाए।”

इसक लिए तुम बफिकर रहो। एक आईमी भी महीं बहकगा।
तुमसे भी कोई अपना होमा ? बिराफ़े तुम आहोगे उसीको ओट पड़ेया।”

इसी तरह हरनाम से बतियाने तथा उसके साथ कुछ देर तक पीने के
आदर्शिवर बहा स चम दिया। अपनी पूर्व निवित योजना के बनुसार
वह सीध राजा बहादुरसिंह के बासान पर आया। राणा बहादुरसिंह को
वेलत ही दूर स ही हाथ बोहकर वह बोला “पा सागी चाचा !

कूप रहो युद्ध रहो इधर दो-तीन दिनों स मन्त्र महीं आए।
राजा बहादुरसिंह भरपूर राजि के साथ उसकी ओर मुखातिव हो जाते हैं।
वह राजा बहादुरसिंह का अपना भर्तीजा महीं है। फिर भी अपने भर्तीजे
स महीं अपावा भासीय लहजे म कहता है चाचा सासा हरनाम फिर
छूट गया। दसक बाहुर के दोस्त कौशिङ-परबी कारक इसे छाटा देते हैं।
अबकी बार इस राजे को सदा क लिए विरफ्तार करवा दिया जाए।”

“यही तो मैं भी सोब रहा हू बेटा। यह स जब मिने सुना है इंड वह
आया हु मेरी भीड हरनाम हो गई है।”

“जही चाचा फिर करले की कोई बात महीं है। एस० पी० डी०
एस० पी० सभी मेरे अपने हैं। अभी परसों ही तो बी० एस० पी० की
सदृशी भी जावी में आया था। याए यार मेर झार का। बाप चुरबाप
देरते रहिए। मैं महींसे भर के मन्त्र इसे फिर विरफ्तार करवा रहा हू।
सिफ़ आपका हाथ मेरी पीठ पर रखना चाहिए।”

“अरे बेटा, मैं तेरे स अमग जोड़े ही हू। तुझे अब ब्रिट चीज़ की
ज़करत पड़े, मिर्के घवर कर देता।”

फिर राणा बहादुरसिंह अपने भीड़ को आवाज लगाते हैं। उनका
नीड़ नहीं है। यायद कहीं गया है। वह बड़े होते हुए बोनिवर से कहते हैं
“नीड़ नहीं है। जसो बेटा, भग्नर ही जसा आए। मछड़ी तम रही है,

स्थाकर जाना ।

जोर्गिंदर राणा वहादुर्सह साथ उनकी ड्यौडी के अन्दर घुमा । अचानक आगन के बरामदे में खड़ी एक बत्यत खूबसूरत नौजवान लड़की को देख वह भीचक हो उठा । फिर उसे बचपन में अपने साथ ढेली, अपने से छोटी राणा वहादुर्सह की लड़की विमली याद आती है । वह अब अक्षय होते हुए पूछता है, "विमली है क्या ?"

राणा वहादुर्सह कहते हैं, "हाँ, विमली ही है । वी० ए० कर गई । अब ये दोनों गाव निखिल के साथ आई हैं । वह भी ए० ए० कर गया । अब ये दोनों गाव में ही रहेंगे । यही से इसकी शादी कर दी जाएगी और निखिल खेत-बवार देखेगा ।"

फिर राणा वहादुर्सह विमली से कहते हैं, "पहचानती नहीं हो ; उत्तरपट्टी के रामजी मंड्या का लड़का जोर्गिंदर है ।"

अब विमली पहचान लेती है । उसके अघर कुछ-कुछ फैल जाते हैं । वहूत महीन हस्ते हुए वह हाथ जोड़कर जोर्गिंदर को नमस्कार करती है । इस क्रम में उसकी मछलीनुमा बाल्वें जोर्गिंदर की आखो से मिल जाती हैं । वसा, जोर्गिंदरका होश-हवास ही जैसे गुम हो गया । कुछ क्षणों के लिए जोर्गिंदर को यह भी मालूम नहीं पड़ा कि उसके पैर के नीचे घरनी है या नहीं ।

राणा वहादुर्सह ने जोर्गिंदर को एक जगह बैठाया । फिर वार्ते शुरू कर दी । लेकिन जोर्गिंदर का मन तो बशात हो चुका था । विमली का नियम संदर्भ और उसके युवा शरीर का मासल उभार जोर्गिंदर को बैचैन किए हुए था । विमली अब शादी से पहले तक गाव में ही रहेगी, यह बात जोर्गिंदर के अन्दर जाले बुनने लगती है । यहा एक बार फिर वह अपना राजनीतिक बस्त्र चलाता है, "चाचा, विमली का तो मुझे ख्याल ही नहीं था । अच्छा, अब हाथ से नहीं निकलने दिया जाएगा । मेरे दो मित्र हैं—एक राजी में प्रोकेमर तथा दूसरा बोकारो में इज्जी-नियर है । दोनों घर के भी कामी मुनी-सम्पन्न हैं । इनमें से किसी एक से विमली की शादी कर दी जाए ।"

"अदे बेटा, यह हो जाएगा तब तो मेरा सारा बोझ ही दूर हो जाएगा ।"

जाएगा।" राणा बहादुरसिंह सारी से पहले ही आमार प्रकट करते स्थगित हैं। वह नज़र बचाकर विमली को देखता है। विमली भी यह सब मृत एही होती है। उसका ऐहए रस्ता हो जाता है। अस, जोगिन्द्र को साफ सबता है कि उसका राजनीतिक बार सही अपह हुआ है। और अपने राजनीतिक बार के सफल होने का प्रकाश जोगिन्द्र के मृत में है।

विमली राणा बहादुरसिंह और जोगिन्द्र को उसी ही मण्डी में लिमाने सभी। राणा बहादुरसिंह जोगिन्द्र की यासी में विमली से जबरज मछली गिरता है। जोगिन्द्र बूँद छाकर जाता है। जाता है और बातें कहता जाता है। वह विधानसभा से लेकर घासांड तक की अनेक गुण सूचनाएँ राणा बहादुरसिंह को देता है। इस बीच नज़र बचाकर बराबर ही विमली को देखता जाता है। इसी तरह करीब थोपटे बाब वह राणा बहादुरसिंह से विदा लेकर चल पड़ा। उसके साथ पर से बाहर चासान तक राणा बहादुरसिंह भी जाए। उसे भर लियाह एक बार फिर विमली को देखन की इच्छा होती है। वह राणा बहादुरसिंह से कहता है "अरे चाचा चाची तो नहीं देख पाया। कहीं कहीं है क्या?"

"नहीं पर मैं है तबीयत लगाव है।

"तब एक मिनट लगाएँ। मैं उमड़ो देखाकर आ रहा हूँ। और जोगिन्द्र राणा बहादुरसिंह को चासान पर ही छोड़ देती से उसके पर के अम्बर चुप जाता है। विमली उसे अदेसे आया देख बोड़ा बसहृज हो उठती है। वह विमली के एकदम करीब चला जाता है। फिर कहता है 'विमली। बरा चाची से मुझे मिलाओ। वे बीमार हैं न?

विमली माया हिमाकर मां के बीमार होने की सूचना देती है। फिर जोगिन्द्र को लेकर उस कमरे में चल देती है विसमें मां है। उस कमरे में प्रबंध करते बहत जोगिन्द्र बालबूझकर विमली के दरीर का स्वर्ण छर रखा है। फिर इस सबसे विलकृत अनजान बहत हुए जोगिन्द्र चाची का देखन-नुजने तक उनकी बीमारी के बारे में पूछने लगता है। इस बार वह दीदार ही बहा से चल देता है। उसे लिखते बहत एक बार भरपूर नज़र विमली पर ढासता है। बाहर बचाकर राणा बहादुरसिंह तें चाचा

की दीमारी को ठीक करने के लिए कुछ हिदायतें देता है। फिर वहा से चल देता है।

अब दोपहर ढल चुकी है। जोगिन्दर को झुनिया याद आ गई। झुनिया की कसी हुई देह, उफान खाता थीवन और मलोना स्पष्ट पिछले वर्ष भर से जोगिन्दर की बाखी में गड़ रहा है। अपने गाव के हरिहर कहार की इस भोली-भाली लड़की को जोगिन्दर कभी का फास चुका होता; लेकिन उसे कभी मौका ही हाथ नहीं आया। हरनाम था तो उसके नामने किसीकी दाल गलती ही नहीं थी। हरनाम के जेल चले जाने के बाद राणा वहादुर्रसिंह ने हथिया लिया था। इस बीच जब कभी मौका निकाल-कर जोगिन्दर पहुचता, सोमालू को पहरा देते पाता।

इन समय झुनिया अकेली ही होगी। हरिहर कही रस्ती का इत्तजाम करने गया होगा। रात में कटनी करते वक्त बोझा वाधने के लिए कटनि-हार दिन में ही रस्ती का इत्तजाम कर लेते हैं।

जोगिन्दर तेजी से कहार टोली की ओर झुनिया की मढ़ई के पास पहुच गया। उसका अनुमान गलत निकला। हरिहर पुआल को पानी में भिगोकर अपनी मढ़ई में ही रस्ती बना रहा था। खंर। हरिहर के रहने और न रहने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। वह राजनीतिज्ञ है। हरिहर के सामने भी उसकी बात बन सकती है। वह सीधे हरिहर की मढ़ई में घुस जाता है। उसे देखते ही हरिहर खटिया से नीचे उतरकर जमीन पर बैठ गया। वह खटिया पर जा बैठा। हरिहर पूछता है, “कहिए बाबू साहब, कैसे आना हूबा?”

“अरे हरिहर भाई, तुम्हारा कुशल-मगल पूछने चला आया। नहीं तो तुम शी वहोगे कि बाबू साहब सिर्फ चुनाव के दिनों में ही हम लोगों के दरवाजे आते हैं।”

“नहीं, नहीं, बाबू साहब, ऐसी बात नहीं है। आपकी नेकी को कौन मूलेगा? आपकी बदीलत ही तो आज नल का पानी पीने को मिल रहा है अन्यथा हम गरीबों को कौन पूछता?”

“हरिहर भाई, तुम नहीं जानते हो। मैं वरावर गरीबों का ही पक्ष लिया करता हूँ। इसीसे बाहर में लोग मुझे गरीबों का नेता कहते हैं। और

वामार तुम्हारे कार मेरी किंचेय दृष्टि रहती है। मूमिहीनों को कुछ वसीन
मिलने चाहती है। उसमें मैंने सबसे पहला नाम तुम्हारा ही लिखवा दिया
है। याक की ओर से इस गाँव के कुछ मजदूरों के मकान बनवाए जाएंगे।
उसमें तुम्हारा नाम नहीं था लेकिन मैंने सबसे ऊपर तुम्हारा नाम ही
लिखवा दिया है।"

हरिहर वारचर्यचक्रित् विस्फालित् और कृतज्ञ नेपा से जोगिन्द्र
की देखने पगड़ता है। उसकी ओरों सलालसा आती है। गण्डगढ़ कँठ से वह
बोलता है "बाढ़ साहू आपको नेहीं का बदला हूम गरीबों से किसी जन्म
में भी नहीं दिया जाएगा।

ऐसा मत कहो हरिहर। तुम आपन को गरीब मत कहो। अब और
अधिक समय नहीं है। चारों ओर सड़ाई छिह यह है। अब यरीओं को
बस्द ही असंसी सुराज मिलेगा। उत्तर रहन को मकान रुपा खेती करने
की वसीन सरकार देगी।"

हरिहर विजासापूर्ण दृष्टि से जोगिन्द्र की ओर ताकते हुए उसकी
बात सुनता रहा। जोगिन्द्र इसी तरह कुछ दर रक्ष हरिहर को
स्वर्णों की दुनिया में मूलता रहा। मूलिया अब तक यह से बाहर नहीं
मिलती है। यह बात जोगिन्द्र को बचोटने चाहती है। फिर तत्काल ही
उस एक अच्छी बात सूझती है। वह मपनी बैद से सिगरेट का एक ऐंडेट
मिलाता है। हासीकि मालिनी भी उसकी बैद मे है। लेकिन वह हरिहर
से कहता है "मालिन होगी तुम्हारे पास ?

हाँ वभी मंगवाए देता हूँ। और वह मूलिया को जापान समाता है
"मूलिया !

"रहने दो हरिहर भाई। कुछ कर रही होयी" जोगिन्द्र शीघ्र में ही
बोल उठता है और उड़ा होत हुए कहता है "मैं स्वयं ही अस्तर जाहर
जाना देता हूँ।

जोगिन्द्र तभी से हरिहर के घर के अस्तर जाना जाता है। मूलिया
आपन में बैठी मिट्ठी मिले धान को सूप से अस्त कर रही थी। जोगिन्द्र
उस्के मालिन मालिन है। फिर सिगरेट मूलिया है। फिर एक सिमरेट
मूलिया की ओर भी बढ़ता है। मूलिया नहीं लेती है। बदती है "नहीं

बाबू साहब ! मैं बीड़ी पीती हूँ ।”
 “लेकिन मेरे कहने से एक पीकर तो देख !” और जोगिंदर जवरन
 झुनिया के हाथ में सिगरेट पकड़ा देता है। इस क्रम में वह धीरे से झुनिया
 की हथेली भी दबा देता है। इससे पहले भी जोगिंदर झुनिया को कई
 बार आंखों से इशारा कर चुका है तथा छेड़खानी भी करता रहा है।
 इसीसे झुनिया के पास उसे भय, शर्म, सकोच और हिचक नाम की कोई
 भी चीज महसूस नहीं होती है। इधर-उधर चौकली दृष्टि से देखते हुए
 वह अपनी जेव से दस का एक नोट निकालकर झुनिया की ओर बढ़ा
 देता है। झुनिया नहीं लेती है। वह आगे बढ़कर झुनिया को दबोच लेता
 है।

“बाबू यही पर हैं !” भयभीत आवाज में बोलती हुई झुनिया छठ
 पटाते हुए उससे अपने को अलग कर लेती है। वह निराश होकर आ गया
 मर्डई में हरिहर उसी तरह रस्ती बना रहा होता है। एक क्षण के
 लिए वह हरिहर के पास खड़ा हुआ। फिर अपने घर की ओर चल पड़ा।
 अब शाम गहराने लगी है। शीघ्र ही शाम अब रात में वदल जाएगी।
 फिर सारा गाव रात के अधिकार में छिप जाएगा। लेकिन नहीं। अब हर-
 नाम आ गया है। अब प्राय हर रात को गाव में कोई न नहीं घटना
 घटेगी। लेकिन कौन इसकी चिन्ता करता है तथा घटनाओं को रोकने के
 लिए रात भर जागकर कौन जोखिमपूर्ण कार्य करता है ? सभी पकाने-
 खाने तथा इत्मीनान से गहरी नींद सोने की तैयारियों में मशगूल हो
 जाते हैं।

रोज की तरह शाम गहराते ही सोमारू झुनिया के घर की ओर च
 पड़ा। इस समय झुनिया आगन में खाना पका रही होगी। सोमा-
 रूके करीब ही बैठकर बीड़ी सुलगाएगा। एक बीड़ी उसको भी सुल-
 कर देगा। और फिर रोज की तरह करीब घण्टे भर तक उसे अपनी व
 में उलझाए रहेगा। अधिकतर उसकी बातें प्यार और प्रेम से सम्बन्धित
 ही होती हैं। वह अपने तरीके से प्यार और प्रेम को परिभासित करता
 वह झुनिया के मन तक यह बात पहुँचा देना चाहता है कि वह झुनिया

सम्मा प्यार करता है। वह चाहता है कि भुनिया भी उसके प्यार का जवाब दे। सेकिन भुनिया कोई कदम नहीं उठाती है और बालबद्ध यह कि भुनिया उसका विरोध भी नहीं उठाती है।

सोमाळ को इस बात से लुभी होती है कि उसके आपमन से हरिहर नाराज़ मही होता है। दरबसस गांव के बाबू भोगों के अपने पर आने से हरिहर मन ही मन बस-मून आता है। सेकिन सोमाळ के आने से तो उसे लुभी ही होती है। दरबसस में सोमाळ उसके अपने वर्ष और अपनी बियादरी का है। और सोमाळ हरिहर के सिए बहुत कुछ करता भी है। कई बार मुसीबत पड़ने पर हरिहर को सोमाळ ने ही उदारा बा। अपने माँ-पाप से विनिय भी कम ब्यास सोमाळ हरिहर का नहीं रखता है। इसीसिए हरिहर यह जानते हुए भी कि भुनिया जवान है सोमाळ वा अकेसे में उसके साथ बैठना-बतियासा ठीक नहीं होता वह सोमाळ को नहीं रोक पाता है। आविर क्या करे हरिहर? भुनिया के साथ अकेसे में बोलने-बतियाने वाले कई भोगों को वह जानता है। सेकिन उन्हें रोकने की शक्ति उसमें नहीं है। तब फिर एक सोमाळ के बढ़ जाने से क्या होगा? सोमाळ तो कई दृष्टियाँ से उसका अपना है। हरिहर के मन में कही न कही यह बात है कि भुनिया को सोमाळ को सींप दे। सेकिन ऐसा कभी हुआ ही नहीं है। माव की ही मङ्गली गांव के ही सङ्केसे। गांव हुसिया और पूँजेमा। और इसीसिए हरिहर कभी मूसकर भी यह बात अपने होंठों पर नहीं सा पाता है।

सोमाळ नहीं मैं खटिया पर सोए हरिहर के पास न रुक़कर दीपे उसके चर के अमर बसा गया। बैसाकि वह जानता था भुनिया उसे आगम में आना पकाते हुए ही मिलती है। वह भुनिया के करीब ही बैठ गया। इस बार वह भुनिया के काकी करीब बैठा है। भुनिया बोला बिसफ-कर असम हो जाती है। कहती है, “बरा बूरही बैठो। बाबू बाएंगे तो क्या कहूँगे?

वह कहता है “कहेंगे क्या? कुछ नहीं। एक दिन उनके सामने ही दूसरों अपने पर से जाक़ंगा।”

“बत्ती हटो। तुम तो दिन रात यही बदले रहते हो। भुनिया मिछ़क रहती है। भुनिया की यह मिछ़की उसे बहुत अच्छी समझी है। बह-सप्पने

कमर के फेंटे से बीड़ी निकालता है। चूल्हे से एक जलती हुई चिनगारी खींचकर एक ही साथ दो बीड़ी सुलगाता है। एक खुद पीने लगता है और एक झुनिया की ओर बढ़ाता है, “मैं अभी पीचुकी हूँ।” कहते हुए झुनिया ना-नुकुर करने लगती है। लेकिन वह जवरन झुनिया को बीड़ी थमा देता है। वह चुपचाप पीने लगती है। बीड़ी के दो-चार कश खींचने के बारे सोमारूह कहता है, “झुनिया, जानती हो, कल रात से ही मैं गुस्से के मार्ग जल रहा हूँ। अगर मेरा वश चलता तो मैं राणा वहादुर के उस शहरिय छोकरे की एक आख निकाल लेता।”

“क्यों? उसने तुमसे कुछ कहा क्या?”

“अरे, मुझको क्या कहेगा? वह आख फाढ़-फाढ़कर तुझको दे रहा था।”

“तो इससे तुमको गुस्सा क्यों आया?”

“तुम नहीं समझोगी झुनिया! भले ही तुम मुझको जो सम्म लेकिन मेरी आखो के सामने कोई तुझे आंखें फाढ़-फाढ़कर देखे, या वर्दीशर नहीं करूँगा।”

“तो क्या करोगे? घर में उतना अनाज तो नहीं है कि वह बेटियों की तरह मैं घर में छिपी रहूँगी। रोजी-मजूरी के लिए सेतू-हान में जाना ही पड़ेगा। फिर तुम किसको रोकोगे? जोगिदर, हरना तुम किस-किसको रोक सकते हो?”

झुनिया की इस बात से सोमारू का माथा झुक जाता है। सचमुक्तिसीको नहीं रोक सकता। वह खून का धूट पीते हुए माथा ऊपर लेता है। फिर कहता है, “लेकिन झुनिया, मुझमे शादी के लिए तू सकं कह दे। इसके बाद देख, मैं क्या करता हूँ।”

झुनिया हसने लगती है। हसते हुए कहती है, “तुम्हारा दिमाग ही गया है। भला गाव में ही शादी होती है! और तुम तो रिश्ते लगागे।”

सोमारू गमीर हो जाता है। कहता है, “झुनिया, आदमी रिश्ते कर जन्म नहीं लेता है। रिश्ते पहा बनाए जाते हैं। क्या हम पनहीं बन सकते हैं?”

“हठो भी ऐसी-बेंसी बात मत कहो। तुमको धर्म आती है। और भूनिया भावन से अपना आचा भृंड ढक सेती है। भूनिया का यह रूप जानसेवा होता है। गोमारु उमके इस रूप पर तुर्बात हो जाता है। उसम रहा नहीं जाता। वह एक बार फिर मिहगिड़ाते हुए कहता है ऐस भूनिया, तू सिर्फ हा कह दे। सिर्फ तेरे ही कहते की देर है। फिर तू रेखा किठनी जल्दी इष माँव के जस्ताहों से मैं तुम असर कर भरा हूँ।”

‘कौसे असर कर सोगे? भूनिया असज्जान बसत हुए उसस पूछती है।

‘वह कहता है ‘यहाँ से सेकर तुमको भाव जाड़ा।

“आगकर कहा जानोगे?

“किसी दूसरे बाब में पा छाहर में।

‘तो वहा जस्ताद नहीं होगे?

“हूँ लेकिन मैं तुम्हे पर से बाहर नहीं निकलते दूगा। मैं भूद पमांड़ा बीर हम दोनों जाएंगे।”

इस बार भूनिया फिर हँसती है। कहती है ‘तुम वहे शूर्प हो। सिर्फ सप्त देखा करत हो। मैं कई बार तुमसे कह चुकी हूँ कि यह सब सोभकर बेकार में अपना दिमाम मद द्रपाया दरो। लेकिन तुम मामते ही नहीं हो।’

एक लंब के सिए वह चूप हो जाता है। उस बीड़ी पीने की तसव महसूस होती है। वह पुनः दो बीड़ी सुसगाता है। इस बार एकदम आमानी में भूनिया उसमें बीड़ी सेकर पीने समती है। उम भूनिया के इस व्यवहार से काढ़ी बस भिसता है। वह विसरकर भूनिया के एकदम करीब आ जाता है। फिर व्यार से भूनिया की हयेसी अपने हाथों में लेने की कौशिया करता है। व्यार या जाएंगे। “कहते हुए भूनिया छिनकर उगमे दूर हट जाती है। वह यहा हो जाता है। कापी सुमर युवर यमा। अब वह असेगा। लेकिन उसने से पहले हर बार की तरह इस बार भी गोमारु अपनी कमर में लिपटी घौंठी के फोटे में एक पचीसी बीड़ी (पचीस बीड़ियों का एक बरबल) तथा माँचिस की एक छिरिया निकालकर भूनिया के हाथ में अपाने सपता है। भूनिया नहीं भेती है। इसकार करती है ‘एहने दो तुम बराबर यह सब बर्मों माते हो? मैं नहीं सूंगी।’

‘गोचरा हूँ तुम वह बीड़ी अधिक पीने समी हो। इसीसे लिता जाया

हूँ ।"

"लेकिन मैं नहीं लूँगी ।" झुनिया तुनककर अलग हट जाती है ।

"देखना हूँ, तुम कैसे नहीं लोगी ।" और सोमारू आगे बढ़कर झुनिया के आच्छल के छोर से जवरन बीड़ी का वण्डल और मार्चिस की डिविया वाध देता है । लेकिन सोमारू जब चलने लगता है, तब झुनिया कहती है, "देखो, अब ने यह नव मत लाना । नहीं तो पक्की कह रही हूँ, अब कभी नहीं लूँगी ।"

"ठीक है, मत लेना ।" सोमारू कहता है, "मैं आगन में चूल्हे के पास रख दूँगा । जिने पीते की जरूरत पड़ेगी, उसके काम आएगी ।"

सोमारू चला गया और झुनिया सोच में डूब गई । ऐसा हर बार होता है । देर तक वसियाने के बाद जब सोमारू चला जाता है, चूल्हे के पास घटो गमगीन बैठी झुनिया सोच में डूबी रहती है । यह सोमारू कितना भोला-भाना है और उसे कितना मानता है । लेकिन सोमारू मूर्ख भी तो एक नवर का है । अब उसके पास क्या रखा है कि सोमारू उसके ऊपर मरता है । उससे अलग वह रहती है, तो सोमारू सब कुछ देख-सुन देता है । उसे अपनाने के बाद हरनाम, जोगिंदर और इसी तरह के लोगों का उनके पास आना सोमारू कैसे देखेगा ? और वे लोग उनकी जवानी रहने तक आएगे ही । उनको रोकने की शक्ति और क्षमता सोमारू में नहीं है । झुनिया सोचती है कि कल सोमारू को वह डाटेगी । कहेगी, 'यह प्यार-प्यार की बात अब ने तुम सुझारे नहीं बतियाना । तुम अलग, मैं अलग । वेकार की बात कर-करके अपना तो दिमाग खराब करते ही हो, मुझे भी सोचते रहने की बीमारी देकर पागल बनाना चाहते हो ।'

झुनिया चूल्हे से हडिया उतार लेती है । भात पक गया है । वह हडिया के ऊपर ढक्कन रख कटोरे में माड पनारती है । अब हडिया के भीतर भात में छिपे आलूओं को ढूँढ़-ढूँटकर निकालती है । सभी आलू निकाल चुकने के बाद वह उन्हे ढीलकर चोखा बनाने लगती है । थोड़ा नमक-तेल के साथ-साथ चूल्हे में सोसकर पकाई गई एक सूखी लाल मिरचाई को वह टुकड़े-टुकड़े करके चोखा में ढाल देती है । खूब बच्छी तरह चोखा मीसकर स्वाद जानने के लिए वह एक छोटी-सी गोली अपने

मूँह में कोकती है। उसका मूँह पानी से भर जाता है। वह तेजी से चट सारें लेने लगती है। पिछले कई दिनों के बाद आज इतना अदिया जोता बन जाया है। वह आवाज एकत्र हृत्युर का पुकारती है। दिन भर का भूका हृत्युर जा जमकरता है। वह हृत्युर के सामने जाना परोप देती है। हृत्युर वह-जडे कीर जस्ती-जस्ती नियम से संयता है। वह भी हृत्युर की तरह ही जस्ती-जस्ती जाती है। उसे याप है एक बार हरिहर का दात दर्द कर रखा था। वह भी हृत्युर के साथ-साथ इस्तेके डाक्टर के पास पर्दी भी। डाक्टर से हरिहर से कहा था कि तुम्हारे दात बहुत कमज़ोर हो गए हैं। वह जीव ही टूटेंगे। तुमने अपने दातों का इस्तेमाल ठीक से नहीं किया है। मूँह में बत्तीस दात होते हैं। इसीसिए हर कीर को बत्तीस बार जबा करतिगमना चाहिए। सेक्षित जाना जाते बफ्ट डाक्टर की यह बात अनिया को एकदम फ्लूट्रू लगती है। दिन भर के मूँखे पेट की इतना दौर्य नहीं होता कि अपने के सिए कीर को देर तक मूँह में छोड़ दें। अपनी आम दात होने तक पेट ताबरतोर कीर को नियमित जाने के लिए बाल्य किए रखता है। पेट भर जाने के बाद ही मन की शांति मिलती है।

जाना जा चुकने के बाद सुनिया जर और आवाम की सभी धीरे तोपने-दाकने सगी। इस क्षम में उसे कुछ दर हो यह। इस बीच हृत्युर दरखामे में सो चुका था। वह भी अपने ह्यान पर जाफर सो रहा।

वह धंदाज संयती है। बातु सो चुके हैं। दिन भर के दक्षे और शरीर से चुके हो जसे बातु धाम की दीम ही सो जाते हैं। उसकी भी पसके भ्रम करने लगती है। जाम को जाना जाने के बाद उसे भी मीद जस्त ही आ जाती है। सेक्षित आव वह सो नहीं पाती है। अबरम आती रहती है। उसके मन में मुख्य सही इस जाम की आशंका जनी हुई है कि आव रात हरनाम जरूर जाएगा। काफी दिनों बाद जेल से छूटकर आया है। पापी जेल से छूटकर जाने पर भी अपनी आइत नहीं छोड़ता है। संयता है, इस कराई से जब जाम छूटने वो नहीं। फिर सोचती है सुनिया कि नहीं कराई सिर्फ यह ही नहीं है। उसके लिए वो इस आव में अनेक दर्शाई है। एक के जाने के बाद दूसरा तीनात रहता है।

वह अपनी झापक रही पलकों को दें तभी होते देती है। जर भी उसकी पलकें मूँदती हैं, उसे जमता है, हरनाम जा

नामने ही उसे जगाने लगा है। वह बाखें खोल देती है। सोचती है, जगी रहेगी तो कम ते कम वावू के सामने की वैइज्जनी से तो बचेगी। और सचमुच कुछ ध्यानों के बाद वही होता है, जिसका उसे भय था। बाहर की दीवार को फादकर हरनाम आगन मे आ गया। वह चुपके से उठकर आगन मे आ गई। जानती है, नहीं जाएगी तो यह हरामी वावू के सामने रो ही उमे खीच ले जाएगा।

झुनिया को उबकाई आने लगती है। हरनाम के मूट मे उठ रही शगव की दुर्गंध उसके नशुनो मे भर जाती है। उसका मन कैसा तो हो जाता है। फिर भी वह किसी तरह अपने को नियन्त्रित कर आगे बढ़ती है और हरनाम के आने से ही, लाश बन गए अपने शरीर को उसके हवाले कर देती है।

रात अधिया जाने तक हरनाम की भूख मिटती है। साथ ही उसके नशे की खुमारी भी छट जाती है। वह दीवार फादकर कही चला जाता है। झुनिया अब सहज होती है। वह पूर्व वत् आमी जगह आकर भी रहती है। नोने मे पहले एक बीड़ी सुलगाती है। उसे कुछ-कुछ थकान महसूस होती है। बीड़ी का आखिरी कश लेते-लेते उम्की पलक ढपने लगती है। वह बीड़ी फेंककर करवट बदल लेती है। मोचती है, एक-दो घटा आराम कर ले, क्योंकि रोज की तरह रात के अतिम पहर में कटनी के लिए वावू जगाएगे हो।

जिस तरह हरनाम के आने की खबर मुवह के तड़के ही पूरे गाव मे फैल गई थी, उसी तरह आज दूसरी सुवह सनसनी की तरह यह खबर पूरे गाव मे ढीड गई है कि रात मे राणा वहादुर्मिह के खलिहान से गेहू के पचास बोझे गायब हो गए। भैयाजी के दालान पर, सावजी की मर्डई पर, बरगद के नीचे, दुसाध टोली के पीपल के पास मुख्य रूप से इसी विषय की चर्चा शुरू हो गई थी। कुछ मनचले टाइप के लोग राणा वहादुर्मिह के खलिहान का मुआयना करने के लिए भी निकल गए हैं। गाव की प्राय सभी बैठको पर इस विषय को नुनाया जा रहा है। लोग अपने-अपने विचार और अपने-अपने ढग से अपनी प्रतिश्रिया व्यक्त कर

रहे हैं। जूँकि हरनाम के बाने के बाद यह पटता चटी है। इसीलिए बहुत सारों के विकार एक-दूसरे से मिलते हैं। सेकिन जोगिदर का विचार इन सारों से विस्तृत असत्य है। साकड़ी की मढ़ई पर कुछ लोगों के बीच अपनी प्रतिक्रिया असत्य करते हुए जोगिदर कहता है, 'वह हरनाम को बदनाम करते की चास है। इस गाव में और शाक और बदमाश बहुत भर मर है।' वे यहे इस्तम रहकर दूसरों के माये विकार बेताना चाहते हैं। अब जबकि हरनाम आ याया है इन्होंने चोरी-बदनामी सुन कर वी है। वे बागते हैं, गाव में वहाँ भी चोरी होयी कोई चोरी करेया, पाम हरनाम का होना।

जोगिदर की इस प्रतिक्रिया का साकड़ी की मढ़ई पर कोई विरोध नहीं करता है। दरमस्त साकड़ी की मढ़ई पर बैठने वाले अशिकाश सोम हरनाम के एजेंट ही होते हैं। हरनाम की भी बैठक बक्सर साकड़ी की मढ़ई पर ही जारी है। सोम चुपचाप जोगिदर की बात पर हाथी भर देते हैं। वहाँ से उछाल जोगिदर सीधे भैयाडी के दालान पर आता है। भैयाडी के दालान पर कुछ लोगों तक सोमों की बारें सुनने के बाद वह कहता है, "हर पांच की यही स्थिति है। चोरी बदमासी और बास-करोड़ी अब पहुँच से बहुत अधिक बढ़ मर्है है। इसी द्वारा बदनाम के समय में सठक हो जाने की आवश्यकता है। मपने लेन से किस व्यक्ति को विवरी बनाया जाए, वह समझता बहुत चर्हती है। और जोगिदर तये हाथों अपने भानी एम० एन० ए० का प्रधार सुन कर देता है।

भैयाडी के दालान पर कुछ लोगों तक बनना प्रधार भाषण देने के बाद जोगिदर दुष्टाश टोली के पीपल के पास आ जाया। डोम चमार दुसाप और इसी तरह की छोटी जातियों के सोम यहाँ बैठे हैं। जोगिदर को देखत ही सब उसके करीब आ गए। जोगिदर बेतानी देते हुए कहता है, "देताना, इस सबके बारे में तुम सोम कहीं कुछ न बोलना। अब यह माव एकदम बदल गया है। गरीब की इज्जत समझने वाला कोई नहीं है। भैयाडी के दालान पर तुम सोमों में से कई आदमियों का नाम लिया जा रहा था। सकिन मिल डॉट दिया।"

दे दब हाथ बाहकर जोगिदर के देर पर पिर जाते हैं। यह कहता

है, “इतमीनान से रहो । मेरे रहते तुम लोगों का कुछ नहीं होगा ।” वे सब गद्गद हो जाते हैं । अब जोगिंदर वहां से चल देता है । हालांकि यहां से राणा वहादुरसिंह के घर जाने की उसने योजना बनाई थी । लेकिन उसके कदम अपने घर जाने वाली गली में मुड़ गए । वह सोचता है, इस समय राणा वहादुरसिंह के पास कई लोग जुटे होंगे । उसका जाना ठीक नहीं रहेगा । दोपहर को वे अकेले होंगे । तब उसका जाना अच्छा रहेगा ।

दोपहर तक का समय जोगिंदर बड़ी मुश्किल से काटता है । इस समय राणा वहादुरसिंह के घर जाना उसके लिए कई दृष्टियों से महत्त्व-पूर्ण है । अब राणा वहादुरसिंह से उसे सिर्फ आधिक सुविधाएं ही नहीं मिलेंगी, अब विमली भी आ गई है..! इस बार वह विमली से कैसे निवटेगा, सोचने लगता है । विमली से अपने धनिष्ठ सम्बन्ध की शुरुआत वह कहा से करे, उमे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है । असल में किसी लड़की से सम्बन्ध बनाने के लिए देर तक प्रयत्न करना तथा प्रेम-जाल बिछाना उसे आता ही नहीं है । वह तत्कालिक डच्छापूर्ति में विश्वास रखता है । झुनिया की तरह किसी भी लड़की से मिलते ही उसपर अपना अधिकार जमा लेना ही वह अपनी मर्दानगी समझता है ।

दुपहरिया गुजरने में पहले ही जोगिंदर राणा वहादुरसिंह के घर की ओर बढ़ा । जैसाकि उनने थदाज लगाया था, राणा वहादुरसिंह उसे एकात में ही मिले । चोरी के कारण आए चहानुभूति दिखाने वाले लोग जा चके थे । राणा वहादुरसिंह जोगिंदर को लेकर नींवे ढ्योढ़ी के अन्दर चले गए । फिर ओसारे के पलग पर इतमीनान में उमके साथ बैठ गए । इम में पहले कि बातचीत शुरू हो, जोगिंदर राणा वहादुरसिंह की नजर बचाकर आगन और ओसारे में हर जगह विमली को ढूटता है । विमली उमे कही नजर नहीं आती और न कोई अन्य ही । अब वह बातचीत शुरू करता है, “चाचा, यह काम नाला हरनाम का है । उमके आते ही मुझे लगा था कि अब कोई न कोई खुराफ़ात जरूर होगी । देखिए, इस बार कसकर उसका जवाब देना है, नहीं तो उसका मन बढ़ जाएगा । आपको कुछ नहीं करना है । मिर्फ़ तैनान रहना है । सब में देख लूंगा । आखिर किम दिन के लिए मैं राजनीति करता हूँ ? ”

राणा बहादुरसिंह जोगिवर की बात से अहुत चूप हो रहते हैं। जोड़ा और लिसकाहर उसके कर्तीव बा बैठते हैं। खटा तुम मेरा दाया हाथ हो। तुम्हारे बस पर ही तो हरमाम से समर छेड़ता हू, वहीं तो इस तुच्छे सफ्टी से लगने पर इन्हत की बर्दाची ही है।

“महीं आपा इन्हत की बर्दाची कुछ नहीं है। अल्पी जहसी जेन से छूट बाने के कारण इस सामे का दिमाग सातवें आसमाम पर चढ़ गया है। अबकी बार अबर इस सामे को कासा पानी की सजा न दिलवा तो तो फिर मेरा नाम जोगिवर नहीं।” यह बहुत हुए जोगिवर जोड़ा तनहर बैठ गया। इस समय राणा बहादुरसिंह की बह बपना परम आत्मीय मन्त्रर का रहा था। वे आदाज सबाठे हैं ‘बिमसी भो बिमसी !’

छत बासी कोठरी से बहुत महीन आवाज आती है “बी ?

“अरे भीषे आओ देयो जोगिवर आया है। इसे कुछ लिसाओमी पिसाओमी नहीं ?

बिमसी फूर्झ से भीषे चतुर आती है। बस जोगिवर को यही चाहिए। वह बिमसी को देखता रहेगा। उसका दाका-नीला सब पूरा हो जाएगा। उसके लिए यह एक सुखद संयोग ही है कि ऐन बिमसी के छत से भीषे उत रहे ही दामान से राणा बहादुरसिंह की तुकाहट बा जाती है। कायद जोई उसे मिसन आया है। वे बाहर जाने गए। अब जोगिवर अकेला बचता है। जानता है बिमसी की मा (उसके घबनीतिं बंबधों की आर्थी) सर्दी-तुकार स कमरे में बेसबर सोई हाई। वह बिमसी स पूछता है ‘निकिम कहा है ?

“छत पर सौए है। बिमसी बहती है और स्टोप जसाहर जोगिवर के लिए हस्ता बनाने समर्थी है।

जोगिवर कहता है, “अरे, यह सब हस्ता भैमरह कर्मो बना रही हो ? मैं कोई भेहमान थोड़े ही हूं। ऐसे ही अपर हो सके तो जाय बना दो।

बिमसी मुस्कराते हुए कहती है “जाय नास्ते के बाद ही पी जाती है।

जोगिवर बात आये बहाले के लिए कहता है “सेक्ष्यन यह सहर का नियम है। हम बाँद बासे कभी भी जाय पी सिरे हैं।”

एक क्षण को विमली चुप रहती है। फिर कहती है, “अब शहर वहुं
तेजी से गावों की ओर पसरने लगा है।” इस बार विमली के अधर कुछ
ज्यादा ही फैल जाते हैं। जोर्गिंदर भी हस पड़ता है। लेकिन अदर हैं
अदर जोर्गिंदर को एक झटका लगता है। कुछ ही साल शहर में रहने;
बाद यह लड़की कितनी खुल चुकी है।

“यहा तो मन नहीं लग रहा होगा?” जोर्गिंदर पूछता है।

“हा, शुरू-शुरू में कुछ उखड़ा-उखड़ा लग रहा है। लेकिन धीरे-धीरे
व एडजस्ट कर लूंगी। आखिर रहना तो यही है। फिलहाल मन लगान
लिए कुछ उपन्यास लेती आई हूं।”

“अच्छा, तो उपन्यास वर्गेरह पढ़ने में रुचि रखती हो?”

वह सिर हिलाकर ‘हा’ की सूचना देती है। वस, जोर्गिंदर अपने राज
तिक झोले से ‘सिफं वयस्को के लिए’ वाली मुहर लगी एक किताब
सकी ओर बढ़ा देता है। वह किताब को लेकर उलट-पलटकर देखती
। फिर जब उस अपनी हसी को रोकते हुए वह किताब जोर्गिंदर के
पाठ देती है। कहती है, “इस किताब को तो मैं दो साल पहले ही पढ़
की हूं।”

विमली की यह वात सुनते ही जोर्गिंदर को मन ही मन एक जबर्दस्त
दमा पहुंचता है। उसके रूपाल चूर-चूर हो जाते हैं। विमली को उसने
जतनी भोली समझने की कोशिश की थी, वह उसकी भूल थी। विमली
हुत तेज-तर्रार लड़की है। खैर। इसमें कोई फक्के पढ़ने को नहीं। वह
विमली से भी अधिक पढ़ी-लिखी और तेज-तर्रार लड़कियों से निवट चुका
। हा, इस तरह की लड़कियों में ममय बहुत अधिक लगता है।

इससे पहले कि जोर्गिंदर कोई और रास्ता अस्तियार करे, दालान से
एणा बहादुर्रसिह आ गए। इस बीच विमली भी हलवा बना चुकी थी।
ह अपने पिता और जोर्गिंदर को हलवे की प्लेट थमाती है। ठीक इसी
मय छत से निखिल भी नीचे उतर आया। जोर्गिंदर किसी पूर्व परि-
वर्त दोस्त की तरह निखिल से हाय मिलाता है। वैसे जोर्गिंदर उम्र में
निखिल में एक दो साल बड़ा जरूर है, लेकिन देखने-सुनने में निखिल ही
ससे बड़ा और उम्रदार लगता है। विमली निखिल को भी नाश्ता देती

है। सेकिन निविस नामता नहीं करता। हाँ अपने पिता और जीविदर को यह आम का साथ दे रेता है।

गोब बाने के कुछ समय बाद ही निलिल गोब की रंभीनियों और गोब की राजनीति में बदली मेने समा। उसमें अब उसे स्पायी रूप के यही रहना है तथा लेटी-नृहस्ती का सब कारोबार समाप्तना है। पिताजी की उम्र यह तब चूकी है। उनकी बिल्डिंग में ही उसे सब कुछ दैष-नृसंख मेना चाहिए। और निलिल बनने इस वायिल के प्रति काफी हर तक मनेत भी है। यह यह से पांच आया है लेटी-नृहस्ती सम्बन्धी तमाम समस्याओं को काफी यहराई से समझ रहा है। पिताजी को इन समस्याओं से बहुत मुश्त कर देना चाहता है। अब पिताजी की उदासी और परेशानी उससे देखते मही बनती है। खालिहान से गेहूँ औरी ही जाने के कारण उसके पिताजी बहुत उदास हो पाए थे। उनकी यह उदासी उसे दूरी तरह कोटने लगी थी। उससे रहा नहीं यथा था। एक शाम उसने पिताजी से कहा 'पिताजी, आप इतने उदास क्यों हैं? देखिए, लेटी बारी सम्बन्धी किसी भी समस्या के बारे में अब आपको नहीं सीखता है अब आप चुपचाप आराम कीजिए। यह मैं संमानूगा। हो सकता है यद्य हीन के कारण मुस-मुह में मुझे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़े। सेकिन इससे क्या? कठिनाइयों के बाद ही तो रास्ता मिलता है।'

राणा बहादुरसिंह उस समय कोई बदाब नहीं दे पाए थे। परन्तु मन ही मन अपने बेटे की बर्बादित पर उन्हें आर्थिक संतोष ही मिला था। सेकिन उसी समय एक जटिल सबाम बना एक व्यक्ति उनके मानस में कौशल लगाने समा। और वह सबासनुमा आदमी हरनाम था। उन्होंने सोचा कि यह हरणाम यह तक इस गोब में रहेगा। उनका लड़का सांति से लेटी यूहस्ती नहीं करता पाएगा। किन्तु निलिल की सीधे उनसे बिस्कूट मिल है। योब में पढ़ा हिन गुजराते-नृगरते ही उसे सब कुछ एकदम सहज और आसान समने समा है। कहीं कोई उत्तरान और चुत्ती नजर नहीं आई है। उसे अपने पिताजी पर हँसी आ रही है। नाखिर वही सब कुछ इतनी सहजता से ही जाने सायक ही वहाँ मूँझमूँठ में बेकार का भयहानकरार

मोल लेने से क्या फायदा ?

एक दोपहर को निखिल भुनिया के घर की ओर चल पड़ा । हालांकि इससे पहले वह कई दफा भुनिया के घर तथा उसके आसपास के लोगों का मुख्यायना कर चुका है । पहली बैट के बाद से ही झुनिया उसकी आखो में गढ़ गई है । झुनिया का सलोना रूप और गठीला बदन देख वह अन्दर ही अन्दर भचलने लगा है । रूप का सलोनापन और बदन का कसाव बहुत कम ही लड़कियों में पाया जाता है । लेकिन भुनिया इन दोनों आकर्षणों का वेमिसाल नमूना है ।

भुनिया के घर के पास पहुंचने पर निखिल आश्वस्त हो गया कि वह सही समय पर पहुंचा है । दरअसल, यहा आने से पहले निखिल यह अच्छी तरह पता लगा चुका था कि हरिहर की अनुपस्थिति का समय कव-कव होता है ।

अन्दर से भिड़के भुनिया के घर के दरवाजे - पर निखिल हाथ की धाप लगाता है ।

“कौन ?” कट्टनी वाली झुनिया की वही मादक आवाज उसके कानों में गूज उठती है ।

“मैं हूं !” निखिल सहमते हुए बोलता है ।

“मैं कौन ?” शायद झुनिया को आवाज पहचान में नहीं आई है ।

“खोलकर देखो ।” निखिल अपनी आवाज को और साफ करता है ।

भुनिया ने दरवाजा खोल दिया ; अपने सामने निखिल को पा वह हक्का-वक्का रह गई । फिर जल्दी ही अपने पर कातू पा ली उसने । उसे याद आता है, पहली दफा राणा वहादुर्रभिंह भी उसके यहा आए थे, तो वह इसी तरह हक्का-वक्का हो गई थी ।

“कुछ काम है ?” झुनिया पूछती है ।

“हा, काम तो जरूर है । लेकिन सोचा कि काम के साथ-साथ जरा तुम्हारे घर को भी देख लू ।”

“आप ! .. आपने मेरा घर नहीं देखा था ? आप तो यही जन्मे-पले हैं ।”

‘बचपन मे देखा होगा । याद नहीं । हा, अब देखूगा ।’ और निखिल थोड़ा तनकर खड़ा होते हुए अपनी वेशमं निगाहों से भुनिया को

पूरन बता। पर यह मुनिया के लिए कोई नहीं बात महीं है। इस उष्ण की वैशम्य भावों का सामना करते-करते वह अम्बस्तु हो गई है। हो चुके निविस के अवधार से राजा बहादुरसिंह की याद आ जाती है। यथा बहादुर सिंह की भावों में निविस की उष्ण ही है और इसी उष्ण वैशम्य से वह भी उसे टोका करते थे।

“बैठने को नहीं कहोवी क्या? निविस अपनी बात को बदलता है।

“अच्छा मग तक तुम दृढ़े ही बैठो-बैठो! ” मुनिया निविस को ‘आप’ नहीं कहकर तुम ही कहती है। असम में वह छिंसीको ‘आप’ नहीं कहती उसे ‘आप’ कहना जाता ही नहीं है। वह राष्ट्रा बहादुरसिंह और अपने बापु को तुम ही कहती है। साथ ही हरसाम और सीमांड को भी।

निविस कोने में रखी लटिया को खोड़ा और आये खीचकर बैठ पाया। फिर लूपसूरज चूत और भोज में बचे अपने पांवों को उथाने आयम की स्थिति में आये फैला दिया।

“कहो क्या काम है? ” मुनिया फिर पूछती है।

“यरों बैठने नहीं शोबी क्या? अपना पर नहीं दिखाओयी? बटे, कुछ लिमाभो-पिलाप्रो! ” निविस एक दम बैमिलक हो उठता है। निविस की इस वैमिलकता पर बदाक ही वह निविस को देखते लगती है। निविस फिर कहता है, “यरों नहीं लिमाभोयी? ‘अच्छा। कुछ लिमामें लायक नहीं है। तो सो! ” निविस अपनी बेब से बस का एक नोट बढ़ाते हुए कहता है, “बगास के रामरठन साथ की तुकाल से एक किसो पेड़ा से आओ। सुनने में आया है, आजकल वह पेड़ा भी देखते जाया है।

मुनिया उसके हाथ से नोट नहीं सेती है। बुद्ध की उष्ण भूपलाप नहीं रहती है। वह फिर कहता है, तो सोब क्या यही ही? अस्ती साबो!

अबकी बार मुनिया उसके हाथ से नोट से सेती है और दरवाजे से बाहर निविस जाती है। दरवाजे से बाहर निकलकर वह दरवाजा खीच-कर बिहका देती है। दरवाजम बास-पास के लोगों की नजरों में वह वह निविस भी देखा नहीं रह सकती है। सेकिन इसके लिए उसका फूमूर ही क्या है? वह कर ही क्या सकती है? वह आजती है, उसकी बिराबरी की कोई भी सहकी इस योग में देखाग नहीं जाती है। सेकिन ही, वे सब उसकी उष्ण

वदनाम नहीं हुई हैं। उनकी मां हैं। भाई हैं। वे बहुत हृद तक सुरक्षित हैं। उनके अनुपात में वह एक दम असुरक्षित है। वह जानवूभकर वावू से कुछ भी नहीं कह पाती है। असहाय वावू उसकी कोई भी रक्षा नहीं कर पाएगे, उलटे उसकी परेशानिया और बढ़ जाएगी।

वह सोचती है, अगर वावू आ जाएगे तो निखिल को देखकर क्या कहेंगे? वह तेजी से सावजी की दुकान की ओर बढ़ जाती है, ताकि पेड़ा लेकर शीघ्र वापस लौट जाए और 'क्या काम है?' पूछकर निखिल को जल्द ही विदा कर दे।

इधर निखिल उसके चले जाने के बाद मन ही मन मुस्कराता है। चलो, शुरुआत बहुत अच्छी हुई। शुरू में ही मुह भीठा कर लेगी तो फिर कभी क्षिक्षिक नहीं करेगी।

निखिल धीरे से उठकर दरवाजे में बाहर हो गया। फिर बाहर होकर दरवाजा उमी तरह भिड़काकर वह तेज कदमों से अपने घर की ओर चल पड़ा। सोचता है, भुनिया पेड़ा लेकर आएगी, तो उसे न पाकर चौक उठेगी। फिर बाहर-भीतर हर जगह ढूँढ़ेगी। सोचेगी, कहा चला गया? क्यों चला गया? शाम तक उसीके बारे में सोचती रहेगी। फिर रात में पेड़ा खाना शुरू कर देगी। निखिल सोचता है कि अगली बार भुनिया से मिलते ही सबसे पहले वह यही कहेगा, 'भुनिया, उस रोज अजव हो गया। जिस समय तुम बाहर निकलीं, उसी समय मेरा नौकर मुझे खोजते खोजते आ गया। घर पर एक बहुत जरूरी काम था। बस, मैं चला गया। सोचा, चाहे मैं खाऊ या तुम, कोई फर्क पड़ने का नहीं।'

निखिल घर पहुँचकर सीधा छत पर चला गया। फिर अपने कमरे में जाकर विस्तरे पर लेट गया। सोचने लगा, अब भुनिया शीघ्र ही हाथ में आ जाएगी। उसे खुशी होती है, गाव में सब कुछ कितना सहज और आसान होता है।

वह एक सिगरेट सुलगाकर बैठ जाता है। सिगरेट के आखिरी कण के साथ ही हरनाम की आकृति उसके दिमाग में उभर आती है। वह सोचता है, इस हरनाम नामक व्यक्ति से वह कैसे निपटे? उमे लगता है, इस व्यक्ति को ठीक कर लेने के बाद ही वह इस गांव में निप्टकर राज

कर सकता है। वह अपने माथे पर और देवा है नहीं भगवान्तकाहर से
मह निपटारा नहीं होने का। और इह के रूप में हरनाम बदलाम हो चुका
है। उसके जिस्ती भर यही सब कुछ सीखा है। इस रास्ते उससे पार नहीं
पाया जा सकता।

अभानक निकिम की एक बच्ची बात सूझती है। वह सोचता है,
परीब पर का हरनाम आखिर इसमें-से के मिए ही तो यह सब कुछ कर
रहा है। क्यों न कुछ से-देकर यमूर्खी यही-बारी का मैनेबर उसे ही बना
दिया जाए। इससे बहुत फ़ायदे होंगे। उसके परिकार से पुरामनी तो उसमें
हो ही जाएगी। साथ ही हरनाम के साम पर उसकी फ़सल बर्दाद करते
जासे औरों की जास भी न गेगी। यही हासा न कि हरनाम को कुछ
देना पड़ेगा। तो उससे बधिक तो बर्दाद हो जाता है।

सेकिन पुन एक सवाल उड़ा हो यदा निकिम के सामने क्या हरनाम
यह स्वीकार करेगा? क्या अपनी पिछसी घटनाओं को वह मूल जाएगा?
फिर निकिम की ओर से ही जवाब मिलता है, 'हाँ ऐसा हो सकता है।
पुरामनी उसकी पिटाड़ी से है, उससे महीं। वह उसके मिए तो मरा है।
हो सकता है उसकी बात को वह भी नये सिरे से से।

रात को जाना चाहे वक्त मां पिटाड़ी और बिमली के सामने
निकिम यह प्रस्ताव रखता है। शुक्ल-शुरू में राता बहादुर्युधि को यह
बात ही कुछ अवृत्त लगती है। सेकिन सीधे ही उन्हें यह बात चंच जाती
है। वे कहते हैं 'अबरऐसा हो सके तब तो बहुत ठीक है।'

बिमली निकिम की इस उक्ति की भूरि भूरि प्रशंसा करती है। वह
मम ही मत मैया की इस तेज बुढ़ि पर भौत्कालिक हो उठती है। उससे
एक नहीं जाता। कहती है, 'बिमली जल्दी हो सके यह कर लो मैया।
इससे धारा समझा ही निपत जाएगा और इससे फ़ायदे भी बहुत है।'

निकिम के इस प्रस्ताव पर मां भी अपना समर्थन देती है। वह बाय
आग हो जाता है। उस विश्वास का इस प्रस्ताव को सब पहचानते।
रात को सोते बक्त वह सोचता है, अपसी मुबह हरनाम से उसे मिलना है।

निर्विपत्ति होकर साते के कारण मुबह काढ़ी और बाब निकिम की नींद

कूपिया,

खुली। वह अपने शाहरी जीवन की ही भाँति यहा भी विस्तर छोड़ने से पहले ही चाय पीता है। चाय पीने के बाद गुसलखाने जाता है। फिर हाथ-मुह धोता है। फिर लगे हाथों तत्काल स्नान भी कर लेता है। अब नाश्ते पर बैठता है। नाश्ता करते बक्त ही वह सोचता है, हरनाम के पास दुप-हरिया में जाना ही ठीक रहेगा। ठीक उसी समय, जिस समय वह झुनिया के पास गया था। ऐसे वार्तालापों के लिए एकात का होना नितात आवश्यक है।

नाश्ता करके निखिल छत पर आ गया। अपने विछावन पर आराम से लेटते हुए उसने रेडियो खोला। फिल्मी गाने शुरू हो गए। आज इतवार है। विमली पहले से ही रेडियो सीलोन पर लगाकर छोड़ चुकी है। शीघ्र ही फिल्मी गानों के सहारे उसे झुनिया याद आ जाती है। बदन का कसाव और चेहरे का लावण्य! वह बेचैन हो उठता है। फिर अपने और झुनिया को लेकर दिवान्स्वप्नों में खो जाता है।

करीब साढ़े दस के आसपास निखिल को कार के हार्न की आवाज सुनाई पड़ी। कभरे से बाहर निकलकर उसने नीचे की सड़क पर भाका। वहा खड़ी कार उसे जानी-पहचानी लगी। फिर कार में बैठा उसे अपना दोस्त प्रकाश नजर आ गया। वह छत से ही चिल्ला पड़ा, “हैल्लो प्रकाश !”

कार से बाहर निकलकर प्रकाश ने भी उसे देखा और हँसकर बोला, “हैल्लो !”

वह तेजी से सीढ़िया उतरते हुए बाहर आ गया और प्रकाश से गले मिला। प्रकाश को साथ लिए वह घर के अन्दर आ गया। विमली प्रकाश को देखते ही मचल उठी। आगे बढ़कर प्रकाश के हाथ से उसने दौँग ले लिया। निखिल जानता है, विमली उसकी तरह प्रकाश को भी अपना भाई ही समझती है और प्रकाश उसे अपनी बहन ही जानता है। लेकिन यहा निखिल अधकार में है। विमली और प्रकाश के आपसी सबध कुछ और ही हैं। शायद उन्हीं सबधों को लेकर प्रकाश यहा आया है। पर पता नहीं, वह यहा एडजस्ट कर पाएगा भी या नहीं। वह पटना के कई कारखानों के मालिक का लड़का है। उसके रहन-सहन और खान-

पान की अवस्था एकदम उत्तमतरीय है। यहाँ के बातावरण को कुछ भट्टे भी वह ज्ञेत्र पाएंगा, वह असम्भव ही समझा है।

निकिम प्रकाश का परिचय अपने मां-बाप से कराता है। विमली प्रकाश के लिए जल्दी ही कुछ बनाने हेतु स्टोर जाने लगी। प्रकाश विमली को रोक देता है। कुछ बनाने नहीं देता। वह अपने साथ ढेर सारे फस और मिठाइयों भरता आया है। वह बाड़ी के मन्दिर से फस और मिठाइयों की टोकरी मंजवा लेता है।

टोकरी का मुह खुलते ही विमली को अपने और प्रकाश के संबंध बुरी तरह याद आने लगते हैं। वह इसकी है, प्रकाश अधिकारी फस और मिठाइयों भरी लेकर आया है जो विमली को पसंद है। मन ही मन विमली को कुछ होता है कि इतनी जल्दी उसकी पड़ाई लगत हो गई। एक जन के लिए अपने मुख्य अवृत्ति को याद कर वह जाहौं भर उठती है।

निकिम प्रकाश को अमर छत पर से जाता है। छत पर से ही वह सारा गाँव प्रकाश को दिखाता है। फिर छत पर से ही अपने प्रचिद बाबत विमला' बत की ओर भी उमसी से इसारा करके उसे बताता है। इसके बाद इमरे में उसे अपने साथ बेठाकर उसे गप्पे लगाता है। फिर दिन का खाना ऐ सब साथ ही याएं हैं। सेकिन प्रकाश को यह सब अच्छा नहीं लगता। वह विमली से एकात्म में मिसना जाहूता है। पर उसे सगता है कि यहाँ उस तरह का माहौल ही नहीं है। यहा वह चाहकर भी विमली से नहीं मिस सकता। हार-मच्कर वह जाना जाते बनत ही सर्वों के सामने विमली से पूछता है 'यहाँ मन मां रहा है ?'

'अरे यहाँ मन क्यों नहीं समेता ! यही तो जम्मूमि है।' विमली उपाक से बोस उठती है। प्रकाश को महसूष होता है कि विमली राजा बहादुरसिंह और निकिम के पाथ होने के कारण ही ऐसा कहती है। अगर एकात्म में होती तो वह ऐसा कभी नहीं कहती। विमली की वह बात प्रकाश के कान में अभी तक चूंज रही है। दूहर छोड़ते बख्त विमली ऐसे हुए प्रकाश से चिपट गई थी और बोसी थी 'तुम्हारे पाथ से माँ जाने का मन राजिक भी नहीं कर रहा है।'

बख्त प्रकाश को एक दृश्य के लिए भी यहाँ बर्दास्त नहीं हो पाता है।

कुछ ही क्षणों में वह यह जान गया है कि यहा विमली से एकात्र में बैट होने की सम्भावना नहीं है। वह मन ही मन कोई योजना बनाने लगता है। हठात् उसके दिमाग में एक अच्छी बात आती है। इस समय उसके शहर में रेमन सर्कंस आया है। क्यों न इसी बहाने आज निखिल और विमली को वह अपने साथ शहर लेता जाए। हालांकि निखिल के साथ होने से विमली से वह पूरी तरह नहीं मिल पाएगा, फिर भी निखिल की नजर से बचकर वह विमली का थोड़ा-बहुत सानिध्य तो प्राप्त कर ही लेगा। वस, उसी समय खाना समाप्त होते वक्त प्रकाश अपना यह प्रस्ताव रखता है। निखिल खुशी के मारे उछल पड़ा। विमली भी अपनी खुशी छिपा नहीं पाई। वह प्रकाश का मतव्य समझ गई थी।

शाम होने से पहले ही निखिल और विमली प्रकाश की गाड़ी में बैठ-कर उसके साथ शहर चल पड़े। प्रकाश राणा वहादुरसिंह को यह आण्वासन देता है कि कल निखिल और विमली को छोड़ने के लिए वह यहां तक पुनः आएगा।

गाड़ी चल पड़ी। शीघ्र ही गाव पीछे छूट गया है। लेकिन कच्ची सड़क अभी समाप्त नहीं हुई थी। यह कच्ची सड़क हसन वाजार कस्बे तक जाती है। फिर वहां पक्की सड़क में मिल जाती है। इसके बाद तीव्रे आरा। फिर पटना।

कच्ची सड़क बहुत ऊबद्दल-खावड है। गाड़ी हिँचकोले खाती हुई आगे बढ़ती है। अचानक गाड़ी एक जगह रुक गई। प्रकाश नीचे उतरकर गाड़ी को चेक करने लगा। उसे अपनी भूल पर पछतावा होता है। वह द्वाहवरो से पूछे वर्गीर गाड़ी ले आया है। यह गाड़ी ठीक नहीं है। निखिल और विमली भी नीचे उतर आते हैं। प्रकाश, निखिल के साथ गाड़ी को ठेलने लगता है। विना ठेले अब गाड़ी नहीं चलेगी। लेकिन आगे काफी ऊचाई पर गाड़ी को चढ़ना है। प्रकाश और निखिल थक जाते हैं। गाड़ी ऊचाई पर नहीं चढ़ पाती है। हारकर वे किसी यात्री की प्रतीक्षा करते हैं। पीछे, गाव के करीब, सड़क पर तेजी से आता उन्हें कोई दिखाई पड़ता है। वे उसका हन्तजार करने लगते हैं।

अब शाम गहरा चली है। वह आने वाला धीरे-धीरे करीब आता

जाता है। फिर एकदम करीब आ जाता है। निविस उस पहचान जाता है। वह हरनाम है। निलिंग कहता है 'हरनाम भैया नमस्ते।'

'नमस्ते! हरनाम के लेखी से बदते कदम रुक जाते हैं। फिर वह निविस को पहचानते हुए कहता है "अच्छा निविस तुम।"

निविस को महसूस होता है कि हरनाम मारवर्य में यह यथा है। वरबासम, हरनाम को स्वप्न में भी इस बात का विश्वास नहीं पा कि निविस उसे नमस्ते करेगा।

"नमस्ते हरनाम भैया। अब चिमसी भी बोसती है। हरनाम मुहरर चिमसी को देखता है। वह उस पहचान नहीं पाता। निलिंग कहता है, "यह चिमसी है—मेरी छोटी बहन।"

'अच्छा चिमसी। हरनाम का यह लुमा का लुमा यह जाता है। यह सब क्षेत्र हो रहा है। हरनाम एकदम अचंभित हो रहता है। वह कुछ भी नहीं बोसता। चुपचाप जड़ा रहता है। निविस कहता है, 'भैया चरा गाड़ी में चलना दोन।

हरनाम चक्का भगाने जमता है। निविस और प्रकाश भी उसके साथ जम जाते हैं। पाढ़ी छंचाई पर चढ़ जाती है। फिर आगे डाने भी बोर बदती है। अब आढ़ी स्टार्ट हो जाती है। प्रकाश चिमसी और निविस आढ़ी में बैठ यह। निविस हरनाम से पूछता है 'भैया, तुमरी भी ठो आगे चलना है?

"हाँ।"

"कहाँ तक चलोये?"

"आरा तक।

"तब जाओ तुम भी बैठ जाओ। आरा उत्तर जाना। हम लोयों को पटमा तक जाना है।"

हरनाम आकर पाढ़ी में बैठ यह। उस यह सब कुछ अदीब आह-हिमक हप से घटता हुया जमा। कहीं यह कोई पहयश और जास ती नहीं?

वह पूरी तरह औकला हो जाता है। फिर भी चिमसी का गवराया सीखर्य उसे जपसी ओर आकर्षित किए जाने नहीं यह पाता है।

गाड़ी कच्ची सड़क पार कर पक्की सड़क पकड़ लेती है। अब सब राहत की सास लेते हैं। सतोष की सास लेते हुए निखिल हरनाम में कहता है, “मैंया, मैं तुमसे मिलने ही वाला था।”

विमली भी इधर ही मुखातिव हो जाती है। वह जान जाती है, निखिल क्या कहेगा।

“मुझसे कुछ काम है क्या?” हरनाम पूछता है।

“हा, मैंया! वहुत सारा काम है।” पिताजी अब बूढ़े हो चले हैं। मुझको खेती-वारी के मामले में कुछ आता-जाता नहीं है। सब तुमको ही सभालना है।”

हरनाम भौचक हो निखिल की ओर ताकने लगता है। उसे अपने, कानों पर विश्वास ही नहीं होता।

“हा, मैंया! अब हम लोगों ने यहीं तय किया है। सब तुमको ही सभालना होगा।” विमली बोलती है।

हरनाम विमली की ओर ताकता है। विमली की आखों में उसे आम-त्रण स्पष्ट रूप से नजर आता है। यह उसके जीवन की पहली घटना है, जब अत्यन्त खूबसूरत, काफी पढ़ी-लिखी, बड़ी-बड़ी आखों वाली कोई लड़की उसे ऐसा आमत्रण दे रही हो। वह अन्दर से ढोल जाता है। कुछ भी बोल नहीं पाता।

धीरे-धीरे निखिल उसे सब बात बताने लगता है। निखिल बड़े कायदे से हरनाम को यह बता देता है कि गाव के ढेर सारे चोर उसीके नाम पर उसकी फसल बर्दाद करते हैं तथा आपस में उन दोनों में झगड़ा करा देते हैं। अब उनकी दाल नहीं गलने पाएगी। निखिल हरनाम को सब समझाता है। वह वहुत मुलायम तरीके से हरनाम से यह भी कह देता है कि उसे जब जिस चीज की जितनी भी ज़रूरत हो, उसके घर आकर ले जाए।

निखिल आरा आते-आते हरनाम को अच्छी तरह अपनी बात समझा चुका है, ऐसा उसे स्वत बनुभव होता है। हालांकि हरनाम ने अब तक कोई जवाब नहीं दिया है। वह निखिल की बात चुपचाप सुनता आया है। आरा आने पर वह उत्तर जाता है। निखिल और विमली उसे वारी-वारी से नमस्कार करते हैं। वह विमली की ओर देखता है। फिर गाड़ी चल

पढ़ती है। सेकिन विमसी को समझा है कि हरनाम वही लड़ा होकर उसे छेक यहाँ है और तब तक देखेगा। तब तक गाड़ी उसकी आवाजों में और भ्रम नहीं हो जाएगी।

पठना से जीटने पर विमसी काफी बह गई थी। वह रात भर सो नहीं पाई थी। उसके देखने तथा प्रकाश से बातें करने में उसकी सारी रात धीर्घी ही गुजर गई थी। उसकी आवाजें उत्तीर्णी थीं। उससे अब एक दाव भी महीने रहा था। वह उत बासी कोठरी में बाकर सो गई। भींग आने से उसने अब एक बार हस्ते से मुस्कराई। उसे प्रकाश की एक बात याद आ गई थी। प्रकाश ने उसमें कहा था कि मब्रूम प्राय हर महीने ही निविस के दाव सर्हस या सिनेमा देखने के बाहाने उसे एक रात के मिठा अपने पहाँ चुकाएगा।

विमसी काफी देर तक थीकी रही। सारी दुपहरिया उठने भी इसे ही गुबार दी। उसकी नींद साम के बहुत लूसी। वह उठाकर बिछावन पर बैठ गई। उसकी बप्तम बाली चारपाई पर नियिस भी एकदम बैद्यकर सीमा था। वह उठकर कमरे से बाहर आ गई। उस पर टहलन लगी। बचामक उसे नींजे सड़क पर हरनाम दिलाई दिया। उसमें मुस्कराए हुए हाथ बोड़कर हरनाम को नमस्कार किया। हरनाम ने हाथ उठाकर उसके नमस्कार को स्वीकार किया और वही लड़ा निनिमय दृष्टि से उसे देखता रहा। वह देर तक उस पर ठहर महीने थकी। नींजे उत्तर आई।

हरनाम बेचने हैं। अब से उसने विमसी के बदलए सौंदर्य को देखा है तथा उसकी आवाजों में अपने मिए आमंवन महसूस किया है तब से उस भैं नहीं है। वह घूमते घूमते इस ओर आ गया था। सेकिन यही भी विमसी का अमासाया इस नमस्कार की मुद्रा में घुड़े आवाजों कोमल हाथ तथा मधुर मुस्कान से उसकी बेंची और बड़ा जाती है। अपन में महसिला हरनाम की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। अगर किसी लड़की को हरनाम ने अपनी औरत बना किया होता, तब समझत उसकी यह कमज़ोरी उसके प्याकित्तव्य पर हड़ी नहीं झोती। लेकिन हरनाम में ऐसा नहीं किया। इसी मिए दो-दो बार उसकी विरफ्तारियों सड़कियों के साथ रमन भी।

मे ही हुई। भुनिया से ही नहीं, बल्कि उसकी तरह की गाव की कई गरीब लड़कियों से वह सम्बन्धित है, यह बात समूचा गाव जानता है।

लेकिन विमली की तरह रूपवान, नौजवान तथा पढ़ी-लिखी लड़की उसके जीवन मे नहीं आई थी। इसीलिए विमली के प्रथम दर्शन ने ही उसके अन्तर मे हाहाकार मचा दी है। विमली के इस दूसरे दर्शन और मुस्कान ने तो उसे मतिविहीन कर दिया है। वह आज अपने को नहीं रोक पाया। पिछले कई दिनों के बाद आज वह पुन सियाराम पासी की भेड़ी की ओर चल पड़ा। सियाराम पासी ताढ़ी बेचता है। लेकिन लुका-छिपा-कर दो-चार बोतल दाढ़ भी रखता है—हरनाम जैसे लोगों के लिए।

हरनाम ने पाच रूपये का नोट सियाराम पासी की ओर बढ़ाया। पाच का नोट देखकर ही सियाराम पासी समझ गया, आज फरमाइश ताढ़ी की नहीं, दाढ़ की है। वह एक बोतल दाढ़ तथा मुना हुआ चना लाकर हरनाम के सामने रख गया। हरनाम जी भरकर पीता है। खूब छककर। नशा जब रग लाता है, उसे विमली बुरी तरह याद आने लगती है। विमली की आखों के आमन्त्रण का एहसास पूरे व्यक्तित्व को झनझना देता है। वह बिना कुछ सोचे ही विमली के घर की ओर चल देता है।

हरनाम को निखिल दरवाजे पर ही मिलता है। निखिल हरनाम को देखते ही नमस्ते कर उसे दालान मे ले जाकर बैठाता है। फिर जाकर घर सूचना देता है। राणा वहादुर्सिंह निखिल के साथ ही दालान मे आते हैं। हरनाम राणा वहादुर्सिंह को देखते ही प्रणाम करता है। ऐसा पहली बार हुआ है। राणा वहादुर्सिंह अबाकू रह जाते हैं। अपने बेटे की बुद्धि-विलक्षणता पर उन्हें मन ही मन अपार गर्व होता है।

हरनाम नशे की स्थिति में ही बकना शुरू करता है, “चाचाजी, अब हमलोगों की दुश्मनी समाप्त हुई। निखिल ने हमे मिला दिया। अब खेती-वारी का सारा काम मैं सभालूँगा। देखूँगा, कौन अनाज की एक बाल भी छूता है। मुझे सिफं पच्चीस मन अनाज दे दीजिएगा। मेरी मा के लिए वर्ष भर का खर्च हो जाएगा। बस, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।”

“अरे बेटा, तुम्हारे लिए मैं कब किस चीज को छिपाता हूँ? जब जिस चीज की जरूरत पड़े, ले जाना। यह अपना घर ही समझना।”

रामा वहानुर्धित की सारी समस्या और चिंता ही दूर हो जाती है।

नितिस मह सब सुनकर बाग-बाब हो गया। वह हरनाम को पर के बन्दर से गया। हरनाम नितिस की माँ को 'प्रणाम भाषी' कहता है। फिर उसकी प्पासी भालें विमसी को ढूँढ़ने सकती हैं। विमसी बोसारे में रखे पर्सेय के पाए से सटकर दृढ़ी है। हरनाम की भालें जल्द ही उसे ढूँढ़ लेती हैं। वह विमसी के करीब आता जाता है। कहता है 'विमसी तून मुझे बुझाया था मैं, मैं अब जा गया।

विमसी हँस पड़ती है। विमसी की हँसी जानलेवा होती है। उसका नदा और वह गया। वह पास ही की चारपाई पर बैठ गया। नितिस उसे ढूँछ लिमाना पिलाना चाहता है। सेकिन वह कुछ भी नहीं लाता। विमसी भी उसे लिमाने के मिए और देने सकती है। तब वह विमसी से कहता है, "माझ बहुत कुछ पाकर आया हूँ। इस से लिमाना। अब तो यहीं खाना ही है।"

काफी देर तक वहाँ रहने के बाद हरनाम अपने पर की ओर अभ पड़ा। यह काफी महरा गई है। सेकिन हरनाम जो इसकी ओर चिंता नहीं। उसे अपनी भालों के सामने तिक विमसी ही नजर आ रही है। विमसी की दुनिया में दीया वह अपने पर पहुँच गया।

जौम कहते हैं, बीकारों के कान होते हैं, वह बात विलुप्त सच है। मुबह-चुंबेरे ही यह चर्चा पूरे अमध्यम के साथ गाढ़ भर में और पकड़ चुकी थी कि रामा वहानुर्धित और हरनाम में सोठ-गाठ ही पर्ह है। यह चर्चा बोविद्वर को अपन किसी प्रियके सोक-चुंबेर की भाँति प्रतीत होती है। वह तिलमिसा उछता है। आधिर ऐसा कैसे हो गया? ऐसा कभी नहीं होता आहिए। वह इस चर्चा की प्रामाणिकता की बाब के मिए निकल पड़ा।

अब नितिस एकरम वितारहित विस्तृत निरिचत होकर भूमिया के मिसमे भी घोड़ना बसाने सका था। मुबह के भाठ बड़े हैं। सोंचहा है, यह समय उपमुक्त नहीं है। कुपहरिया में मिसमा ही लीक होता। वह विचार करता है कि बाब के बाब वह भूमिया के पर कुपहरिया में ब जाकर रात में ही आएगा। या फिर भूमिया को ही अपने बालहरा परिहान में पुसा देगा। सेकिन क्या वह आएगी? एक लंगूँ।

जाता है निखिल के सामने। फिर निखिल को इस सवाल का जवाब भी मिल जाता है। हा, वह जरूर आएगी। क्यों नहीं आएगी? अब तो 'वावन विगहवा' और हरनाम दोनों उसके पास हैं। उसे आना ही है।

उसी दिन की भाति दुपहरिया होते ही निखिल झुनिया के घर की ओर चल पड़ा। आज पुन उसका अदाज सही सावित होता है। मर्डई खाली है। हरिहर नहीं है। कहीं गया है। और उसके घर का दरवाजा अन्दर से उसी तरह भिड़का है। वह दरवाजे पर पहले दिन की तरह ही हाथ की थाप लगाता है। अन्दर से कोई आवाज नहीं आती है। पुनः दूसरी बार थाप लगाता है। इस बार झुनिया दरवाजा खोलती है “अरे, तुम! मैं तो समझ रही थी कि वावू हैं।”

“क्यों, वावू के सिवाय किसी और को घर आने देने का विचार नहीं है क्या?”

“नहीं, मैं तो ऐसे ही कह रही थी।” और झुनिया किनारे खिसक गई। निखिल अन्दर आ गया। एक क्षण को चुप रहने के बाद झुनिया ने पूछा, “अच्छा, उस दिन तुम कहा चले गए थे?”

“मेरा नौकर मुझे खोजते हुए आ गया था। घर पर एक बहुत जरूरी काम था। सोचा, मैं खाऊ या तुम, कोई फर्क पड़ने का नहीं।”

“लेकिन मैंने उसे खाया नहीं है, तुम्हारे लिए रखा है।”

“अरे भला खाने वाली चीज को भी मजोकर रखी जाती है! अब तक तुम्हें खा लेना चाहिए था। खैर। अब खा लेना।”

दोनों कुछ पल के लिए मौन हो गए। कोई एक-दूसरे से कुछ नहीं बोला। फिर शुरुआत पुन झुनिया ही करती है, “तुमने अपना काम नहीं बताया।”

“अच्छा। हा आज उसी काम के लिए तो आया हूँ। वो जो बूढ़ी-बूढ़ी दाई है न मेरे घर। वो विदेसी की माँ। उससे अब अच्छा काम नहीं हो पाता है। मैं चाहता हूँ कि तुम ही अब मेरे घर का काम किया करो।”

“नहीं, मुझे एकदम फुर्सत नहीं है। कटनी से लेकर रोपनी तक तो वज्ञी रहती हूँ। इसपर भी तो अपने घर की रसोई बनानी ही पड़ती है।

बाबू बक्सर दीमार रहे हैं। उनसी सेवा भी तो करगी है।

‘क्या हो पया है बाबू को? उनका इसाम क्यों नहीं करती? किसी अच्छे डाक्टर से उनको दिखाना?’

‘हम वरीबों के पास कहा वैसे हैं कि डाक्टर के पास जाए? डाक्टर तो तुम्हारे बेन राजा सोरों के लिए हीड़े हैं!'

“से बाबू को किसी डाक्टर” दिखाता। और निविल दस-दस के पार नोट मूनिया की ओर बढ़ता है। मूनिया धीछे हट जाती है। मही मेती है। निविल आगे बढ़कर बदरन उसकी मृद्दी में नोट ढूँस देता है। मूनिया जानती है, वह नोट लगा मही से यह अपना भैतिय पूरा करेगा ही। ही महता है नोट नहीं मेने पर वह रंज भी हो जाए। फिर रज बढ़कर बहुत कुछ बर महता है। उसके बहुत बाबू परेशान भी। और मूनिया बढ़कर रह जाती है, क्योंकि वह मूनिया का हर अस्याचार सह सकती है। सेक्रिन अपने बाबू की परेशानी नहीं सह सकती।

मूनिया को लाट सीप चुकने के बाद निविल इतमीनान से वहीं घटिया पर बैठ गया। फिर मुस्कराते हुए बोला ‘तुम मुझ बहुत अच्छी सगती हो।’

मूनिया कोप जाती है। सेक्रिन इसकिए नहीं कि निविल का इगार अब बहस रहा है। बहिक इधरिए कि पहसु दफ्तर राजा बहादुर्सिंह ने भी बिल्कुल इसी बरह कहा था। मूनिया को यह देखकर अचरण भी सीमा मही रहती है कि निविल थीक राजा बहादुर्सिंह की तरह ही घटिया स उठकर सबसे पहसे उसका दाव पकड़ता है। फिर उस अपने सीने में दबोचने लगता है। वह छिट्ठकर अस्य हो जाती है। कहती है, बाबू का रहे होगे मही उसके आने का समय है।’

‘तो थीक है, मैं जा रहा हूँ। सेक्रिन आव महीं। दो पार लिन बाद आकर घबर दूँगा तब यहाँ को मेरे अभिष्टन या दासान में दो चार बटे के लिए आना होया।’

वह चसा जाता है। मूनिया कोई अवाक मही दे पाती है। आखिर मूनिया क्या अवाक दे? उसे कुछ भी समझ में नहीं आता है। लोप तो यही न बहेये कि उसे अपना अवहार लीया बना सेना आहिए, किसीको

भी अपने पास नहीं फटकने देना चाहिए, इस तरह के किसी भी प्रस्ताव पर 'ना' कह देना चाहिए, लेकिन यह झुनिया ही जानती है कि 'ना' कहने के पीछे कितनी शक्ति की जरूरत होती है। उसके पास किसी भी तरह का शक्ति नहीं है। वह एकदम शक्तिहीन है। फिर वह 'ना' कैसे कहे? 'ना' कहना और 'ना' करना दो विलक्षण अलग-अलग बातें हैं। वह 'ना' कहकर ही क्या कर सकती है, जब कि 'ना' करने से किसीको रोकनहीं सकती?

छोटी-बड़ी घटनाएँ घटती रहती हैं। काम भी नये-पुराने होते रहते हैं कभी-कभी कोई घटना विशिष्टता का रूप लेकर गाव में चर्चाओं का विषय भी बन जाती है। लेकिन समय की रफ्तार पर इस सबका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अपनी तेज रफ्तार के साथ समय निरतर गुजरता रहता है झुनिया देखती रहती है, उसकी आखों के सामने से एक लम्बा समय उसके गाव से होकर गुजर गया है।

इस बीच गाव के नवशे और आकृति पर कई चीजें बनती-विगड़ती हैं। वदलाव का एक भरपूर चक्र पूरी तरह गाव को अपनी गिरफ्त में ले चुका होता है। हरनाम अब पहले का हरनाम नहीं रह गया है राणा वहादुरसिंह का पालतू कुत्ता हो गया है। उनके एक इशारे पर इधर-उधर ढौढ़ता है।

लेकिन दबी जुवान गाव के लोग कहते हैं कि वह सब विमली तो चलते ही हो रहा है। विमली और हरनाम के आपसी सबध एकदम गहरा गए हैं। गाव की हर बैठकों की फुसफुसाहट तथा गाव के हर युवकों की धीमी आवाज में विमली और हरनाम के किस्से होते हैं। कई बार, कई लोगों ने विमली और हरनाम को रगे हाथों देख भी लिया है। लेकिन देखकर भी लोग चुप रह गए हैं। बड़ों की बात है। कौन झगड़ा मोल ले विमली तो अक्सर ही शहर सामान खरीदने या वीमारी का वहाना बना कर हरनाम के साथ ही आती-जाती है। हरनाम का पौरुष एकदम गिर गया है। अब गाव में उससे कोई नहीं डरता।

इस बीच जोगिन्दर की राजनीति ने भी गुल खिला दिया है। पूरे गा-

में वह पूछनीय हो जाया है। अब राणा बहादुरसिंह से किसी भी स्तर से वह कम नहीं रखा है। उसके तुमहसे मकान के ऊपर भी एक कोठरी बनायी गुरु हो जाई है। शायद वह अब उसीमें हृषा बाएगा।

इतर राणा बहादुरसिंह एकदम खूब ही पाए हैं। लेकिन निधिल में बाबन चिंगहवा से वह सब कुछ करके दिला दिया है, जिसे चिंदपी भर राणा बहादुरसिंह नहीं कर पाए थे। अपने पुराने मकान को विस्तृत ठोड़कर निधिल में मानविक ढंग से नया मकान बनाया है। एक दृश्यार्थ भी भिन्न है। एक जीर गाड़ी भी तथा बन्दूक और त्रिस्त्रावर साथ-साथ पास बरताया है। वह याद में रीढ़ से पूरबता है। उसकी धान और रीढ़ में छोई आंख नहीं आई है। माल का कोई भी आवश्यक उसका प्रतिष्ठानी बनने की घोषिया नहीं करता है। लेकिन भूनिया के लिए यह कसाई मालित हृषा है। भूनिया की पूरी तरह बर्बाद कर दिया है उसने। याना बहादुरसिंह बाठे थे तो शौक से कभी-कभार। हरजाम बातों का तो नहीं में। लेकिन इसमें तो उसके ऊपर अपना जन्मसिद्ध भविकार समझ सिया है। भूनिया को इस बात का वहरा दु ब है कि इस बत्याचारी के कुकमों को उसके बाहू में भी माप सिया है।

भूनिया को सगता है कि इस बीच एकमात्र सोमाक ही है जो तनिक भी नहीं बरसा है। वैसे बाहरी और भीतरी रूप से वह भी विस्तृत बरस गया है। लेकिन भूनिया के प्रति उसके मन की जाह नहीं बनी है। भूनिया को ममता भरी वृष्टि से देखने वाली उसकी निगाह नहीं बरसी है।

सामारू अब किसीसे बरता नहीं है। वह अकड़र रहता है। लेहनर मजूरी करके कमाता है। किसीके सामने हाथ पसारने और मिहिगिझामें बासी बात चुने परन्द नहीं। कम मजूरी मिसने के कारण वह कई बार हरनाम स टकरा गया है। उसे इस बात में अपने लिंग तीन ही उन्नु न बर आते हैं—निधिल, जौगिदर और हरजाम। वह इन तीनों स चूपा करने समा है। इन सोरों की सूख देखन की भी उच्च इच्छा नहीं होती है। मामनहीन वह यरोंकी की घटकी में पिस प्या है, बन्यधा इन सोरों को मजा चलाता। फिर भी वह बक्त और अवसर की तकाश में है। बन्दूक स्पृति बाठे ही वह इन सोरों को कभी नहीं छोड़ेगा।

और झुनिया जब इन सब लोगों से हटकर खुद अपने बारे में सोचती है, तो उसे लगता है कि वह भी वहुत कुछ बदल गई है। वैसे सोमारू के प्रति उसके मन में थोड़ी-वहुत कमजोरी तो वहुत पहले ही से थी, लेकिन अब सोमारू के लिए वह एकदम बेचैन रहने लगी है। जिस शाम सोमारू उसके घर नहीं आता है, उस रात नीद भी उसकी आखो से जुदा हो जाती है। लेकिन विडवना यह कि सोमारू के प्रति इतनी चाह होते हुए भी वह अपने को सोमारू को सौंप नहीं पाती है। उसे लगता है कि उसका शरीर घृणित हो चुका है। सोमारू का स्थान उसके मन में है। वह अपने इस घृणित शरीर से सोमारू का रिश्ता जोड़ना नहीं चाहती है। लेकिन यह सबाल बराबर उसके सामने खड़ा हो जाता है कि क्या सोमारू उसके इस मन की बात को समझ पाएगा? नहीं, वह इने विल्कुल नहीं समझ पाएगा। उसके लिए मन और तन के अलग-अलग का रिश्ता भी पहेली है। उसे तो तन और मन से परिपूर्ण अपनी झुनिया चाहिए। पूर्ण झुनिया। लेकिन अधूरी झुनिया पूर्ण कैसे हो सकती है? वह सोमारू को कैसे बताए कि यह जानते हुए कि खाना जूठा और वासी हैं, अपने प्रिय के सामने परोमना कितना कष्टदायक होता है? मगर यह सोमारू भी एक-दम देवता है। इस सबका ख्याल नहीं करता। झुनिया को कभी दोषी नहीं समझता। यह जानते हुए कि झुनिया का चेहरा दागों से भरा है, वह बराबर झुनिया को देवाग ही समझता है। काश, इस सोमारू के लिए झुनिया ने कुछ किया होता। झुनिया सोमारू की याद में ढूब जाती है।

यब अक्सर ही ऐसा होने लगा है। शाम होते ही सोमारू की याद झुनिया को धर-दबोचती है। फिर सोमारू जब तक आ नहीं जाता, तब तक चूल्हे के पास बैठी वह उसकी बाट जोहती रहती है।

हरिहर कही से बाता है। आकर ओमारे में चारपाई पर बैठ जाता है। अब हरिहर की वृद्धावस्था भी आखिरी मजिल पर आ गई है। उससे अब पहले जैसा काम भी नहीं हो पाता है। फिर भी लगा रहता है। उसके दात आधे से अधिक टूट गए हैं, आखों की रोशनी भी वहुत कुछ चली गई है। वह बैठते ही झुनिया से कहता है, ‘वेटी, एक गिलास पानी पिलाओ।’

मूनिया उस पानी बढ़ती है। वह पानी धीकर खात हो जाता है। फिर चहता है, "राणा बहादुर्यौसुह की सहजी की सारी वय हो गई। वही अस्ती इसी हृष्टे बारात आएगी। मुना है, किसी बहुत बड़े शहर में घारी कर रहे हैं। पक्षास इबार तिसक दे रहे हैं। दूजे चूम-धाम से सारी होगी।"

मूनिया कोई जवाब नहीं देती है। कहीं बहुत दूर से आती हुई बालू की इस आवाज में उसे दर्द ही दर्द मिलता है। वह जानती है, इस गांव में जब भी किसी सहजी की घारी हाती है बालू छटपटा जात है। उनकी आवाज दर्दीसी हो जाती है। मूनिया की घारी ने मही कर याए, इसका गम अपने सहके दी मूल्य से भी उग्हे ज्यादा है। वे असर ही मूनिया की घारी की चिता न प्रसन्न रहते हैं। मूनिया को इस बात का पूछा जिम्मेदार है कि उभ और सभ्य न बालू को उठना मही तोड़ा है, जितना उसकी घारी की चिता न। हासाकि मूनिया ने बालू से कई बार कहा है 'बालू तुम मेरी घारी की बैकार की चिता किया करते हो। मुझे जारी-जारी नहीं करनी है। जेकिन उसकी इस बचकानी बात ने हरिहर की चिता दूर नहीं की है।

हरिहर फिर चहता है, "अब जमाना एकदम बदल पया है। किसी की इच्छत कोई देखने वाला नहीं है। घन-दीसत के बस पर सोग भन मारी बरने समे हैं। जाग निकित ने सोमारु को पीटा है।

जाय या सोमारु को "मूनिया बीच ही ने बालू को येक देती है।

"हाँ, सोमारु वो।

"क्यों?"

"निकित कह यहा या नि सारी भर उसे उसके यहाँ छोड़ा होया सब काम-र्खा करने के सिए। पर सोमारु ठंडार नहीं हुआ। बस इसीसिए।"

बस इसीसिए? मूनिया माथा पीटकर यह जाती है। एक सब मीठ रुदन के बाद फिर पूछती है 'बहुत मार पड़ी है?

"नहीं मार बहुत नहीं पड़ी है। जेकिन वस मादमी के बीच मैं जूठों से मारना।"

मूनिया

झुनिया अन्दर ही अन्दर काप उठती है। गुस्से के मारे वह तिलमिला जाती है। दात किटकिटाते हुए खून का घूट पीकर रह जाती है। काश, अगर उसका वश चलता तो वह सोमारू का बदला इसी समय निखिल से लेती !

काफी रात बीत जाने पर भी सोमारू नहीं आया। वावू सो गए हैं। झुनिया को वावू की बातें मर रही हैं। उससे अब तनिक भी रहा नहीं जाता है। वह धीरे से किवाड़ खोलकर बाहर आ जाती है। फिर पूर्ववत् किवाड़ भिड़काकर चल देती है। गली में दवे पाव चलते हुए वह सोमारू की मढ़ई के पास पहुच जाती है। वहाँ वह मढ़ई के आगे नहीं रुक पाती। मढ़ई के पिछवाड़े जाकर खड़ी होती है। मोचती है, सोमारू को कैसे बुलाए। उसके मा-वाप उसके साथ होंगे। वे क्या सोचेंगे? नहीं, वह उन लोगों के सामने नहीं बुलाएगी। तो फिर कैसे बुलाएगी? और इसी उघेड़बुन में पड़ी वह वही चुपचाप खड़ी रहती है। उसे कुछ भी समझ में नहीं आता। उसके माथे के ऊपर से रात सरकती जाती है। अचानक उसका दिमाग साथ दे देता है। वह सोचती है, सोमारू के मा-वाप सो गए होंगे। लेकिन सोमारू आज सोया नहीं होगा। आज वह बुरी तरह अपमानित हुआ है। नीद उसे आएगी भी कैसे?

बस, यही सोचकर झुनिया अपने हाथ हिलाकर चूड़िया खनका देती है। फिर चुपचाप मढ़ई के अगवासे की ओर देखने लगती है। मढ़ई के अन्दर से कोई निकलता है। वह आकृति से ही पहचान जाती है—सोमारू है। सोमारू मढ़ई के बाहर एक क्षण तक खड़ा रहने के बाद फिर अन्दर जाने लगता है। वह इसी समय पुन तेजी से अपनी चूड़िया खनकाती है। सोमारू रुक जाता है। मुड़कर मढ़ई के पिछवाड़े देखता है। कोई खड़ा है। दूर से पहचान नहीं पाता। करीब बढ़ जाता है। “अरे। झुनिया! तुम?” वह चौंक उठता है।

“हा!” झुनिया अपनी निगाहें उसके चेहरे पर जमा देती हैं। वह झुनिया की आखों में आखें ढालकर देखता है। झुनिया की आखें आज उसे बड़ी प्यारी और शीतल लगती हैं। उसके हृष्प का कोई ठिकाना नहीं रहता। ऐसा आज पहली बार हुआ है, जब झुनिया उससे मिलने उसके घर आई

है। सुनिया के पारे उसके मूँह से बोस भी नहीं फूटते हैं। कुछ मिनट बाद सुनिया ही बोलती है “निकिल मेरुद्धि भाइ है मैं ?”

“बाने दो उस अत्याखारी का नाम मैं भी !”

“काफी मार पड़ी है ?”

“नहीं, मार नहीं पड़ी है। हाँ, सात अत्याखारी मेरुद्धि के हम्बल छिपा है।”

भुनिया की निगाहें कुछ जारी हैं और उसकी छाँतें नम हो जाती हैं। सोमाह यह सह नहीं पाता। वह तत्काल विषय ही बदल देता है, “अरे, तुम यहाँ पढ़ी हो ! चमो बन्दर चलो !”

“नहीं, चाढ़ा क्या करूँगे ? बड़े पर लोट जाती है। चिक्के तुम्हारे देखने ही आई थी। देख मिया। हाँ, आज शाम की तुम जाए थर्यो नहीं ?”

“ऐस ही नहीं बाया। मग उखड़ा-उखड़ा था।”

“तो क्या सिक्के ठीक रहने पर ही आओये ?”

“अरे, नहीं” भीर बागे बहकर सोमाह भुनिया का हाथ अपने हाथ भे मे सेंधता है “भच्छा अब ऐसा कभी नहीं होया।”

भुनिया अब दिनों की भाँति अपना हाथ सोमाह के हाथ से नहीं लीचती है। दैर तक वे दोनों ऐसे ही लड़े रहते हैं। किरण निया कहती है “अब मैं जा रही हूँ।”

“अरे, ऐसा कैसे होगा भसो मैं तुम्हे तेरे भर तक छोड़ भाँझा।” और सोमाह भुनिया का हाथ पकड़े जसे सेकर उसके घर की ओर भस देता है। वहाँ पहुँचकर सोमाह बाहर से भिड़के भुनिया के पार के दरवाजे को छोलता है। किरण यहाँ भीमी भाकाड़ में कहता है “अस्तर चमी भाकी।”

“नहीं पहसे तुम यहाँ से जाओ तब मैं अस्तर भाँझूंगी।

“तो ठीक है दैबता हूँ पहसे कौन जाता है।” भीर सोमाह दी चुपचाप यही लकड़ा रहता है। वे दैर तक भी ही लड़े रहते हैं। ठीक है तब जिस तरह सोमाह वी मड़ी के पिछाएँ लड़े थे। किरण भी कहता है भच्छा तेरी ही विषय पहसे मैं ही जाता हूँ।”

सोमाह भस देता है। भुनिया उसे अपनकी जाँचती है।

मुढ़-मुढ़कर देखता जाता है कि भुनिया अभी गई है कि नहीं। लेकिन भुनिया अभी नहीं गई है। वह जाते हुए सोमारू को भर नजर देखती रहती है। पर जब सोमारू एक गली से मुड़कर आखो से ओझल हो जाता है, तो उसका मन कैसा तो ही जाता है। उससे अब वहाँ एक क्षण भी खड़ा नहीं रहा जाता। वह अन्दर चली जाती है तथा भीतर से दरवाजे को भिड़काकर कुण्डी चढ़ा देती है।

विमली को गए लगभग एक महीना हो गया। उसकी बारात खूब धूम-धान के साथ आई थी। गाव के बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि इस तरह की बारात इलाके में पहले कभी नहीं आई। लौटती बारात के साथ ही विमली का दूल्हा विमली को भी लेता गया था। अब विमली वही है—अपनी समुराल में। शायद इसीलिए हरनाम अब उखड़ा-उखड़ा रहने लगा है। चोर, बदमाश और कामुक व्यक्ति का कोई भरोसा नहीं। जब तक मकराद सघता है, तब तक साथ रहते हैं। स्वार्थ में थोड़ी-सी बाधा पड़ने पर फन-फना उठते हैं। एकदम अलग हट जाते हैं। हरनाम भी कुछ इसी तरह का रुख अन्तियार कर लेता है। अब वह सिर्फ नाश्ते और खाने के बक्त ही राणा वहादुरसिंह के घर जाता है। जिस तरह पहले चौबीसों घटे उनके घर रहता था, उस तरह नहीं रह पाता है। खेती-चारी के उनके कारोबार को भी वह अब ढीने नजरिये से ही देखता है। राणा वहादुरसिंह की ढेर सारी बातें भी वह अनसुनी कर देता है।

जेठ की दुपहरिया लहलहाती दुपहरिया में हरनाम गाव से बाहर, टीका बाबा के बगीचे की ओर चल देता है। वह झुनिया के घर से बा रहा है। झुनिया घर पर नहीं है। वहाँ उसे पता चला है कि वह बाबू की दवा खरीदने वाजार गई है। अब शीघ्र ही लौटेगी। वाजार से गाव आने का रास्ता टीका बाबा के बगीचे से होकर ही आता है। इसीलिए हरनाम टीका बाबा के बगीचे में जा रहा है।

टीका बाबा जब तक जिन्दा थे, इस बगीचे में किसीको धुसने नहीं देते थे। उनके मरते ही यह बगीचा लावारिस हो गया है। पूरे पाच विंगहे में लगाया गया ईंटीका बाबा का यह सघन बगीचा, अब कई कुकर्मों का

साथी हो याए हैं। इनके भर के बीर यह में चोरी करके इसी बर्बीचे में हिस्ता बांटते हैं। ऐसे यहस्ते से बुबले बाले कई यही इस बर्बीचे में मूटे पीटे या हैं तथा दो-चार की हरणार्थ भी हुई है। हरनाम जाग इसी बर्बीचे में भूनिया से मिलने आ रहा है।

हरनाम को बर्बीचे में बैठकर बहुत देर तक भूनिया की प्रतीका नहीं करती पड़ी। भूनिया भी भ्रम ही आ रही। घूप से उसका चेहरा साम हो गया है। वह हरनाम को नहीं देख पाती है। बर्बीच में घुसकर कुछ आगे बढ़ काती है। फिर एक घंटे घूथ में नीचे सुस्ताने की शीघ्रता से बैठ काती है।

पास ही के एक बाल के नीचे बैठा हरनाम उठकर भूनिया के पास आ गया। भूनिया उसे देखकर तिक्कमिसा उठी। उसका मत कड़वा हो उठा है। हरनाम के मुह में निष्कर्षन बासी धराद की दुर्गम्य पहसु की उत्तर ही भूनिया को उद्धोषित करने लगती है। इस बार हरनाम काफी समय बाद उसके पास आया है। एक जौदे समय बाद। हरनाम उठता है, भूनिया बहुत दिमों बाद तुम्हारे पास आया हूँ। सासी राजा बहापुर मिह की छोड़ी न फँसा मिया था।

भूनिया उठ गई होती है। उहती है, “बाबू भीमार है। उसकी बाबा मेंकर आ रही हूँ।

‘बैठ-बैठ सपष्टकर हरनाम भूनिया की बाहु पकड़ मेता है, ‘मैं तरे घर से ही पता समाकर आया हूँ कि तू बाजार पई है तभी यहाँ आया हूँ। अब तक बाबू मेरे नहीं हैं तो जब एकाप बटे के बन्दर मर महीं आएंगे। गङ्गा-आध पटे बाद ही आमा।

वह हरनाम से अपनी बाहु छुड़ाते हुए उहती है, “नहीं छोड़ो निकिम भी आ रहा होया।

‘नियित ! वह सासा यहाँ कर्मी आएमा ?” हरनाम कई बाबाज में उहता है।

“हाँ वह बकर आएगा। उसन मुझस कहा है। बाबा के लिए भी तो पैसे उसीमें विए हैं।

“बठ ! हरनाम एक भट्टके के साथ भूनिया की बाहु खीचत हुए

गरजता है, “जब तक मैं यहां हूँ तब तक किसी भी साले की यहा आने की मजाल नहीं है।”

हरनाम द्वारा भट्टके से वाह खीचे जाने के कारण झुनिया लडखड़ा-कर वहीं गिर पड़ी। फिर उठी और पेट के तने से सटकर चुपचाप बैठ गई। हठात् उसे वगीचे के एक कोने-से आता निखिल दिखाई पड़ा। वह हरनाम से बोली, “वाह छोड़ो। वह देखो, निखिल आ रहा है।”

“आने दो साले को। उसके आने से क्या होगा?” और हरनाम झुनिया की वाह नहीं छोड़ता है। उसी तरह पकड़े रहता है। धीरे-धीरे निखिल पास आ गया। वह झुनिया की वाह पकड़े हरनाम को देखकर चौंक उठा, “हरनाम भैया, यह क्या कर रहे हो?”

हरनाम निखिल के चेहरे की ओर नहीं देखता है। दूसरी ओर ताकते हुए कहता है, “कुछ भी कर रहा हूँ, इससे तुमको मतलब ?”

निखिल को हरनाम की आवाज बदली हुई लगती है। वह तेज आवाज में बोलता है, “छोड़ो-छोड़ो इसको, जाओ घर, पिताजी तुमको खोज रहे हैं।”

“मैं तुम्हारे वाप का नौकर नहीं हूँ।” हरनाम गरजता है, “इस झुनिया के पास मेरे रहते अब तुम कभी मत आना।”

“साले, जिस थाली में खाते हो, उसीमें छेद करते हो।” निखिल दहाड़ता है, “मेरे रहते इस झुनिया को कभी हाथ मत लगाना।”

“साला, गाली बकता है। अभी तुझको फाड़ दूगा।” हरनाम की पहली प्रकृति जाग उठती है। वह निखिल की तरफ भपटता है।

“ठहरो साले बन्दूक लेकर आता हूँ तो अभी तुझको बताता हूँ। असल जादा का जन्मे हो तो भागना मत।” और निखिल बन्दूक लेने के लिए अपने घर की ओर भागता है।

“मुझे बन्दूक की घमकी दे रहे हो। अभी अपनी ताकत तुम्हें दिखाता हूँ।” और बढ़वडते हुए एक दूसरे रास्ते से हरनाम भी गाव की ओर चल देता है। अब झुनिया अकेले बच जाती है। वह उठकर घरकी ओर चल पड़ी है। अच्छा हुआ, ये दोनों अत्याचारी आपस में ही लड़ गए, अन्यथा उसे ही परेशान करते।

मूलिया अपने पर आ गई है। लेकिन उसके पर आने से पहले ही वे दोनों बाय आ चुके थे तथा दोनों ओर स गासी-ग्रामीण और अमरिया भी शुरू हो गई थीं। निखिल अपने दातान पर बंदूक सेहर लड़ा है। राष्ट्र बहादुरसिंह तथा उसके बाय अपने जाय रस रोक रहे हैं। इधर बरगाड के पास बिमा साइसेंस बासी अपनी बंदूक लेहर हरताम भी आ गया है। कुछ जोग उसे भी रोक रहे हैं। दोनों जगह गोब के सोप समाजवीन की तरह उमड़े आ रहे हैं तथा विषय से अवगत होकर बट लारे से-सेहर गप्पे मढ़ा रहे हैं।

यह स्वर जोगिवर को अचानक अपन नाम दिसी लौटी मिलने वी ओपथा मुनने की तरह ही सुखदायी मरी। वह उच्च पड़ा। उसका भी करता है कि वह इसी समय दोनों जपहों की ओर दीइकर मुझामना करे। लेकिन फिर वह सोचता है कि तभी उसका जाना ठीक नहीं होगा। वे बारी-बारी से स्वर्व ही उसके पास आएंगे। उसके पास आए बर्वेर उनका जाम चसेया कैसे ?

इस सूचना से सोमारु को भी काफी बल मिलता है। ये दोनों असम बसग हो गए बब सोमारु बारी-बारी से इन दोनों से निष्टेगा। सामे ये दोनों मिस भए ये इसीसे वह लाखार हो जाया था।

रात अधिपाने के कुछ समय बाद सोमारु चूपके से उठा फिर निखिल बहादुर के छसिहान में जला गया। लमिहान में अनाज नहीं है। छिर्पुजाम के टास हैं। फिर भी ये काफी कीमती हैं। सोमारु अपनी कमर से माधिस निकासकर जलाता है और पुजाम के टास में आग लाखार जल देता है।

सोमारु को सबसे मधिक विद्यास मूलिया पर है। सोमारु मूलिया से कुछ भी छिपाना नहीं आहता। वह लौटे हुए मूलिया को बताता है कि उसने राष्ट्र बहादुरसिंह के पुजाम में आय लगा दी है। मूलिया उसे कोहती है। वह मूलिया को समझता है देव मूलिया मैंने कोई यसकी नहीं की है। पाप ओर बत्याखार के छिपाए छिपकर या उसने होकर सड़ने में कोई फँस नहीं है। अर्म तो यही है कि वैसे भी हो सके अत्याखार का विद्येय करो।

शुरू में झुनिया सोमारू की हर बात का विरोध करती है। मगर सोमारू जब समझता है, तो समझ जाती है। उसे सोमारू द्वारा समझाई गई बात, बहुत सच्ची और ईमानदार लगती है।

सुवह हौने से पहले ही आग की लपटें समूचे गाव को प्रकाशमान कर देती हैं। 'आग लगी हैं' आग लगी है ' समूचे गांव में हल्ला हो उठता है। तो ग अपने-अपने घरों से निकलकर दूर से ही तमाशा देखने लगते हैं।

एक जमाना था, जब गाव में कहीं भी आग लगते पर हर आदमी अपने घर से एक बाल्टी और डोर लेकर निकलता था। किसी भी कुएं से पानी भरकर लोग उत्साह के साथ आग दुखाने में जुट जाते थे। लेकिन अब वैसा कुछ भी नहीं हो पाता है। लोग हाथ तेंकते ही रह जाते हैं और धू धू कर राणा वहादुर्रसिंह का सारा पुआल जल जाता है।

सुवह राणा वहादुर्रसिंह और निखिल की ओर से आवाज निकलती है, "यह काम हरनाम का है। उसके सिवाय दूसरा कर ही नहीं सकता है। कल ही झगड़ा हुआ और आज ही यह काम!"

यह काम हरनाम का नहीं है। लेकिन हरनाम सफाई नहीं देता है। गुम्मे में चिल्लाता है "हा, यह काम मेरा है। जो जी मे आए करो।"

वस दोनों ओर से गुट्टविदिया और तैयारिया शुरू हो जाती हैं।

जैसाकि जोगिदर को विश्वास था, उसके पास वारी-वारी से दोनों बातें हैं। सबसे पहले निखिल आता है।

"भैया, चुना तुमने न ?"

"अरे, मैं तो पहले ही समझ रहा था।" जोगिदर हसता है, "भला कुत्ते की पूछ मे यो लगाने से उसकी पूछ सीधी होती है।"

"लेकिन भैया, अब क्या होगा?"

"अरे होगा क्या? अभी घोड़े ही कुछ विगड़ा हैं। वन, एक-दो हजार खर्च करने की जल्दत है। इस बार बच्चू को दस साल के लिए अन्दर भिजवा दिया जाएगा।"

निखिल के बाद जोगिदर हरनाम के पास आता है।

'यार, मैं बहुत फेरे मे पड़ गया हूँ। मेरी मति ही मारी गई थी, मैं उसके घर फस गया था।'

‘यह तो मुझ खूब मं ही जागा चा तुम अब छसे चा रहे हो। तुमको पूरी तरह इस्तमाम कर सिया है उन जोगों ने। मेरा जपाम है कि अब तुम्हारे साथी भी तुमसे अलग हो गए होंगे।’

‘हा बोस्त यही तो सबसे बड़ी मुश्किल हो पर्ह है। कोई अब मर्यादा देने की तैयार नहीं। सभी साथी कट पर हैं। अब या होया? कोई रास्ता बताओ। बिना तुम्हारी सहायता के मैं कुछ भी नहीं कर सकूँया।’

कुछ मिनटों के मिए जोगिंदर भीन हीकर कुछ सोचने सकता है। फिर उसके बेहुरे पर मुस्काम की एक पहासी रेखा तंत्र पर है “बच्चा एक रास्ता है। निकित ने पचीस बीचे लेट मैं बेहुमा भान भी लेती की है। अब पास ही उसकी कटनी जगेपी ‘तुम माम के सभी कटनिहारों को जुटाओ और कहो कि देश मे महजाई वह पर्ह है। हर भीज के भाव आस-माल छूने सवे हैं। सरकारी कर्मचारियों के बेतन वह पर है। यहर के मजदूरों की मजदूरी वह पर्ह है। अब पहसे के हिसाब से कटनी नहीं होनी चाहिए। यह बरत्याखार है। बिना कटनी का रेट वहे अब तुम लोन कटनी मत करो। दैर्घ्या, कैसे वे लोग रेट नहीं बढ़ाते हैं।

हरनाम यह सुनते ही उच्छ्वास कर जोगिंदर के मते लिपट या ‘हा यार यह एकदम सही रास्ता है। इस रास्ते मुझे मेरे सभी सभी-साथी बापस मिल जाएंगे। तू बड़ा बामाम का आदमी है बोस्त। सचमुच तुम्हारे बंसा तज दिमाम बासा राजनीतिस इस पूरे इमाके मे कोई नहीं है।

फिर हृष्टात् हरनाम के दिमाग मैं एक सज्जा पैदा हो चया। दाढ़ घर के लिए उसका मम मतिम हो उठा। वह दांका-समाधान के मिए फिर जोगिंदर से बहता है “यार, अबर बाहर से कटनिहारों को उसम बुझा सिया तो?”

“नहीं हरनाम ऐसा कभी होगा ही नहीं। और ऐसा करमे पर उसे सफलता भी नहीं मिलपी। यहाँ के कटनिहार दूसरे कटनिहारों को कटनी करने ही नहीं देंगे। तुम्हें कुछ नहीं करना है। तुम सिर्फ बड़े यहा। साथ भगवान्तकरार कटनिहार स्वयं ही कर देंगे।

हरनाम जोगिंदर उ छाप लिहाकर वहाँ से चल पड़ा। मृदु ही मन वह बहुत लुटा है। सचमुच इस रास्ते वह राया बहादुरानि ।

सकेगा ।

एक-एक दिन बीतने-बीतते जेठुआ धान की कटनी का समय भी आ गया । हरनाम बहुत पहले ही से कटनिहारों को इस वात से आगाह कर चुका है कि बगैर कटनी का रेट दुगुना हुए कोई कटनी नहीं करेगा । रोज मजूरी तथा कटनी करके जीविका चलाने वाले गाव के सभी गरीबों में खुशी की लहर छा गई है । यह विल्कुल उनके अपने हित की बात है । इस बात पर वे हरनाम से बहुत प्रभावित हुए हैं । हरनाम से अलग रहने वाले उसके ढेर सगी-साथी उसके कर्णीव था गए हैं । हरनाम उनका नेता बन गया है । वे बराबर हरनाम के आगे-पीछे चलने लगे हैं ।

इधर निखिल भी अब अकेला नहीं रहा है । गाव के कुछ अन्य खेति-हर गृहस्थ जो निखिल के बराबर तो नहीं थे, लेकिन उस तक पहुँचने की कोशिशों में लगे थे, वे निखिल के साथ हो गए हैं । हरनाम की यह बात उन्हें बहुत दुरी लगी है । इस बात से निखिल के साथ-साथ उन्हें भी धक्का है ।

सदियों से दबे गाव के मजदूर इस बार फनफना गए हैं । उनकी दमिन इच्छा को हरनाम से काफी बल मिला है । उनके अन्दर एक अजीब तरह का उत्साह उमड़ पड़ा है । वे जगह-जगह बैठको तथा मीटिंगें करने लगे हैं । हरनाम तो उनके जिगर का टुकड़ा हो गया है । वे उसे इधर से उधर टांगे फिरते हैं ।

धान पक गए हैं । बालिया खेतों में पसरने लगी हैं । अब कटनी का आखिरी बक्त गुजर रहा है । निखिल अपने चद साथियों के साथ गाव में घूमकर ऐलान करता है, “यह सब, करने से तुम लोगों को कोई फायदा नहीं होगा । इस कटनी के नहीं होने से हम लोग मर नहीं जाएगे । लेकिन तुम लोगों के पास जगह-जमीन नहीं है । इस गाव में फिर कभी काम नहीं मिलेगा । मूरे मरीगे । किसीके बहकावे में मत आओ ।”

निखिल के जाने के बाद हरनाम समझाता है, “यह धमकी है । इस धमकी के कारण ही तो तुम लोग अब तक चूमे गए हो । आखिर तुम्हीं लोग सोचो कि अगर तुम लोग काम नहीं करोगे, तो फिर इन लोगों की

बेटी-मृहस्त्री होयी कैसे ? यदा ये सीन अपने-बाप कर सकें ? ”

“ नहीं । मजबूर चिस्ताते हैं । हरलाल की बात उग्हें समझ में आ जाती है । यदि उग्हें बपती शक्ति का पता चलता है । ऐ गई के मारे नारे भजने लगते हैं । ” यदि तक ऐट नहीं बड़ेगी । तब तक कटनी नहीं जाएगी । ”

इस्तर निविस चंचल बोरों से समाह-मध्याह्न कर बाहर से कटनिहार बुलाने चल देता है । यह सवर गाँव के मजबूरों को बीखभाइ देती है । ऐ पहाड़े लगते हैं । बाहर के कटनिहारों को कटनी नहीं करने दिया जाएगा ।

निविस दो दिनों के बम्बर ही बाहर से अलेक कटनिहार सेकर आ गया । फिर मजबूरों के बुस्ते का जबाब अपनी गरजती आवाज में देता है । “ कटनी जायेगी । जिसकी हिम्मत हो वो रोकने आए । ”

मजबूरों की ओर से पुनः जबाब आता है । “ जो कटनी करने चाहा जाएगा, उठ से उसकी जास आएगी । ”

इस यहीं से पुढ़ का जग्म हो जाता है । बोरों ओर से एक-दूसरे को मारने-काटने की तैयारियां शुरू हो जाती हैं । चाँद-रात इसके भर से धीङ-धूप कर बोरों पाटिया काफी हृषियार इकट्ठा कर सेती हैं । मारने काटन की पुन उड़े के माथे पर सजार हो जाती है ।

निविस इस अवसर पर पुलिस की सहायता लेना चाहता है । लेकिन उसकी पार्टी बासे उसे ढांट देते हैं । “ नहीं । आखिर कट-कट हम पुलिस की मदद सेंगे ? कटनी के बाद बोझे चर में तो नहीं रहे जाएंगे । इसे समिहान में ही रखना होगा । फिर दबनी, बोसबनी अभी सब कुछ तो जाएगी । ”

निविस को भी समझा है कि हाँ यहीं ठीक है । इस बार ईट का जबाब पत्तर से देता ही बेहतर होगा ।

दिन के दीन बड़े निविस की पार्टी से ऐसान होता है कि जास पांच बजे कटनी जाएगी । जिसके सीने में बह हो यह कटनी रोकने आए ।

इस इस्तर कटनी रोकने का ईटबाम शुरू हो जाता है । हरलाल अपनी बंधूर सेकर जड़ा है । उसके जासपाण मजबूरों की भीड़ जगी

की आखें लाल हैं। किसी भी मजदूर के हाथ खाली नहीं हैं। भाला, गडास लाठी, वधा से सभी लैस हैं। दो-चार नल बन्दूकें भी हैं। हरनाम कहता है, “पहले कटनी लग जाने दो। कटनी लग जाने के बाद एकाएक हमला बोल दिया जाएगा।”

सभी हरनाम की बात का समर्थन करते हैं। लेकिन सोमारू छटपटा-कर रह जाता है। वह छिटपृष्ठ रूप से शुरू से ही इस लडाई का विग्रेव करता रहा है। लेकिन किसीने उसकी बात पर कान नहीं दी है। अब जब कि लोग लडाई के लिए एकदम तैयार ही हो गए हैं, उससे रहा नहीं जाता है। वह भीड़ के बीच पूरी ताकत के साथ चिल्लाता है, “यह लडाई गलत है.. इस लडाई में हमें कोई फायदा नहीं होगा। यह हमारी लडाई नहीं, राणा वहादुरसिंह और हरनाम की लडाई है।”

उत्तेजित भीड़ गालिया बकानी शुरू करती है, “साला कायर है, डरपोक है, हिजडा है, दलाल है..”

हरनाम को परिस्थितिया अनुकूल मालूम पड़ती है। वस, वह चिल्लाता है, “मारो साले को.. मारो साले को।”

भीट सोमारू के ऊपर टूट पड़ती है। बूढ़ा कहार हरिहर सोमारू को बचाने के लिए दोढ़कर उमके ऊपर झुक जाता है। बौखलाई हुई भीड़ यह सब कुछ नहीं देख पाती। वह चारों ओर से प्रहार करना शुरू कर देती है। हरिहर का माथा फट जाता है। वह लुटककर एक ओर गिर पड़ता है। हरिहर के माथे से फव्वारे की तरह निकलता खून वहा की जमीन को भिगोने लगता है। वस, भीड़ थम जाती है। हरिहर के हाथ-पाव छटपटा रहे हैं। लेकिन वहा खड़े सभी अवाक् हैं। फिर क्षणभर बाद ही हरिहर का बदन शात पड़ जाता है। वह सदा के लिए आखें बन्द कर लेता है।

झुनिया दौड़ने हुए आती है और बाबू के शरीर पर लोट-लोटकर चीत्कार करने लगती है। झुनिया का चीत्कार हृदय-विदारक होता है। फिर भी कोई उसे चुप नहीं करता है। सोमारू वहा नहीं है। कहीं चला गया है।

रात का दूसरा पहर गुजर रहा है। झुनिया अपने दरवाजे पर खड़ी

है। उसके बाहर यांत्रिकों से भी इसे है। वहने उसका दूर कर ला दिया है? उन्हें बहुत दूर छोड़कर महान्‌का के लिए बहुत दूर है।

उसके बाहरहार को पार करने के लिए यांत्रिकों का ध्यान देने हैं—वह सामाजिक है। यूनियन का ध्यान देने हैं—वह सामाजिक है। सोमाक और यूनियन के बीच ऐसा असम्झौता है। सोमाक भी यूनियन के बीच ऐसा असम्झौता है, यूनियन भी सोमाक के बीच ऐसा असम्झौता है। यह बपते को रोक नहीं पाता। इसके लिए इसकी जगह है। वह सूनिया सभी खाने नहीं आता है। वह बाहर का बाहर की पुरानों में फौह देनी है। फिर सोमाक यूनियन को दूर करना है और यूनियन सोमाक को।

बन्धूक की साकारे हाथी है। साथ ही हाम्प्या भी। शायद भट्टाचार्य छिप रहे हैं। वह सोमाक और यूनियन कहाँ से उत्तर यात्रा-साक चल रहे हैं। वे इस सोमाक को छोड़कर जा रहे हैं। वह भैंसकर कभी इस सोमाक में नहीं आएगी। गोपी-मनुषी करके कहीं भी कमाएंगे और साथ-साक घुकर ही शायद विस्त्रितीय सुआर देंगे।

बाइंसे काष्ठी दूर असम के 'पोखर' के पास चले आते हैं। यहाँ भी सोमाक ने बने बासी बन्धूक और इसका गुणाई गहरी है। बाइंसे निःश्वस आया है। बूढ़ा चटक अजारिया। रात में उसमें सब कुछ दिलाई पड़ रहा है। यूनियन बोखर के बन्धूतरे पर वही हातार बतिम काट सोंच को देखती है। यूनियन को याद है। बचान में साथ चारात-चारात चरकर दर्दी का जाती थी तो इसी 'बोखर' के बन्धूतरे ने उसी हातार काटने वाले दर्दी की थी। तब उस काना गाँव में कहीं कि जाने की तरह बिल्ला ना दें और बैठ छिनहा मकान है, यह पक्षान आता दगके निए बना यूनियन है।

बाइंसे इस अंत्रोगिया रात में यूनियन की आता ही की बने की दृश्य ही नहाता है। ऐसित बात जीव के दो दृश्य दें जा जाती है। ऐसा बहातुर गिर और 400 सरक दर्दी मकानों की दृश्यकर वै मकान जाती कीमें 5

झुनिया को लगता है कि उसके वचपन से लेकर आज तक उन्होंने गाव कितना बदला है, यह दूर से ही पहचाना जा सकता है। इसी पौराणिक धृति के चबूतरे से ।

गाव की ओर से नजर घुमाकर झुनिया सोमारू का हाथ पकड़ लेता है। फिर दोनों तेज-न्तेज कदम बढ़ाते हुए आगे की ओर चल देते हैं।

सगोता बनर्जी

बाबू मुख्य अवदार मिलने से पहले मुझे 'अबला निकेतन' का निमंत्रण पत्र मिला। 'अबला निकेतन' मेरे छोटे भगवान की एक बड़ी संस्था है। इससे व्यक्ति अवशत हो जाते हैं। निमंत्रण-पत्र पढ़कर मुझे युक्ति हुई कि यह संस्था इस वर्ष अपनी पञ्चवीसवीं वर्षगांठ (रजत अवस्था) मनाने वा रही है। सक्रिय अवशर से मैं पूरी तरह उद्दीपित हो चुका हूँ। एक बात कहा वह और एक अमाम-भी बेधीनी मेरुम बेर मिला है। मन को सिर्फ एक बार निमंत्रण-पत्र देख लेने से ही संतोष महीं हुआ। पुन एक बार फिर निमंत्रण-पत्र छोड़कर देखने लग गया हूँ।

'मास्यवर्'

'अबला-निकेतन' नामक आपके पाहर की यह संस्था आपकी संका में इस वर्ष अपनी उम्र का पञ्चवीसवां वर्ष पूरा करने वा रही है। इस पञ्चवी-सवीं वर्षगांठ (रजत अवस्था) के उपसर्वमें इस तंस्था की संस्थापिका स्व० संगीता बलवीं की एक बहुत बड़ी बाहमकद मूर्ति स्मारक के क्षण में दूस संस्था के मुख्य द्वार क पास स्थापित की जाएगी। इस बवसर पर देश के अनेक अमाम-भी बुद्धिवीची यमाकमेवी तथा नेता पंचार रहे हैं। अत इस युम मीके पर हम आपको साहर निर्मित कर रहे हैं, क्योंकि यह संस्था आप सभी के सम्मोग से ही निर्मित हुई है।

इस संस्था की अब तक की महत्वपूर्ण भूमिकाओं का चार-संघेप हम आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

- १ अपनी इस पच्चीस साल की अवधि में इस संस्था ने पाच हजार ऐमी अमहाय लड़कियों की शादी की है जो दहेज, जाति-पाति तथा सामाजिक रूढियों के चलते जिन्दगी भर अविवाहित रहने वाली पीढ़ादायक स्थितियों से गुजरने लगी थी।
- २ इस संस्था ने इसी अवधि में दो हजार विधवा-विवाह भी किए हैं।
- ३ इसी अवधि में इस संस्था ने लगभग तेरह सौ ऐसी महिलाओं को आश्रय दिया है, जो लावारिस, सामाजिक रूप से बहिष्कृत तथा अपने पति और परिवार द्वारा परित्यक्ता थी।

अपने इस कार्य को वह संस्था अपना दूधमुहा प्रयास मानती है। यह निरन्तर इसमें आगे बढ़ने की कोशिशों में प्रयत्नशील है। इस संस्था के तमाम सदस्य इस बात के लिए प्रतिवद्ध हैं कि वे अपनी तथा इस क्षेत्र में अपनी सक्रियता को व्यापकता प्रदान करते जाएंगे। इसके लिए आपका सहयोग इस संस्था को प्रार्थनीय है।

भवदीय

—इला भाटिया

सचिव, अबला-निकेतन'

निम्रण-पत्र पढ़कर बन्द कर देता हूँ। आखें अपने-आप मुद जाती हैं। इस नगर के उत्तरी छोर पर स्थित 'अबला-निकेतन' का लम्बा-चौड़ा घेरा, उसके अन्दर की चमकती कोठरिया तथा उसका बड़ा-सा मुख्य फाटक नाखों के सामने तैरने लगते हैं। फिर अतीत को फाड़कर सगीता बनर्जी एकदम बीच फाटक पर खड़ी नजर आती हैं। उनके चेहरे पर शिकन की कही कोई रेखा नहीं है। वही ताजगी, वही रौमक, मुस्कराती हुई वही आखें, चेहरे का वही अदाजे-व्या। फिर कानों में उनकी बेलौम हमी, उन्मुक्त वातें और बेवाक विचारधारा ए गूजने लगती हैं। लगता है, जैसे लम्बा अतीत विल्कुल सिमटकर कल की बात बन गया हो।

मेरे साथ ऐसा यह तेरहवीं बार हो रहा है। इस संस्था की बारहवीं वर्षगाठ तक सगीता बनर्जी चिन्दा थी। इसके बाद वह इस संस्था को ही नहीं, इस नगर और इस धरती को छोड़कर सदा-मदा के लिए चली गई।

उनके जैसे जाने के बारे में भी इस संस्था की वर्षदोष खाताई गई वह मुझे शुरी तरह याद आती गई। वायिंग के सामने नाचती उनकी आत्मता और जाती में पूजती उनकी जाते मुक्त अमर ही यत्का उठनाती रही। मैंनिपनी पही। यद मुझसे यामोग यहर पह मव तृष्ण और नहीं महा जाएगा। यद मुझ भपनी चूणी देहर अवश्यक नहीं है। मैंने इसम उठा मिया है। यह अहानी उसी चूली को लौटन का प्रयाग है।

हासीकि भानी बिल्डरी जैसीता बनवी ने कई दश मुझसे यहा पा भीवालतबी मैं आएके बित एक बहुत बिल्डा कहानी का विषय छोड़ जाऊंगी। मैंनिहर बार व्यव्यारम्भ टोन मैं मैंने उनकी इस बात फो उड़ा देन की कौशिक की भी रंगीता भी यद कहानियों का उत्तम भाज भगीरथन भरना नहीं है। आप जो विषय देंगी वह निश्चिन कप मैं आउट आफ डट होगा।

आज इम बात को सफर मुझ यहारा अफसोस है कि तब संगीता बनवी को मैं गहचान मही पाया था व्यव्यापा "म नुरह कभी नहीं कहूँगा। दर-बहुम वह बिल्डरी बिल्डर बो स्टोरी पर जी रही थी। उनकी बिल्डरी उनके व्यवहार और उनके गम्भाय कुछ भी नहीं थे यद कि उनकी जाते उमधी माघनार्द और उनकी स्वापनार्द कुछ भी नहीं थी। धोनों मैं भूला बहुत बड़ा फँह था। आज मुझ सबता है कि मैं उनके विचारों और उनकी स्वापनाभी से भगवा हुएकर स्कूल क्लॅ मैं ही उनमे पुढ़ा पा इनीमिए मैंने उम्हे पसत दूँग मैं समझने की जामिया की थी। इसके लिए आज मुझे बहुत लेद है। यद मैं बिल्डरी भर भनी इस मूस पा प्रापदित रहूँगा। बमसे रविवार को उनकी संस्था की पर्सीस्टी वर्षदोष पर उनकी अमर्ती आइमार मूर्ति मुख्य द्वार क सामने सम जाएगी। इस नगर मैं ही नहीं इस सवर के अपल-अपल के तमाम नवरों तथा छोड़े यहे कम्बों मैं भी उनके लासंक्षय प्रधासुर हो गए हैं। उनके हारा सामानित स्त्री-नुयप तथा उनके परिवार यद निरचय ही उनकी इस मूर्ति के भागे मात्रा भूलगएगी। जे वास्तव मैं इस योग्य थीं यह यात मुझ भी आज भी समझ मैं आ रही है। इनीमिए इस कहानी के माम्बप से अच्छी तरह न पहचान पाने का प्रापदित मैं कर रहा हूँ।

हा, तो सुनिए, सगीता बनर्जी की कहानी में आपको शुरू से ही वता रहा है। वह इस नगर की मूँज निवासी नहीं थी। लेकिन कहा की थी—मुझे आज तक मालूम नहीं। मेरे नगर के कुछ लोगों का कहना है कि वह कलकत्ता की थी। कुछ लोग उन्हें दिल्ली की मानते हैं। बन्द वैसे भी लोग हैं, जो उन्हें बम्बई में जुड़ा हुआ वताते हैं। इनमें कौन-सी बात सही है, कह पाना मुश्किल है। लेकिन हा, इतना तो दावे के साथ कहा जा सकता है कि वह किसी महानगर की ही थी क्योंकि हमारे इस कस्वेनुमा शहर से उनके आचार-विचार और रहन-सहन तनिक भी मेल नहीं खाते थे। उनकी सभ्यता और संस्कृति को हमारे शहर का वातावरण पचा नहीं पाता था।

हमारे शहर में उनका आना विल्कुल आकस्मिक रूप से ही हुआ था। इसका श्रेय हमारे शहर के एक विल्कुल मस्तमौला मनमौजी टाइप के व्यक्ति को है। उस व्यक्ति ने ही सगीता बनर्जी को इस नगर की नागरिकता से जोड़ दिया था। लेकिन उस व्यक्ति ने अन्त तक सगीता बनर्जी का साथ नहीं दिया था। चद सालों के बाद ही उनसे विदा ले वह सदा के लिए रुख्सत हो गया था।

यहा जब सगीता बनर्जी की कहानी में आपको सुना रहा है, उस व्यक्ति का जिक्र करना भी मुझे बेहद जरूरी लगने लगा है। यह इसलिए भी कि मेरे नगर का वह पहला व्यक्ति था जिसने सगीता बनर्जी को पहचाना था और उन जैसी महिला को अपना जीवनसाथी बनाया था। आज मुझे लगता है कि मेरे शहर का सबसे बड़ा भाग्यशाली आदमी भी वही था, क्योंकि उसे सगीता बनर्जी की जिन्दगी को अत्यन्त करीब से देखने और परखने का भीका मिला था।

तो वह मल्होत्रा नामक व्यक्ति मेरे शहर का एक प्रोफेसर था। विल्कुल मस्तमौला और मनमौजी। वह जिन्दगी जीने के अपने तरीकों में विश्वास करना था। परिवार से उसे सन्तुष्टि नहीं थी। उसका परिवार काफी भरा-पूरा था। उसका बड़ा लड़का, जो आज इस नगर का कोई उच्च पदाधिकारी है, उस समय ही नौकरी पर लग गया था।

लड़के-लड़कियों से पहले मल्होत्रा की जिन्दगी बड़ी मजेदार थी। लेकिन घीरे-घीरे परिवार के बढ़ जाने तथा लड़के-लड़कियों के साथाने हो

के बीच मल्होत्रा कभी आडे नहीं आया था ।

मल्होत्रा वी जिन्दगी के अन्तिम दिन बहुत खुशनमीवी से गुजरे थे, ऐसा वह अपने मिश्रो से बनाता था । और इसके मूल में सगीता बनर्जी का अपनी जिन्दगी में प्रवेश ही वह मानता था । वह सगीता बनर्जी तो तहे-दिल में चाहने लगा था । उसे इस बात का गहरा दुख था कि सगीता बनर्जी जैसी महिला उमे उमकी जिन्दगी के आखिरी मुक्काम पर मिली । काश, अगर वह शुरू में ही मिल गई होती ।

जहा तक सगीता बनर्जी के रूप और सौदर्य का सवाल है, वह भी इस शहर के लिए दर्शनीय ही था । हालांकि एक युवती को जो उम्र होती है, उनकी मीमा वह निश्चित रूप से लाव चुकी थी । फिर भी इस शहर की किसी भी खूबसूरत युवती से उनका रूप और सौदर्य किसी भी मायने में कम आकर्षक नहीं था ।

सगीता बनर्जी को तब देखते ही बनता था, जब मल्होत्रा अपनी जिन्दगी के आखिरी क्षणों की अस्वस्यता भेल रहा था । तब इस नगर में कोई ऐसा डाक्टर नहीं बचा था, जिसके पास सगीता बनर्जी नहीं गई हो और उसे लेफर मल्होत्रा को दिखाने नहीं ले आई हो । सगीता बनर्जी ने इस नगर के बाहर से भी कुछ टाक्टरों को बुला कर मल्होत्रा को दिखलाया था । मल्होत्रा के लिए उन्होंने दूर दूर से दवाइया भी मगवाई थी, पर मल्होत्रा बच नहीं सका था । उनको बीच रास्ते में ही छोड़कर चला गया था । किन्तु उन्हें इस बात की खुशी थी कि मल्होत्रा को सहज मृत्यु प्राप्त हुई है, क्योंकि मरने से दो दिन पहले मल्होत्रा ने उनसे कहा था कि 'अब उसे जिन्दगी में किसी चीज की चाह नहीं । उसके मन की हर मुराद पूरी ही गई है ।'

इससे पहले एक बार मल्होत्रा को वह मृत्यु के मुह से धीच लाई थी । तब मल्होत्रा इसी तरह बीमार था और नहीं लग रहा था कि बचेगा । लेकिन अगली निष्ठा और हार्दिक सेवा के बल पर उन्होंने उसे बचा लिया था । फिर एक लम्बे समय तक मल्होत्रा उनके साथ सुख से रहा था । इस बीच मल्होत्रा बराबर ही उनसे कहा करता कि 'मेरी जिन्दगी में आकर तुमने मेरी उम्र बढ़ा दी है । काश, मैं तुम्हारी ही उम्र का

हीठा ताफि लम्बे समय तक मुझ तुम्हारा साथ मिलता !'

जिस दिन मल्होत्रा की मृत्यु हुई थी उस दिन उसके बर कई लोग थए थे। हासीकि इसके पहले उसके बर कभी कोई नहीं जाता था। वह भिक्ष अपन पटोसियों की बम्बर मही मही बस्ति पूरे शहर की जिलाई में यसत हो चका था। जब न संगीता बनवी उसकी बिलमी में आई थी उसका परिवार उससे अहव पूछा करने चका था। संघीता बनवी के भान के बाद मल्होत्रा के परिवार को किसीन कभी उपर भटकत हुए नहीं देखा था। गेकिन हाँ मल्होत्रा की मृत्यु के बाद उसका पूरा परिवार एतनी सद्दियों बढ़ते तथा उड़के सब साढ चाए थे। मल्होत्रा का बड़ा भड़का शब्द-याचा की तयारी कर रहा था।

रात्रि न चीता बनवी ! वह गुमसुम और उदास बफर थी यमर उनकी आँखों में आँसू का एक बहुर भी नहीं था। वह अस्त्र और हाथ की तरह हाथ पर हाँ रबड़र पूरबाप बढ़ा भी नहीं थी। दिना छिनो के कहे-मुने शब्द-याचा की तैयारियों में संमान थी। जाननी थी कि उसका परिवार वह यह कुछ करन भी नहीं जाता सकिन सोइ-परमोक और घर-घर भी आसोचनाओं के बर में आया है।

शब्द-याचा के साथ-साथ संगीता बनवी को से बदलने के लिए काई उपायर नहीं था। सेकिन उग्हे रोकन की लमता भी तो किसीम नहीं थी। दर-बसस काई उससे बोसता ही नहीं था। वह शब्द-याचा के साथ-साथ युपचार बम्मान तय गई। किर असय बैठकर उड़ दूस देखती रही। जब मल्होत्रा की माझ धू-धू करके जब उठी तब न बम्मान से भीट आई।

यह संगीता बनवी के में शहर में आने और मल्होत्रा के माझ रहने की चाहानी है। संघीता बनवी भी सही और अससी कहानी बब यही संप्रारम्भ हायी।

जिस संघीता बनवी ने आज मैं सही मात्र रहा हूँ उस समय मैंने भी उम्हें पूर्वत उसत भावना का। अम्मा मैं उसके स्वभ रूप में असव हट-कर उनकी भूम्म भावनाओं विचारों और भ्वापनाओं को नहीं यहुँ गहरे में उत्तरकर मैंने कभी टोकने की कोलिय नहीं की थी। मैंने कभी

यह जानना नहीं चाहा था कि पूरे शहर की जुवान में बदनाम संगीता वनर्जी नामक इन महिला के चेहरे ने ताड़गी नुस्खे क्यों नहीं होती थी ? वह क्यों शिथिल नहीं पड़ रही थीं ? नामाजिक स्तर पर सधर्परन अपनी जिदगी में वह क्यों निरन्तर वृद्धि ही करती जा रही थी ? वह कभी भी टूटी क्यों नहीं थी ? किसी भी व्यक्ति ने उन्हें, किसी भी तरह का समझौता कर लेने के मूल में क्या या ? वह क्यों मल्होत्रा के बाद किसीसे शादी करना नहीं चाहती थी ? वह सुख-सुविधाओं का रास्ता छोड़ अपनी जिदगी को जोखिम-भरे रास्तों से क्यों गुजार रही थी ?

दरबरमल, उस समय मेरे मामने इन तरह के नवाल ही पेंदा नहीं हुए थे। उनके सगमरमरी जिस्म और दूषिया हसी को लेकर इन शहर ने इतने अधिक अफसाने गढ़ दिए थे कि उन अफसानों को परे ढकेलकर कुछ सोचना ही मुश्किल था।

आज वे अफसाने वहुत पुराने और धुधले पड़ गए हैं। संगीता वनर्जी की स्थापनाओं ने लोगों को चौंधिया दिया है। प्राय हर व्यक्ति अब उन्हें न पहचान पाने का चेद प्रकट कर रहा है। इस अवमर पर, कही चहूत गहरे में जाकर मैंने संगीता वनर्जी का मूल्याकन किया है। यह जानकर कि वे पूर्णत सही थीं, मेरे अन्दर एक सुखद एहसास की अनुभूति हो रही है। माथ ही मैं इस बात के लिए आसू भी वहा रहा हूँ कि उस समय मेरी समझ इतनी दकियानूसी क्यों थी ? मैंने वहुत बड़ी भूल की है। अब मैं कभी माफ नहीं किया जाऊगा। इस एक कहानी से क्या, इस तरह की कई कहानिया लिखकर अब मुझे प्रायशिच्छत करना है। एक कहानीकार के लिए यह किन्तु अशोभनीय और हास्यास्पद बात है कि कोई महिला उसे अच्छी तरह पहचान जाती है, लेकिन समय रहते वह उसे नहीं पहचान पाता है।

मल्होत्रा की मृत्यु के बाद संगीता वनर्जी इस शहर में विल्कुल अकेली चच गई थी। उनका कोई हमदर्द, कोई ग्रिटेदार और कोई अपना नहीं था, लेकिन इसपर भी वह इस शहर को छोड़ने की स्थिति में नहीं थी। अहर की बात तो अलग, मल्होत्रा ने जिस किराये के मकान में रखा था, वह मकान भी वह नहीं छोड़ सकी थी। हालांकि मल्होत्रा वहुत अधिक

पैसा उनके नाम मही छोड़ गया था। मस्होबा इतारा छोड़े गए पैसों और खामों से वह बमुशिक्षण तीन महीना ही पुढ़र-चमर कर सकी थी। इस दीप शहर के कई प्रतिष्ठित सोगों के यहाँ जाकर उनके बच्चों को दृश्यात पढ़ाने की वात भी बे कर आई थी तथा इस शहर में अपने परिवर्य के लायरे को भी वह विस्तृत करने सकी थी।

इस तरह मस्होबा के जगत में संवीका बनजी में अपनी आजीविका की समस्या हल्ल भर सी थी। सेक्षिन यही वात मेरे छोटे और छिपाई शहर की मद्दर थी। यहाँ के सोगों में उनके द्वारा कीचड़ उछासना चुक किया। वह बिन-बिन घरों में टब्बुलन पड़ाती थी तथा वह दिन लोगों से मिलती थी उनके नामों को उनके साथ जोड़कर लोगों में उन्हें बड़ाप बरना चुक कर दिया। असल में इस शहर में बहुमत पुराने व्याळात वाले सोगों का है। वे नारी को पुरुष की भोग्या मानते हैं। नारी स्वतन्त्र होकर अपनी आजीविका और अपने व्यक्तित्व को संभाल सकती है यह वात उनके गोरे के अन्दर वहीं उत्तरती है। उनकी मास्पता है कि नारी आहे विस रूप में रहे उस पुरुष की आधिका होकर ही चीना है। संवीका बनजी में उन्हें एक ऐज झटका दिया था इसीसिए वे बीमार गए थे।

हासाफि संवीका बनजी भी मेरे लहुर की एकमात्र महिला नहीं थी वो कमाती थी। अनेक महिलाएं इस शहर के विभिन्न घेनों में तद भी रमाती थीं और अब भी कमा रही हैं। ऐकिस वे संवीका बनजी की तरह स्वतन्त्र नहीं है। किसी न दिसी पुरुष का संरक्षण और जाग्रत उन्हें प्राप्त है ही।

उन्हीं दिनों कूछ मनसे टाइप के सोबा ने संगीका बनजी से मिल कर यह कहा था कि अभी आपकी उम्र कोई दास नहीं है। अमौ तो सारी जिम्मेदारी बाली है। देखते में भी आप निकल पुरामी नहो सकती है। आपके सिंग बेक्षतर वही है कि पुनः सारी करके कायरे से दिग्धगी गुजारें।

सेक्षिन संवीका बनजी में जो जगत दिया था, उससे मेरे शहर के सोब एकहम भी अपके हो चए थे। संवीका बनजी ने बताया था कि मस्होबा में यह उनकी ओपी सारी थी। उनके अनुसार इस चार जागियों के दीप

‘शादी’ नामक रस्म की अर्थवत्ता को उन्होंने खूब गहराई से जीया और भोगा है। इसीलिए अब उन्हें शादी से सख्त एलर्जी है।

आज मुझे सगीता बनर्जी की यह वात अत्यन्त गहन और अनुभव-पूर्ण लगती है। किन्तु तब मेरे शहर के लोगों ने इसका उल्टा ही अर्थ लगा लिया था। उन्होंने यह वात प्रचारित कर दी थी कि शादी से इसे अपनी स्वतन्त्रता में अडबन महसूस होती है। यह अब शादी नहीं करेगी। मन-माने ढग से इस शहर में भ्रष्टता फैलाएगी।

लेकिन सगीता बनर्जी को इसकी कोई परवाह नहीं। वह पहले की तरह ही सड़कों पर अकड़कर चलती थी तथा कहीं भी किसी विषय पर वात करते हुए उन्मुक्त ठहाके लगाती थी। शायद यह उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी कि परेशानियों, समस्याओं और आपदाओं को वह अपने चेहरे की उदास व गमगीन रेखा नहीं बनने देती थी। साथ ही नारी सुलभ भावुकता से भी वह विल्कुल परे थी।

हमारे नगर के अफमर, राजनीतिज्ञ, साहित्यकार यानी कुल मिलाकर बुद्धिजीवी वर्ग में उनकी पैठ एक घटना के बाद हुई थी। यहाँ के प्रगति-शील समझे जाने वाले कुछ लोग एक नाटक का आयोजन कर रहे थे। उस नाटक में मुख्य भूमिका एक औरत की थी। लेकिन दुर्भाग्य कि उस तरह की औरत इस नगर में उन्हें मिल नहीं रही थी। फिर भी पता नहीं कैसे, यह वात सगीता बनर्जी के कानों में भी पढ़ी। वस, यहाँ के प्रसिद्ध रगकर्मियों से मिलकर, उन्होंने उनकी समस्या दूर कर दी। उस भूमिका के लिए वह तैयार हो गई।

उसके बाद इस शहर में अब तक कितने नाटक हुए, लेकिन जोग कहते हैं कि वैसा नाटक आज तक नहीं हुआ। उस नाटक का भचन लगातार तीन दिन तक हुआ। मिर्फ़ सगीता बनर्जी की भूमिका को देखने के लिए ही पूरा शहर उमड़ पड़ा था। यहाँ के साहित्यिक रुचि वाले ही० एम० ने एक हजार रुपये से भगीता बनर्जी को पुरस्कृत किया था। और रातो-रात ही सगीता बनर्जी इस शहर के बुद्धिजीवी वर्ग की जुबान पर चढ़ गई थी। फिर बुद्धिजीवियों का उनसे मिलने, किसी भी सास्कृतिक कार्यक्रम में उनको निमित्त करने तथा क्लबों और रेस्तराओं में उनके साथ घूमने

की प्रक्रिया बोरों पर आ गई थी।

लेकिन जसांकि होता है वही मछमी छोटी मछमी को मिशन जाती है। वह मेरे शहर की छोटी मछमी थी। उसक पीछे किसी तरह की सुरक्षात्मक अविभक्त व्यापिक मुदिषाएं नहीं थीं। इसीलिए इस शहर के दुदिलीवी वर्ग न परोक्षत प्रत्यक्षत उग्हे व्यापिक मुदिषाओं से जोड़कर उसका इस्तेमाल कुकुर किया। इसे ही लुमे लब्दों में यों बहु कि वे उग्हे खूने भये। उनकी संभमरमगी देह और दूषिया हुसी के परे उनका प्रवर और ज्वलन्त व्यक्तित्व देखा जी निशाह किसीके पास नहीं थी। लेकिन सोग कहने हैं कि इस सूट जान में भी संगीता बनर्जी तनिक भय भीत नहीं हुई थी। इस शहर में पूरी तरह बदलाव हो चुकन क बाद भी उनके छहांक गुप्त नहीं हुए थे और उनके बहरे पर मायूसी की बोई भी रेखा नहीं उमरी थी। शामल इसीलिए मेरे नवरक्षणी इस शहर को दोपी न उमझकर उग्हे ही दोपी समझते थे।

तब पता नहीं क्यों मेरी निशाह भी चौपट हो गई थी। पान और चाय की कई दुकानों पर उनके विषय में बटखारे से-सेकर बातें करते हुए मैंने भी लुक लिया था। आज मुझे सप्ताह है कि आदमी बनुमत के शीरान जीवों को देखता-सुमझता बकर है लेकिन बनुमत के बाद ही काढ़ी गहराई से उग्हे परवता है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ है।

संगीता बनर्जी से मेरा व्यक्तिगत परिवर्त 'बदला निकेतन' नामक संस्था के निर्माण के लिए उनके द्वारा बुमाई गई मीटिंग के बाद हुआ था। दरअसल एक जम्बे समय तक बदलामी और आमोजना की तब घार पर खलने के बाद संगीता बनर्जी ने इस समर में 'बदला-निकेतन' नामक एक संस्था के निर्माण की बात अपने मन में तय की थी। सकिन पठा नहीं पह योजना शुरू से ही उनके मन में भी या बाद में उठी थी? हमें तो इसकी सूचना तब मिली थी जब इस नपर में उग्हाने एक आम सभा का आयोजन किया था। सभा में प्रायः सभी सोचने-समझने तुम कायदे से विमर्शी जीत जाने जाटे थे।

सभा की वार्षिकारी जब मुहूर्ह हुई थी और 'बदला निकेतन' नामक

सस्था के लिए प्रस्ताव पारित किया गया था, तब लोगों में विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ हुई थीं। कुछ लोगों ने इसका समर्थन जरूर किया था, लेकिन अधिकाश लोग विरोध में खड़े हो गए थे। आवेदन की स्थिति में आकर तो कुछ लोगों ने मच पर सरेआम ऐलान भी किया था—‘सगीता बनर्जी वदनाम महिला है। हम इसको चन्दा नहीं देंगे। ‘अबलानिकेतन’ नामक सस्था के नाम पर यह हमें ठगने का षड्यन्त्र रखा रही है।’

मगर अन्त में सगीता बनर्जी जब मच पर बोलने लगी थी, तब जिस तरह उनकी जिन्दगी से हम कई बार आश्चर्यचकित हो गए थे, एक बार यहां फिर हम आश्चर्य में पड़ गए थे। हमने पहली दफा जाना था कि सगीता बनर्जी को हिन्दी का बहुत अच्छा ज्ञान है। साथ ही ‘महिलाओं की स्थिति’ नामक जिस विषय पर वह बोल रही थी, उस विषय की उन्हें बहुत गहरी जानकारी थी।

जब उनका भाषण खत्म हुआ था, तब तमाम लोगों के बीच सन्नाटा ला गया था। प्राय सभी विरोधी-स्वर खत्म हो गए थे। फिर भी लोग खुनकर उनका समर्थन नहीं कर रहे थे, क्योंकि सगीता बनर्जी की व्यक्तिगत जिन्दगी से उन्हें एलर्जी थी।

सभा विसर्जित होने के बाद सभी लोग अपने-अपने घर लौट गए थे। मेरे मित्र ने उसी क्षण सगीता बनर्जी से मेरा परिचय कराया था। मुझे आज भी अच्छी तरह याद है मेरा नाम सुनते ही सगीता बनर्जी चौंक गई थी, ‘अच्छा, तो आप ही हैं श्रीवास्तवजी। मैं आपसे बहुत दिनों से मिलना चाह रही हूँ। आपसे मिलकर मुझे हार्दिक खुशी हुई।’

और फिर विभिन्न पत्रिकाओं में छपी लगभग मेरी आधा दर्जन कहानियों की चर्चा उन्होंने खूब जमकर की। यहा यह कहने में मुझे तनिक भी सकोच नहीं कि मैं इस नगर से पिछले कई वर्षों से लिख रहा हूँ, लेकिन सगीता बनर्जी ही इस नगर की पहली महिला थी, जिन्होंने मेरी कहानियों के चलने मुझे सम्मानित और आदरपूण नजरों से देखा था। इसीलिए आज मेरे अन्दर यह बात दर्द बनकर उतर गई है कि वह मुझ मेरे सही सन्दर्भों में पहचान गई थी। लेकिन उनका असली

इस में उनकी विस्तृती में नहीं पाया था ।

मुझ से परिचय हो जाने के बाद वह अवधर मेरे पास आये रही थी । किन्तु मेरे पास वह सिर्फ इसकिए नहीं आती थी कि उन्हें मेरे पास आना होता था । वहिं मेरे मुहस्से में वपनी संस्था ने जिए वह वह भी अदा उगाहने आती थी मुझ से बहर मिलती थी । सहयोग के जिए वह मुझसे भी आपहु कहती थी । परन जाने क्यों वह वह भी मेरे पास आती थी मेरा अदामीकार कहीं पुस्त हो जाता था । यहाँ में उन्हें बारे मैं केवल भ्रान्तियों मेरे देहन में संडरणे जाती थी । फिर ऐरी आते उनकी अचित संघरणरक्षी देह और दूषिया हँसी पर टिक जाती थी । वह मेरी कहानियों पर मुझसे जात करती । केविन यह सब मुझे पराद मही आता । मैं विषय बदल कर उन्हें मास्ता कराने लगता तथा पाप पिलाने लगता । फिर दूसरी तरफ की जाते सुस कर देता, जो प्राप्त मैं कभी दियीसे नहीं कहता था ।

आज वह मैं इन स्थितियों का मूल्यांकन करता हूँ तब मुझ भगता है कि आज्ञाहें जाहे जितनी भूठी ही क्यों न हों, आदमी के जागने एक योटी-सी जावर तुल देती है जिसके ऊपर की दुनिया कृष्ण शशी के जिए पक्षदम बोझन हो जाती है ।

मुझे अच्छी तरह पाय है कि संवीका बनर्जी का 'अदामा-निवेदन' नामक संस्था के नाम पर कोई चला नहीं रहा था । उनकी बदलाम जिसकी से क्यायदा उठाकर सौबह इसी एवज में चला के नाम पर कुछ दे देते थे जो चला कम, उनके लूट का मूल्य ही अधिक होता था । इसीलिए तत्त्वाम ही यह वहर सक्तियों की तरह पुरे शहर में फैल रही थी कि संवीका बनर्जी अर्दे के नाम पर 'भग्ना' बरने जाती है । फिर भी संवीका बनर्जी न तो कहीं स दृटी थी और न हुताम ही हुर्इ थी । उसी जगन व निष्ठा के साथ संस्था के निष्ठिय में संलग्न रही थी ।

आज संस्था के पास अपनी जपीन, अपनी विस्तृत और आर्थिकीयी है । केविन तब संवीका बनर्जी मैं अपने किराये के दमी छोटे मकान में संस्था की स्थापना की थी । उसके डारा बुझाई तर्फ आम गमा के ओप महीने बाद ही उसके मकान के जामने 'अदामा निवेदन' की बड़ी ईप मर्द

थी। लेकिन इस तर्खी से लोगों में किसी तरह सरगर्मी पैदा नहीं हुई थी। लोगों ने समझा था कि खड़ी होकर पानी के बुलबुले की तरह विलीन हो जाने वाली इस नगर की हजारों संस्थाओं की तरह ही इसका भी हश्च होगा।

लेकिन आज मुझे लगता है कि इस संस्था की निर्माणकर्ता संगीता वनर्जी की जिदगी को न पहचान पाने के कारण ही लोगों ने ऐसा समझा था, अब जबकि वह अपनी स्थूल जिन्दगी को एकदम परे ढकेलकर, अपनी स्थापनाओं के माध्यम से सामने आ गई हैं, हर मन में उनके प्रति पाली गई गलतफहमिया दूर हो गई हैं।

संगीता वनर्जी ने अपनी संस्था की पहली वर्षगाठ पर पुन एक सभा का आयोजन किया था। उस सभा में बोलते हुए संगीता वनर्जी ने यह आकड़ा प्रस्तुत किया था कि 'इस प्रथम साल के गुभारम्भ में ही पचीस असहाय, निरुपाय और बनाथ लड़किया तथा बीस विघ्वाओं की शादी इस संस्था ने की है। साथ ही ग्यारह लावारिस, वहिष्कृत और परित्यक्ता महिलाओं को इसने आश्रय दिया है।' इस आकड़े को लोग अविश्वास-भरी निगाह से न देखें, इसके लिए संगीता वनर्जी ने उपर्युक्त सभी महिलाओं के नाम और पूर्ण पते प्रस्तुत किए थे।

अपनी आस्थापूर्ण और गम्भीर आवाज में संगीता वनर्जी ने आगे कहा था कि संस्था अपने इस आकड़े को अपनी उपलब्धि नहीं बताती है, बल्कि सिर्फ यह सूचना देती है कि उसने अपना कार्य-क्षेत्र शुरू कर दिया है। और आप जानते ही हैं कि किसी भी कार्य की शुरुआत ही सिर्फ मुश्किल होती है।

संगीता वनर्जी के इस आकड़े ने सचमुच मेरे शहर के लोगों को परिवर्तित होने के लिए वाध्य कर दिया था, क्योंकि वातें और वायदे झुठलाए जा सकते हैं, ठोस प्रमाण नहीं झुठलाए जा सकते। इस बात का एहसास मुझे आज नहीं, उनकी संस्था की पहली वर्षगाठ के दिन ही हो गया था कि उनके ऊपर से बदनामी की चादर धीरे-धीरे सरकने लगी है। लेकिन तब इसके मूल में जाकर इसके औचित्य को प्रकाश में लाने की मैंने कोशिश

नहीं की थी।

संगीता बनर्जी में पचों द्वारा अपनी संस्था के नियमों को हर जगह प्रकाशित कर दिया था। उनकी संस्था के नियम निम्नलिखित हैं-

(१) कोई भी सदकी चाहे जिस सरहद से अविकाहित रहने की विधि में था वही हो, वह इस संस्था में अपना नाम बर्द रखाए। कोई बकरी नहीं कि हर सदकी को इस संस्था में रहना ही होगा। वह अपनी मुविषानुसार वहीं भी यह सफती है। ऐसिन संस्था के हर बुनावे पर उसे आना होगा। यह संस्था बर्द भर के अन्दर उसकी बाबी की मारणी लेती है।

(२) विषवाएं, चाहे विष उभर की हों जिस समस्या से आक्रमित हों इस संस्था में पकारें या लिखें। यह संस्था उनकी इच्छानुसार उनकी शारीरिक चतुरा इसाव करेगी और उन्हें रोजगार देगी।

(३) वे लालरिष मीरते हुनिया में जिसका कोई नहीं है, समाज ने जिन्हें दुकरा दिया है, पति और परिवार ने जिन्हें भगा दिया है वे इस संस्था में आएं। यह संस्था उनकी बाट जोह रही है। उनकी समझते हुए यह संस्था उन्हें उचित रास्ता देगी ऐसा इस संस्था में संकल्प लिया है।

(४) यह संस्था जाति और धर्म ही नहीं बल्कि कड़ियों और संस्कारों को भी दुकरा दूँही है। इस संस्था में आने से पहले हर महिला को इनसे मुक्त हो जाता है।

(५) यह संस्था जामी और जिसी समय अन्दर नहीं रहती है। रात दिन आपकी सेवा में कर्तव्यरूप है। आप जब चाहें पकारें। इस संस्था में आपका स्वामत है।

संगीता बनर्जी अपनी संस्था के इन नियमों की सफलता के लिए बहुत खुश करती थी। संस्था के अन्दर उन्होंने छोटे-मोटे कई उद्योग पूर्ख कर दिए थे। इसी संस्था में पहली बार इस शहर में हाव के बुने स्टेटर बेचने शुरू किया थे। साथ ही प्राहर्कों की प्रमाण के अनुसार इस संस्था में विभिन्न तरह के स्टेटर की बुनाई तथा कपड़ों की बिकाई शुरू हो चर्दी थी।

इस संस्था की महिलाओं को उनकी मनपसंद शिक्षा भी दी जाने लगी थी। इस संस्था की कुछ पढ़ी-निखी महिलाओं ने टाइप का प्रशिक्षण ले लिया था। संस्था ने उनके लिए कुछ टाइपराइटर खरीद लिए थे। इनसे संस्था को अच्छी आमदनी होने लगी थी। अक्सर हिन्दी और अंग्रेजी के अच्छे टाइप के लिए लोग इस संस्था में पधारते थे और आज भी पधारते हैं। यहाँ इस बात का जिक्र भी वेहद जरूरी हो गया है कि इस संस्था के अन्दर किसी भी पुरुष के प्रवेश की सख्त मनाही थी और है। मुख्य द्वार के पास ही अनेक खिड़कियाँ हैं, जहाँ से ग्राहकों ने निपट लिया जाता है।

संगीता वनर्जी अपनी संस्था की विवाहेच्छुक महिलाओं के नाम, उम्र और योग्यता का विज्ञापन अखबारों में प्राय हर महीने ही देती थीं। वह मिर्फ स्थानीय अखबारों में ही नहीं, बल्कि इस देश के कई प्रमुख अखबारों में यह विज्ञापन देती थी। फिर जिस तरह मल्होत्रा के विज्ञापन पर वह इस शहर में आई थी, उसी तरह इन महिलाओं के विज्ञापन पर अनेक पुरुष अभ्यार्थी आवेदन-पत्र देते थे। संगीता वनर्जी आवेदनकर्ताओं को अच्छी तरह परखकर, उन्हें साक्षात्कार के लिए बुलाती थी और कानूनी तरीके से अपनी संस्था की महिलाओं की शादी उनसे करती थी।

आज जब मैं संगीता वनर्जी की इस संस्था की उत्तरोत्तर लोकप्रियता के प्रारणों पर विचार करता हूँ, तो मुझे लगता है कि वदनते युग-बोध ने अनेक जीवन-मूल्यों को बदल दिया है, जिसने बहुत हद तक आदमी अपनी पूर्वापर स्थितियों में भी बद्धी हो गया है। मेरा रुचाल है कि जागरूक युवा वर्ग की यह समझ हो गई है कि दहेज और जाति पाति के बघनों को ठकराकर शादी करें। लेकिन एक सवाल भी इसके साथ ही है कि आखिर वे शादी करें तो कहा करें? क्या कोई लड़का यो ही किसी लड़की के सामने प्रस्ताव रख दे? नहीं। क्योंकि कोई जरूरी नहीं कि वह लड़की उस लड़के से महमत होगी। इसी तरह उपर्युक्त विचारों वाली विस्तीर्ण लड़की का किसी लड़के के सामने प्रस्ताव रखना भी बेक़ूफी है, क्योंकि लड़के की समझ लड़की की समझ से मेन खागड़ी, इसकी बोई गा पटी नहीं। लड़के लड़की समान नमझ के हैं यह जानकारी हासिल करता

बहुत बड़ाना काम है। और वह तक पह जाना चाहिए इसमें नहीं होती है, स्क्रिप्ट शारी की कल्पना ही देखार है। सेहित संगीता बनवाई ने इसकी कल्पना को भूतं फू दे दिया है। उसकी संस्था इस काम का माध्यम बन चौ है। ऐसे समान समझ के महिला-मुख्य ही उनकी संस्था में जाते हैं। जिनका एक-दूसरे के प्रति समर्पित हो जाना अनिवार्य ही है। जायद मही बारण है कि यह संस्था सोशलियता की आविरो दबाई को छूने जा रही है।

संगीता बनवाई इस संस्था की महिलाओं की एक छोटी-सी दुकाई का नेकर, इस संस्था के लिए उन्होंने उपाय इसका प्रचार करने इस घटहर से बाहर के गाहरों कल्पनों तक गई हैं भी जाती थी। इस जम में उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली थी। उनके बार भी यह परम्परा कायम है।

इस संस्था की हर बर्पयाठ पहली बर्पयाठ से अधिक बूमियत के साथ मजाई जानी थी। और ताजमुद यह कि हर बर्पयाठ के बाद संगीता बनवाई की बदमास बिल्डिंग मोर्ऱों के दिलो-दिमाण और जूदाम सुनारी जाती थी। जायद संस्था के बकाबून से ही ऐसा हो रहा था, बर्पयाठ मुझे अच्छी तरह याद है उनकी संस्था की घाराहरी बर्पयाठ तक उनकी पूर्वापर बिल्डिंग प्रायः मोर्ऱों के दिमाप से नूप हो जाती थी।

संगीता बनवाई के अन्तिम दिन बहुत आराम से युजरे थे। इसके लिए मुझ हाँदिक लुप्त है। सेहित इसके भूत में इसा भाटिया का उनके बीचन थे जाना ही है। इसा भाटिया के भागे से पहले यह इस बात के लिए चिन्तित रहती थी कि उनके बाद उनकी संस्था दूट-बिकार जाएवी। सेहित इसा भाटिया के आ जाने से उन्हें आर्थिक सत्तोप मिला था। अपने जीवन छास में ही यह इसा भाटिया की कार्य-कुसलता और इस संस्था के प्रति उनकी आर्थिक उम्मदता को काफी पहराई स जाथ-परज चुरी थी।

इसा भाटिया एक ऐसी महिला है जिनकी बो बार शारी इस संस्था में की थी। लेहित उनके बोरों पठि बुरामिय से आकस्मिक मुख्य को प्राप्त हो गए थे। बंगीता बनवाई ने उनकी तीसरी जाही करनी चाही थी लेहित

इला भाटिया ने अस्वीकार कर दिया था। तब से इला भाटिया इस स्थान को पूर्णतः समर्पित हो गई है। वह काफी पढ़ी-लिखी तथा सुलझे विचारों वाली हैं। सगीता बनर्जी की तरह उनका व्यक्तित्व व्यापक और बहुमुखी तो नहीं है किर भी किसी न किसी रूप में सगीता बनर्जी की प्रखरता को वह पा गई हैं, जो उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है।

सगीता बनर्जी की इस मशहूर स्थान की पच्चीसवीं वर्षगांठ समारोह से मैं अभी-अभी लौटा हूँ। सचमुच इस बार आयोजन व्यापक और भव्य था। सगीता बनर्जी की मूर्ति अनावृत्त करने के लिए इस देश के एक महान साहित्यकार को बुलाया गया था। साथ ही इस नगर के बाहर के नगरों, कस्बों और गांवों से दर्शक के रूप में असंख्य लोग आए थे। इस स्थान को प्रकाश में लाने के लिए स्थानीय तथा बाहर के प्रमुख अतिथियों ने अपना अपना भाषण भी दिया था।

लेकिन इला भाटिया के आग्रह करने पर भी मैं कुछ नहीं कह सका था, क्योंकि सगीता बनर्जी की प्रतिमा अनावृत्त हो जाने के बाद मैं होश-हवास खो चूंठा था। वही ताजगी वही रीनक मुस्कराती हुई वही आँखें चेहरे का वही अन्दाजे-व्यथा! नहीं, यह सब कुछ मुझमें और नहीं सहा जाएगा...।

और मैं सभा विसर्जित होने से पहले ही चूपके से वहां से गिरसक गया था। किन्तु उनकी आँखें दूर तक मेरा पीछा करती रही थीं। साथ ही कानों में माड़क पर गरजती इला भाटिया की आवाज गूंज रही थी, “हर्ष के साथ यह स्थान आपको सूचित कर रही है कि इस नगर के बाहर के कई नगरों में इनी माल से यह अपनी शाक्ताएं खोलने जा रही हैं। पूरे देश में यह अपने को पसार दे, यही इसका दायित्व है। सगीता बनर्जी ने इस दायित्व को मद्देनजर रखते हुए इस स्थान की स्थापना की थी। अब जबकि वह नहीं हैं, उनके मपने को हमें साकार बनाना है।”

मैं तेज-तेज कदम बढ़ाते हुए अपने घर की ओर चल पड़ा था। लेकिन यहा आँखें भी मुझे शाति नहीं हैं। सगीता बनर्जी की बड़ी-बड़ी खुली

मांडो ने मुझ अन्दर से ऐसा दिया है। मैं भीतर ही भीतर खुट रहा हूँ।
सप रहा है, जैसे चौरी करते हुए सरेकाम पकड़ लिया गया हूँ। काय
इस सहर के तमाम सोरों की तरह मैं भी अतीत को भूम छुड़ा होता ।

लेकिन महीं मेरे माथ ऐसा नहीं हुआ। शाबद मह मेरे माम्प की
विद्वना भी कि मुझे अपनी दूल के सिए अन्दर ही अन्दर छुट्टा था।
जैर सुना है पहली स्त्रीकार सेमे तथा अपनी व्यथा दूधरों से कह देने
कि आदमी हृष्णा हो चाहा है। तो सुनिए, संगीता उनकी को उनकी संस्था
के सिए, जाहे विस तरह का सहयोग और मदद मैंने उन्हें दिया था, वह
उनकी संस्था के नाम पर नहीं बल्कि उनके नारी-तन के कारण जिसके
लिए आज मुझ गहरा दृष्ट है। लेकिन यह दृष्ट उन्हें इसकिए नहीं है कि
मैं उनका निष्टितम बना बल्कि इसकिए कि तब मैं उन्हें पहचान नहीं
पाया था ।

नरेश वहू

आज अपने बोब की एक अजीब औरत से मैं आपका परिचय करा रहा हूँ। उसका अपना नाम क्या है मुझ मामूल नहीं। बोब का दिया हुआ उसका नाम नरेण वहू है। वह भर यांड में स तो किसी के बर जमी वी और स ही पठोहू के रूप में ही उसका आवमन हुआ था खलिक आज से पछीस दाल पहसु बयन बासे याब से भायकर वह मेरे बोब जाई थी और तब स आज तक वह निरंतर मेरे गांव ही रहती था रही है।

मेरे गांव से बाहर चूक के किसारे जामुन का एक बहुत ही प्रभाव वृक्ष है। उसी वृक्ष के नीचे वह सारा दिन बैठती रहती है। वहाँ दौड़कर बाहर से बोब आने वासे सोगों को वह चुपचाप निनिमेय दृष्टि से पूरती रहती है। फिर जब शाम यहरान की हुती है, किसीके आगे वी सुंभावना दरम हो जाती है, तब वह बोब लौट जाती है।

पूर्ण-सुरु में गांव के सोगों को उसका इस तरह बैठना थीक नहीं था। कई सोगों ने उसे टोका था। कुछ सोगों ने हांट भी लगाई थी। ऐसिन उसने किसीकी एक म गुनी। मुझह साम अपन कामो से निवट वह ऐव उस जामुन वृक्ष के नीचे था बैठती। फिर एकटक बोब आने वासे राहगीरों को देखती रहती उसका भूमा बैठना और राहगीरों को एकटक रेखना तब से आज तक निरंतर थारी है।

वह बीरेन्वीरे गांव क बोब डस पागम लमझन समेहै। बदसर उसके

वारे में वातचीत करते हुए वे उमे पागल सज्जा से ही अभिहित करने लगे हैं। लेकिन यही वात मुझे अखरने लगी है, क्योंकि पागलो की तरह की कोई भी हरकत वह नहीं करती है। पागलो की तरह का कोई भी व्यवहार उसमें किमीने आज तक नहीं देखा है। फिर उमे पागल कहना, उसके प्रति सरामर अन्याय नहीं तो और क्या है?

मुझे लगता है, मेरी तरह गाव के प्राय सभी लोग यह जानते हैं कि जामुन वृक्ष के नीचे बैठकर वह किसकी प्रतीक्षा किया करती है? लेकिन जानवृक्षकर भी लोग अनजान बनने की कोशिश करते हैं। अपनी इस कोशिश में उस प्रतीक्षा किए जाने वाले व्यक्ति को इस गाव से विलक्षण भूला देने की एक चतुर साजिश मेरे गांववाले काफी समय से करते आ रहे हैं। पर मेरे साथ सच्चाई यह है कि चाहकर भी मैं उसे भूल नहीं पा रहा हूँ। इसलिए समय रहते ही सीधे, सच्चे शब्दों से आपको मैं यह बता देना चाहता हूँ कि वह पागल है या क्या है और जामुन वृक्ष के नीचे बैठकर वह किसकी प्रतीक्षा किया करती है?

वात बहुत पुरानी है। एक दिन मेरे गाव का एक युवक बीरु अपने खेतों में हल जोत रहा था। वह समय गमियों के मौसम का था। जेठ की चिलचिलाती दोपहरी थी और बीरु तेजी के साथ हल जोते जा रहा था। आपाढ़ की पहली बरखा से पहले ही बीरु अपने समूचे खेत को जोत देना चाहता था। इसीलिए पूरी शक्ति और पूरे मन के साथ वह जूट गया। पर मौसम अनुकूल नहीं था। फलत शीघ्र ही वह थक गया। फिर रोज की भाति कुछ क्षण आराम करने के लिए सड़क के किनारे वाले महुआ गाछ के नीचे आ बैठा।

अभी मुश्किल से उसको बैठे हुए दस-पद्रह मिनट भी नहीं हुए थे कि अचानक मटक से हाफती हुई एक जवान औरत वहा आई। वह औरत बीरु के लिए विलकुल अपरिचित थी। फिर भी वेश-मूपा और रग-छग से बीरु को साफ लग गया कि वह घर-परिवार के अदर की पर्दे के भीतर रहने वाली वहाँरिया है।

बीरु के करीब आते ही वह भय और घबराहट के स्वर में रोते हुए

बोनी "मैं पा मुझ बचा भो। के पकड़ सेवि तो मुझे बिदा जसा दामेंगे। उनके साथ यद एक मिनट भी मैं भही रहूँगी बगर मैं जानती तो गाही स पहुँचे ही बहर द्या सिपा होता।

बीक ने मुहकर देखा। सचमुच उस भीरत को पकड़न के लिए तुछ सोग बहुत तेजी से आ रहे थे। इससे पहले कि बीक उस भीरत से छुछ पूछता वे सोय भी आ गए। उनकी संखा तीन थी। उनमें से एक ने तेजी से आये बहकर उस भीरत के बास पकड़ लिए। फिर कसकर उसके चेहरे पर एक तमाचा लगाया। इसके बाद उसे तीव्रते हुए से उस पड़ा 'हरामबाई' भायकर रही जाएपी इच्छत बिगाड़ने पर ही तुम्ही है परम तुम्हे इस बार काटकर भाष्यन में पाइ मही दिया तो मेरा नाम नहीं नहीं।"

अब तक बीक हतप्रथ लहा पूर्णाप देखता रहा। उस तो जैस काठ मार गया हो। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या हो। लेकिन अब उस पुरुष के साथ बसीटरी ही ही भीरत ने एक बार किर पकड़कर उसे देखा भीर अपनी रक्षा के लिए गिरगिराई गैया मुझे बचा भो मैं बिदगी भर तुम्हें पाइ रखूँगी ये फसाई इस बार मुझ बिदा नहीं छोड़ूँगे।" तब बीक की सारी किलहीप्प बिमूँहता जरम हो गई। उसका पुरुष जान गया। वह सिंह की माति तेजी से जपका और एक ही घटके में उस भीरत को उस पुरुष के चंपूल से मृत्यु कर दिया। अब उस पुरुष के सामने बीक था। भीरत उसके पीछे हो गई थी।

"तुम इसे रोकने आसे कीम हो? उस पुरुष ने परजठ हुआ बीक से पूछा।

"भीर तुम इसे बसात् से जाने आसे कोन हो?" बीक का जवाब भी एक परजठ हुआ सबास बन गया।

"मैं इसका पति हूँ। यह मेरी पत्नी है। उस पुरुष में चिम्पाकर अपने अविकार से बीक को बालिक कराया।

"लेकिन पत्नी का अर्ध भड़-बढ़गी नहीं होता है।" बीक ने सचे हुए लहजे में जवाब दिया।

"बालिक तुम कहना क्या आहुते हो?" वह पुरुष किर बरमा।

‘मेरे कहने का मतलब यह कि अब यह तुम्हारी पत्नी नहीं है। जब तक तुमसे निभ भकी, ठीक था। अब यह तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहती है।’

“और यह फैनला करने वाले तुम हो?”

“नहीं, मैं फैनला करने वाला नहीं हूँ। किंतु एक अवला की रक्षा करने में चूंगा भी नहीं।”

“तुम गुड़े हो। शोहदे हो किसी की इज्जत बर्वाद करने पर तुले हो।”

“गालिया मत वको बरना जवान खीच लूँगा।”

“तू मुझे धमकी देता है...हट जा मेरे सामने से।” उस पुरुष ने बीरु को धक्का लगाया।

“तेरी ये मजाल!” बीरु दहाड़ उठा, “मैं तेरा खून पी जाऊँगा।” और बीरु ने अपने मजबून हाथों से उस पुरुष का गला पकड़ लिया। उसके नाय के दोनों व्यक्ति जिनमें से एक मरियल बूढ़ा था और एक गोंगी लगनेवाला दुबला-पतला युवक, अपने गाव की ओर भाग चले। इवर आम-पडीम के खेतों में काम करने वाले किसान हल्ला-गुल्ला सुनकर जूटने लगे। बीरु के खेत मेरे गाव से काफी नजदीक हैं और उस पुरुष का गाव भी वहाँ से करीब ही पड़ता है। इसीलिए बहुत जल्द ही दोनों गावों में सनसनी की तगड़ यह खबर फैल गई। फिर दोनों गांवों के लोग वहाँ तेजी से जूटने लगे। देखते-देखते कुछ क्षणों में ही वहाँ लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। फिर वातो-वानों में ही लोग तैश में आ गए। सवाल बीरु और उस पुरुष के भागड़े का नहीं रहा। मवाल एक गाव से दूसरे गाव का मोर्चा लेने का हो गया। उस पुरुष के गाव के युवकों ने ऐलान किया, ‘यह औरत हमारे गाव की वहूँ है। हमारे गाव की इज्जत है। हम इसे किसी भी मूरत में अपने गाव ले जाएंगे।’

मेरे गाव के युवकों ने जगाव दिया, “यह औरत चाहे किसी भी गाव की क्यों न हो जब यह जाना चाहती है तब आप इसे ले जा सकते हैं, बरना इसे जबरन हम कभी नहीं ले जाने देंगे।”

“शरणागतानाम् रक्षा परमो धर्मं”—मेरे गाव के एक पडितजी ने

इस लोक का उच्चारण भी कर दिया । वह फिर क्या बोलने और के बुझ अपने-अपने पांच की जान रखने के लिए चिर पर वफ़ा बोहर चाहते था गए । आसे और गड़ासे दोनों और से बमङ रठे । कई बूँदें भी कंबों पर आ पहुँचे । इससे पहले हि लून का दरिया बहुत दोनों ओर के बुजुर्ग युवकों को पीछे छकेसकर भीष में आ गया । वर्षोंकि मेरे पांच और उस पुरुष के नाम के काफी सोय एक-दूसरे के परिचित ते दोनों यादों में काफी पटती भी थी इसीलिए बुजुर्ग दोनों गांवों के बीच दून-खराबी होने देना नहीं चाहते थे । मेरे पांच के बुजुर्ग काफी अनुनय-दिनय और मुमायम स्वर में उस पुरुष के नाम के बुजुर्गों से बोसे 'आप सोग इस बीरत को से आ सकते हैं । यह औरत आपके नाम की ही इष्टवत है' इन शब्दों का हमारा कोई अधिकार नहीं है । लेकिन यह एक मानवीय विवाही है, इसीलिए हम ज़बर पह जानका चाहेंगे कि इष्टवत से कोई विवाही बड़ी होती है या छोटी ?

हमारे गांव के बुजुर्गों के इस समाज पर उस पुरुष के पांच के बुजुर्ग एकदम निरुत्तरित हो गए । किर देर तक सहानुभूतिपूर्ण और आपसी समझौते की बातें दोनों और से चलती रही । अंततः उस बीरत को छोड़ कर ही उस गांव के लोगों को लौटना पड़ा । वह बीरत हमारे पांच आ पहुँचे । उस बीरत का पुरुष हार जाया था । दरबरत उसके आतक और मममामी की चरम सीमा बो आ रही थी । और बीर भीठ गया था । असत में उसकी जड़ाई बमास्कार और घोपण के विसाफ बो थी । मानवीय हक के लिए बमास्कार और घोपण के विसाफ जड़ी जाने वाली जड़ाई की तो जीत होती है न ?

हाँ तो उस दिन बीर के लेत के पास से खाम को मब्रमा हुठा । खाम यहराने के बाद मेरे पांच के लोग जापस भीठे । उनके लेहरे पर हर्ष और उसमाप्त की रेखाएँ थीं । पर्व से दे सीमा फुमाए हुए थे । वे बसाए और खोपण के विसाफ जड़ी जाने वाली जड़ाई में एक बीरत को जीतकर लैंग आए थे ।

पांच में बुसले के बाद हर जर की विहिनियों और धरवाड़ों पर

आ जुटी थी। देर सारी औरतें तो गलियों में भी उतर गई थीं। दरअसल वे उस औरत को अच्छी तरह देख लेना चाहती थीं, जिसके कारण दो गावों के बीच खून का दरिया बहने वाला था।

शाम के गहराते अवधेरे में उस औरत को राम बुझावनसिंह के दालान पर ले जाया गया। राम बुझावनसिंह मेरे गाव के सबसे ऊची पगड़ी के व्यक्ति हैं। सारा गाव उनकी इज्जत करता है। सरकार द्वारा जर्मीदारी छीन लिए जाने के बाद भी अभी उनके पास इतने खेत और इतनी जायदाद है कि समूचे गाव के ऊपर उनका रोबदाव पूर्वत बना हुआ है। गाव में किसी भी तरह की वारदात होती है या कोई भी समस्या सामने आती है, राम बुझावनसिंह के दालान पर ही उसका फैसला होता है।

राम बुझावनसिंह के सामने उस औरत को पेश किया गया। अब तक हर फैसले की भाँति इस बार भी गाव के लोगों का जमघट वहां लग चुका था। औरतें, बच्चे, बड़े, बूढ़े सभी राम बुझावनसिंह के दालान पर जुट गए थे। मसनद के सहारे आराम से बैठे राम बुझावनसिंह कुछ क्षण तक उस औरत को देखते रहे। फिर उन्होंने अपना पहला सवाल उछाल दिया, “तुम अपने पति के घर से क्यों भागी हो?”

उसने कोई जवाब नहीं दिया। माथा झुकाए वह चुपचाप खड़ी रही। भीड़ पूरी तरह खामोश हो गई थी। असल में, राम बुझावनसिंह को ही नहीं, बल्कि सारे गांव के लोगों को इस सवाल का उत्तर चाहिए था। सभी यह जानने के लिए व्यग्र थे कि आखिर वह क्यों भागी है।

राम बुझावनसिंह पुन बोल पड़े, “क्यों, चुप क्यों हो? ढर रही हो?

अब तुम्हें कोई नहीं तकलीफ देगा अब तुम स्वतंत्र हो। लेकिन यह तो बताओ, आखिर क्यों भागी हो, कहा जाओगी?”

इस बार भी वह कुछ नहीं बोली। चुपचाप पूर्वत खड़ी रही। लेकिन लग रहा था जैसे अन्दर ही अन्दर छटपटा रही थी। इधर भीड़ भी बैचैन थी। सास रोके लोग उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

राम बुझावनसिंह फिर बोल पड़े। इस बार उन्होंने अपना सवाल बदल दिया था, “अच्छा, यह बताओ, किस गाव की बेटी हो? तुम्हारे बाप का नाम क्या है? क्या तुमको तुम्हारे गाव पहुंचवा दिया जाए?”

“इस सकाल को मुनते ही वह फ़फ़कर रो पड़ी। फिर रोते हुए ही बोली ‘आज्‌ साहू भवर मा-चाप ही होते तब फिर मेरी यह हासिल कर्मी म होती।’”

“कर्मी बया हुआ तुम्हारे मी-चाप को।”

“वे धर्वन में ही मुझे छोड़कर इस दुनिया से जासे बए।

“फिर तुम्हारी खाई किसने की?

“चापा चार्ची है। उन जीर्णों में ही मेरी खाई की। खाई के बाद इहेव में उन्होंने काफी सामान देसा मंजूर किया था लेकिन मारी हो जाने पर उन्होंने कुछ भी नहीं दिया। उस इसीके अन्ते मेरे समुदाय वासे मुम्रत मफ़रत करते हैं। आजिर मेहर फ़सूर ही क्या है। मैं क्या कर सकती हूँ मेरी सास मुझे रो। पिट्ठी है। मेरा पति रोब साम को खाक पीछर आता है और अपनी मां के कहे अनुचार मुझे दो चार हाथ कसकर लगाता है। मेरी मुझ मार-मारकर ही उहेव न मिलने का मुस्ता उठार रहे हैं।”

“उब तुम अपने चापा-चार्ची को क्या

“मैंने बाबर की बी पर उन्होंने कोई एक बार बहार नहीं दी। लेकिन उनकी अपन देश मुम्बलांगत में एक बद भी उन्हे गूरबन चसी बाएगी। भाषकर आई है लोट वा और भवूरल में पुनः समुदाय है। एक मिनट भी समुदाय नहीं यहां चाहती जीव में जीवन दिला लूँगी। किन्तु यह बहो दिला ही जा जाना चाहती है। मेरा पति अवहार करता है।” उस औरत ने भी कुम्भवनसिंह के सामने कर दी थी। जीव छारी पीठ जर्मर्यों से भरी थी। उसकी पीं छात और उसके पति के बरयाचार की जीव

राम कुम्भवनसिंह ने ऐसान किए—“
तुम्हें लोई दौम महों करेमा। इन्हे दौम ने

लीफ नहीं उठानी पड़ेगी । इस गाव में तुम कही भी रह सकती हो । आज मेरे घर जाकर सोओ । कल सुवह जहा इच्छा हो, रहना ।" इसके बाद सभा खत्म हो गई । राम चुदावनसिंह ने नौकर को इशारा दिया । राम चुम्भावनसिंह का नौकर उस औरत को लेकर हवेली के अदर चला गया । अब भीड़ विखरने लगी । लोग टुकड़ो-टुकड़ो में बटकर अपने-अपने घर की ओर चल पड़े । फिर हर घर के आसपास वाली बैठकें गर्म हो गई ।

बक्सर रात के नौ बजते-बजते सभी बैठकें खत्म हो जाती थीं । लेकिन उस दिन रात के बारह-एक बजने के बाद भी लोग बैठकों से उठना नहीं चाहते थे । असल में, गाव की बैठकों के लिए लोगों को खूब जवरदस्त मसाला मिल गया था । कुछ लोग अपने गाव की शक्ति और एकता की तारीफ कर रहे थे । कुछ लोग उस औरत के साहस का गुण-गान करने में जुटे थे । कुछ बैसे लोग भी थे, जो उस औरत की जवानी और भावी सबध की कल्पना व्यक्त कर रहे थे । कुछ लोग उसके भागने का मूल्याकान करने लगे थे । अधिकाश लोगों के अनुसार उसका भागना सही ही सावित होता था, लेकिन अपवादस्वरूप कुछ बैसे लोग भी थे, जो उसके भागने को गलत करार दे रहे थे । इसी तरह बातें उस औरत और गाव की उस अविस्मरणीय घटना के इर्द-गिर्द ही चक्कर काट रही थीं । फिर पता नहीं कव, अपने-आप बातें बीरू के ऊपर केन्द्रित हो गईं । दरअसल, उस औरत की तरह ही उस घटना में बीरू की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी । लेकिन क्योंकि बीरू मेरे गाव का था, इसीलिए मेरे गाव-वासी शुरू में उस औरत के ऊपर ही केन्द्रित रहे । किंतु धीरे-धीरे घटना-अम के अनुसार वे स्वतं बीरू के ऊपर लौट आए । और फिर इस तरह लौटे कि हर बैठक की चर्चा का विषय बीरू ही गया, हर होठों पर बीरू का नाम उभर आया ।

बीरू ! मेरे गाव का एक सघर्षशील और कर्मठ युवक । बीरू ! जिसने जिदगी में कभी समझीता करना नहीं जाना । बीरू ! जिसके सामने निरतर कठिनाइया खड़ी होती गईं और वह कठिनाइयों को रोंदता गया । बीरू ! जिसन गाव और वहाँ के लोगों के हक्क में कोई भी गलत काम नहीं किया । उस बीरू को गाव ने क्या दिया, मुझसे मत पूछिए । मुझे चिंता

है, वही बीर की उसकी कहानी भी मैं कह पाऊँगा या नहीं ? मैं सुन और से किस रूप में चुना चा और मरी चया भूमिका भी यह भी आप मत सुनिए। हृष्णवा इस बार इस बात के लिए मुझे माफ कर दीजिए कि मैंनी कृष्ण जैसे कहानियों की भाँति इस कहानी में मैं अपनी भूमिका आपको नहीं बता पाऊँगा ।

हाँ तो बीर का पूरा नाम खोखेकुमार निह था । लेकिन सारा भौव उसे बीर-बीर ही कहता था । उसके पिता मेरे योव के एक विमल निरगम किस्म के व्यक्ति थे । उनके पास काफी पुस्तकी जमीन और जाय थाई थी । लेकिन अपनी जमीन और जायदाद को संचित करके रखना उपरा कायदे से उसका इस्तेमाल करना बेनही बालते थे । अप्रत्यक्ष ये बालते थे तो कैसे ? अपने जून और पसीने की कमाई ही को तो भान्डी संचित करके रखना उपरा तथा तरीके से उसका इस्तेमाल करना बान पाता है । पुस्तकी जगह-जमीन और विरामत में गिर्मी जायदाद की परिणति तो भौव में ही लट्ठम हो जाना होता है । और इमीलिए बीर के पिता के साथ भी ऐसा ही हुआ । वे बीर-भूमिया से तटस्थ एक जंदे समय तक मोय मैं दूरे रहे । अपनी पुस्तकी जगह जमीन और विरामत भी जायदाद को वे दोनों हाथों से लूटाते रहे ।

तब उनके पास चमचों की एक ब्यापार भीड़ थी । उनकी एह आवाज पर योव के कही चमचे उनके सामने हांकिर ही बाटे थे । योव में उनका रोड-जाव भी कायम हो चमा था । योवा भाव और खोजा-मसाई के लिए उनकी दैठक चर्चनीय बन रही थी । लेकिन सुनते हैं, भोगवाद की आँखें अंधी होती हैं । जायद इमीलिए बीर के पिता भी अंधे ही बए थे । यह उनके अंधेपन का ही सबूत है कि धाराव का अनियन्त्रित और उन्हें भवा चा और इसके की जामी-गिरामी बेस्पाई उनके सामने विरक्ते रही थी । फिर क्या था ? वे शीघ्र ही लूट गए थे । वैसाकि इतिहास बताता है, इस क्षम में बड़े-बड़े महाराजा लूट यद है । फिर बीर के पिता की भीकात ही क्या थी ?

और उनका मूटा जाना चाहें तरफ से हुआ । दो-चार बीच घेत मोइ कर धारा धन-दीसत बरम हो चमा था । इस बीच पत्ती भी उनको छोड़

कर स्वर्ग मिथार चुकी थी। उनकी पत्नी एक लड़े समय से बीमार रहती आ रही थी, लेकिन पत्नी के इलाज में उन्होंने कोई रुचि नहीं ली थी। शायद यह बताने की ज़रूरत नहीं कि भोगवाद का पहला लक्षण सबधों में दरार पड़ना होता है। वे भोगवाद में लीन होकर पत्नी में बिलकुल विमुख हो गए थे और रोग-शैया पर पड़ी पत्नी ने कराह-कराहकर दम तोड़ दिया था।

पत्नी की मृत्यु के बाद उनके चमचों ने उनके लिए कहीं ने एक दद-चलन औरत लाई थी। वह औरत पेशेवर जिस्मवाज थी। उसको लेकर मेरे गाव में हजारों कहानिया प्रसिद्ध हैं लेकिन स्थानाभाव के कारण यहाँ किसी भी कहानी का जिक्र मैं नहीं करूँगा। बस, आप सिर्फ इतना ही जान लें कि बीरु का जन्म उसी औरत की कोख से हुआ था।

बीरु को एक साल का छोड़कर ही वह औरत गाव के एक जुआरी के साथ भाग गई थी। फिर तब से बाज तक वह गाव कभी नहीं लौटी। काफी समय बाद वह जुआरी लौटा था। तब वह बिलकुल अपाहिज हो गया था। उस औरत ने उसे बिलकुल बर्बाद करके छोड़ा था। कभी-कभी उस औरत को लकर मैं बहुत परेशान हो जाता हूँ कि आखिर उसको किसने बर्बाद किया था, जिसका बदला चुकाने के लिए वह कई-कई लोगों को बर्बाद कर रही थी। खैर 'यहा छाड़िए, यहा उसकी चर्चा अप्राप्तिक होगी। किसी दूसरी कहानी में मैं उससे आपको मिलाऊगा।

हा, तो बीरु का लालन-पालन उसके मस्तमौजी किस्म के पिता ने ही किया था। लेकिन तब उसके पिता की सारी मस्ती उत्तर चुकी थी। एक द्वास समय के भीतर ही उनका सब बुछ लूट चुका था। अभावों ने उनकी जिंदगी की गाढ़ी को पूरी तरह ज़कड़ लिया था। उनके पास फटकनेवाले चमचे अब उनसे बिलकुल दूर हट गए थे। अब वे उन्हें देखना भी नहीं चाहते थे। भोगवाद के कारण उनके शरीर द्वी शिथिल हुई इदिया भी रोगप्रस्त होने लगी थी। किसी तरह अपने शेष वचे दो-चार बीघे खेत से वे अपना पेट भर रहे थे और बीरु के बचपन को किशोरावस्था की ओर बढ़ा रहे थे।

गांध क बहून्हुर्व बताते हैं कि बीक के पिता के अंतिम दिन बहुत उत्सुक थे। वे कृष्ण भवि भयानक और अमाघ श्रीमारियों से "स कदर प्रसिद्ध हो गए थे कि बोई उनके पास एक दाढ़ पड़ा होना भी स्वीकार नहीं कर पाता था। लेकिन यह उनका मीमांगश था कि ऐन मोरे पर बीक बबपन को सांपहर किंगोराबस्था में जा गया था। फिर उनकी मैथा-टहस होने भवी थी। बीक रात दिन उनकी सबा में समा रहता। उन्हें घाट से उठाना-बैठाना लिचाना-पिलाना सब कुछ बीक करता।

सुनने में आता है कि बीक के पिता ने अपनी बिहवी के अंतिम दिनों में इस बात के लिए डेर-सारा पश्चात्ताप किया था और दर भारे जानु गहाए थे कि बीक के लिए उन्होंने कुछ भी नहीं किया। मरते वक्त उन्होंने अपने दोष वज्र बोक के माम कर दिए थे। लेकिन इससे उन्हें तनिक भी मंतोप महीं हुआ था। उनकी बिहवी के अंतिम दिनों में पुत्र की ओर मूमिका बीक ने अदा की थी उस हिंसाव में पिता की यूमिता में वे बिस कुम कुक गए थे।

उनके मर जाने के बाद बीक एकदम अफेला बढ़ गया था। उसे ऐसी स्थितियों के बीच से बुद्धता पड़ा था कि वह कुछ भी पह-सिव नहीं सका था। अपना पेट खाने और अपनी अकसी दूनिया जाकाव करने के लिए उसने जये सिरे से लेती मृहस्त्री का मिलसिमा प्रारंभ किया। पहले जब उसक पिता बिहवा थे लेत ठीका-बटाई पर दे दिए जाते थे। जो कुछ अनाव मिलता था उसमे पुद्र-बसर होता था। लेकिन पिता की मूर्खा के बाद बीक स्वयं लेती-मृहस्त्री में उन्नर आया। शुरू-शुरू में ही उसे खूँह की जानी पड़ी। वह लेती-मृहस्त्री के लोग के लिए एकदम नया था। कपवर बाहर कम अनाव ही बहु देवा कर सका। इसपर याद के चोर-बदमालों ने उसे कमजोर और अफेला समझहर उसके कम अनाव का आधा हिस्ता भी पायद कर दिया। फिर भी बहु टटा नहीं। उस पहले सास तक्षीण और गरेशानियों के बीच बहु अक्षर चिर गया। लेकिन थीरे और अपनी संघर्ष अमना और अपनी मेहनद के बल पर बहु अपनी हर मुदिद्दम को आसान बनाता गया।

बतोंकि उसकी देवाइल एक बद्रवस्तु औरत दी जोग औ वह भी

इसीनिए मारा गाव उससे घृणा करता था। लोग उमके साथ उठना-बैठना और खाना-पीना एकदम स्वीकार नहीं करते थे। गाव की सभाओं और उत्सवों में भी उने शामिल नहीं होने दिया जाता था। वह गाव में रहकर भी एकदम अकेला था। उसे न तो किसी ने साथ ही दिया था और न किसीने अपना स्नेह-संरक्षण ही। फलत धीरे-धीरे वह अपने गाव में कटता गया और अपनी खेती-गृहस्थी की दुनिया में जुटता गया।

वह किसीमें कुछ भी रिश्ता नहीं रखता था और न ही किसीमें कुछ अपेक्षा ही करता था। सुबह से शाम तक वह सारा दिन अपने खेतों में बहाता रहता। शुरू-शुरू में तो उमे अपनी दुनिया उजाड़ और बीराम लगती। लेकिन बाद में खुला आकाश, तेजी से बहती हर्इ हवा, खेतों की सोधी गध और लहराती हर्इ फसलों ने उसे अपने साथ जोड़ लिया। फिर क्या था! वह गाव में दिलकुल कट गया। अपने खेत के एक कोने में ही उमने अपने रहने के लिए भी एक कोठरी बना ली।

उसे कुछ भी पता नहीं चलता, गाव में क्या क्या हुआ? वह गाव जाता भी बहुत कम ही था—कभी, किसी आवश्यक कार्यवश ही। जिम तरह गाव ने उसके साथ उपेक्षा वरती थी, उसी तरह वह भी गाव के साथ उपेक्षा वरतने लगा था। वह गाव की किसी भी बात में रुचि नहीं लेता था। अपने को बगवर किसी न किसी काम में ही उलझाए रहता था। इस क्रम में उमे दो फायद भी हुए थे। पहला फायदा तो यह कि दिन-रात खेतों की देखभाल करते रहने के कारण उसकी फसलें आस-प.ोन के सभी किसानों की फसलों से ज्यादा अच्छी होने लगी थी। दूसरा फायदा यह हुआ कि अब चौर-बदमाश उसकी फसलों को अधिक तहम नहस नहीं कर पाते थे। हालांकि रातों में चौर जब भी उस बघार में जाते, तब उसके पाग अवश्य चले आते। लेकिन उसकी अवधिता और निड़ता को देखवर उसे अपना गुरु समझ आगे बढ़ जाते।

काफी समाप्त तक प्रकृति के सहवर्य में रहन के कारण उसे दो जवर-दम्प चीजें उलझ द्दी थी—अकबड़ व्यक्तित्व और खूब सुगठित भरपूर स्वस्थ शरीर। अब लोग उसे अकेला और असहाय नहीं समझते। उसके साथ मनमानी और अत्याचार करते हुए भी लोग डरते। वह लौहपुरुष

की वर्यू सर्वी-गर्भी और शारी-पानी के बीच भी अपने घेंडों में काम करता। अपने घटीं को उसने प्रह्लाद के विष्वास अनुदूल बना दिया था। सायद यही कारण था कि बीमारी शारि की परेशानियों से बहु बहु-धर बचा चुका है।

उन दिनों योंग के सौग उसकी कसरती देह और निरंतर आठों पहर बढ़ते रहते की चर्चा बराबर बराले जाते थे। क्योंकि परिषद् और मैहतान के बीच उसने अपने खेंडों की मिट्टी को विष्वास उर्वरा बना दिया था। इसीलिए उमक जासु-जड़ों के किसान और योंग के कई अम्ब जाम देनी भूहर्ती के मामते में उस साथ रखना चाहुन लगते थे। सेक्ष्यन सौगों के माम चाहने के बाबजूद वह किसीके साथ नहीं हो सका क्योंकि बचपन में ही योंग द्वारा मिमे तीव्रे अपमान में योंग और बहों के जोगों के प्रति उसके पास में ऐसे घोड़े दैदा कर ही थी। उद्य योंग के बढ़ते ही वह याद और बहों के सागों की ममस्याओं के बीच इच्छा लेना नहीं चाहता था। सेक्ष्यन एक सबै समय बाब न चाहते हुए भी वह बनवानीये बाब में माव कर आ रही एक बोरल के साथ हो रहे बर्याचार के लिमाल कर ही पहा था। पता नहीं इसके मिए उमे प्रेरणा प्रह्लादि से ही मिसी थी या विद्यी से मुझे ठीक-ठीक मामूल नहीं। सायद इसक बारे मेरे योंग के अन्य सौय भी नहीं जानते हैं। सेक्ष्यन उसी दिन से सारे योंग की चर्चाओं का वह विषय बन गया। हाँ एक के हूँडों पर दमका जाम उभर आया। हर बैठक में उसके ब्रह्मदृष्टित्व और सोह-शारीर के किसी गुरु हो गए।

बीसाकि बाप जान चुके हैं बीक के पीछे के बढ़ते ही वह बीरल मेरे योंग शारि थी। सेक्ष्यन बीक में अद्वित मेरे योंग को यम मिसा क्योंकि ट्रक्टर एक योंग की दूसरे योंग से हो गई थी। पर इसके मूल में बीक का ही पीड़प था। अग्राय के लिमाल अपना पहला करम बीक में ही उठाया था। मुझे पूरा विश्वास है बाब बीक के स्वान पर कोई होड़ा तो वह स्विति कभी नहीं आती। क्योंकि इस पट्टा मे पहले कभी भी मेरे योंग में किसी अविकृत को ग्यार दिसाने के लिए कोई ठीक-ठाक आई था नहीं हुआ था।

वात आगे बढ़ी थी। वह औरत अब मेरे गाव में ही रहने लगी थी। हालांकि अपने पति नरेश के अत्याचारों से वह पूर्णतः मुक्त हो गई थी, लेकिन मेरे गाव के लोगों की मानसिकता अभी उतनी विकसित नहीं हुई थी कि नरेश के नाम से भी उसे मुक्त कर दे। शायद यही कारण था कि नरेश से अलग हो जाने के बाद मेरे गाव के लोग उसे नरेश बहू से ही सबोधित करने लगे थे। फिर धीरे-धीरे समूचे गाव में उसका यही नाम प्रचारित हो गया था।

शुहू-शुरू में नरेश बहू दो-तीन दिनों तक राम बुज्जावनसिंह के बररही थी। फिर गाव में धूमने लगी थी। जल्द ही उसने गाव के सभी घरों से अपना परिचय कर लिया था। सभी घरों में उसका उठना-बैठना शुरू हो गया था, पर उसे चेत नहीं था। वह बैचीनी के साथ किसीको खोज रही थी। जब समूचे गाव में वह उसे नहीं मिला, तब वह गाव से बाहर खेतों में उसे ढूढ़ने लगी। फिर गाव से बाहर, वियावान खेतों के बीच एक दिन वह उसे मिल गया। वह बीरू था।

इस गाव में आने के तीन-चार दिन बाद से ही वह बीरू को ढूढ़ने लगी थी। वैसे वह कभी किसीसे नहीं पूछती कि उसको इस गाव ले आने वाला युवक कहा है? लेकिन उसकी आखों निरतर उस युवक को ही खोज रही थी और उसका मन उस युवक को अच्छी तरह जानने-समझने के लिए बैचैन था। आखिर वह कौसा और कौन-सा युवक है? उससे तो उसका कोई भी परिचय नहीं था। फिर भी उस अपरिचित युवक ने ही उसकी मुसीबती के बीच फसी जिदगी को किनारे लगाया था। और शायद इसीलिए उस युवक को देखने तथा उसको जानने-समझने की जिज्ञासा उसके मन में तीव्र हो गई थी।

जिस ममय नरेश बहू बीरू के पास पहुंची, उस समय दुपहरिया तपरही थी। खेतों में काम करनेवाले प्रायः सभी किसान अपने घर चले गए थे। लेकिन बीरू वा घर तो उसका खेत ही था। इसीलिए वह अपने खेत पर ही था। अपने खेत के पास ही मटक के किनारे महुआ गाछ के नीचे उसी दिन की भाति आराम कर रहा था। लेकिन उस दिन तो नरेश बहू दुख तकलीफ और परेशानियों के कारण हापते हुए वहा पहुंची थी, परतु इस

जार बहुत चाहि मीर भी गाय यह जाई थी । रास्ते भर या अमेर
सवाल क्षोरते रहे थे—“वह उठ युक्त कैसे बात करेंगी ? दोगुने भी
उसका अक्षते भावा— वह युरा कौन ही सोचता ? अगर उसे परिप्रभाव
समझ सेवा तब या करेंगी ? आदि-आदि ।

बहुत यहमर्द हुए नैया बहु महुधा गाए कि राय में उसके पास पहुंची ।
उसे दैवत ही वह पहचान पाया । इससे पहले कि मैरा बहु कुछ बहुती वह
बोझ उठा, कैसी हो ?

“ठीक हूँ ।

“अब तो कोई सकलीक नहीं है ?

“नहीं ।

“यहाँ पुनः कैसे चसी जाई हो ?”

“आपसे मिलने ; आपने मेरे सिर बहुत बुध किया है ।”

“नहीं, ऐसी बात नहीं है । मैंने तुम्हारे मिए बुध भी नहीं किया है ।
वह तो मेरा कर्त्र था ।”

“सेहिन कोय आज अपने कर्त्र को बहाँ पाव रख पाते हैं ? ”

“कोइ को छोड़ी । मुझ सीओं से कोई मतभव नहीं । मैं तो बराबर
कोइ से धूर रहता हूँ ।”

“अक्षते आ का ची खण जाता है ? अक्षतायन यमता भड़ी ?

“अक्षेत्र कहा हूँ । मेरे दैत है । मेरे सैन है । घर है । मिट्टी है । पानी
है । बुझी हुआ है । जुना आदान है ।”

“मैं सब कुछ जाम चुटी हूँ । मुझे दुष है, माँव में घारके साथ अव्याप
किया है ।”

“नहीं माँव में मेरे साथ कुछ भी नहीं किया है । मूल बाबू में कोई
मिकायत नहीं है ।—इस बार उम्ही आदान भर्ती कई थी रिग्ने मारू
आहिर हो रहा था उसे बाबू में मिकायत है महिन वह तिनीने बहुता
नहीं आह रहा था । फिर दानों मीठ हो गए थे । एक बंडी गामांडी थी
मेरन हुआ उसके पूछा “बाबू में बान रहन भीर गानेगीन का नेत्राम जा
कर किया है म ? ”

एक छोटी चुटी के बाबू बराबर में बुझ गौरवत हुआ बहु बाली अभी

तो उधर-उधर ही खाना मिल जा रहा है, लेकिन अब कुछ करूँगी। मुझे ढोंकी में चावल कुटना आता है। जाते से गेहू़ पीसना जानती हू़। घर-आगन की झाड़-बहार तथा चौका-वर्तन भों कर सकती हू़। अपना पेट चलाने भर इस गांव में काम कर लूँगी। अभी तो किसी-किसीके घर औरतों के साथ ही रह जाती हू़ लेकिन बाद में अपने रहने का इतजाम भी कर लूँगी।"

इसके बाद पुन वे दोनों चुप हो गए थे। फिर देर तक चुप रहे थे। अब तक शाम ढल चुकी थी। दिन में ठडापन उत्तर आया था। किसान पुन खेतों में आ गए थे। बीरु भी खेतों में जाना चाहता था। लेकिन नरेश वहू़ को अकेले छोड़कर जाना वह ठीक नहीं समझता था। शायद नरेश वहू़ ने भी भाव लिया कि बीरु उसके चलते खेतों में जा नहीं पा ग्हा है। अत वह बीरु में विदा लेकर गाव की ओर चल पड़ी। अभी उस महुआ गाछ से आगे वह दो-तीन कदम भी नहीं बढ़ पाई थी कि बीरु ने आवाज लगाई, "सुनो !"

"क्या ?" मुहत्ते हुए वह बीरु की ओर ताकने लगी।

"मैं एक अजीब आदमी हू़। अपना पेट भरन के सिवाय मेरे पास कुछ भी नहीं है। फिर भी तुम्हें जब भी किसी बात की तकलीफ हो या किसी चीज की जरूरत लगे मुझे याद कर लेना' कहते हुए बीरु खेतों की ओर चल पड़ा। वह भी गाव की ओर मुड़ चली। लेकिन रास्ते भर वह पलट-पलटकर बीरु की देखती जाती। बीरु जैसा आदमी वह अपनी अब तक की जिदगी में कभी नहीं देख पाई थी। बीरु उमे विलकुल प्रकृति पुरुष जचा था—इस दुनिया के छल-कपट और शोषण-प्रपञ्च से विलकुल अलग, प्रकृति की तरह ही पवित्र और ईमानदार।

नरेश वहू़ ने यह साफ महसूस किया कि बीरु ने शोषण और अत्याचार से उसे मुक्त किया है, इसीलिए उसे इस बात की चिता है कि कहीं फिर वह शोषण और अत्याचार के बीच फस न जाए। नरेश वहू़ के मन में कहीं बहुत गहरे तक बीरु का पीरप उत्तर गया। वह मन ही मन सोचने लगी, काश। बीरु जैसे लोग शुरू में ही उसकी रक्षा के लिए सामने आ गए होते, तो फिर उसकी यह दुर्गंति कभी नहीं होती।

मेरे योग में बात का बहुत गड़ बनते देर नहीं सकती है। कोई कुछ देखे, म हैले नमक मिर्च मिटाकर बात को बेबाल बना देता है। मरेश वहु के साथ भी एसा ही हुया। जिह दिन नरेश वहु बीह मेरि मिसकर योग सीरी, उसी दिन सनातनी भी तरह यह खदर पूरे गोद मेरि कैम पही कि नरेश वहु ने फोम रखा है कि नरेश वहु एक अरिष्ठीन महिमा है। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक यहाँ कि नरेश वहु का बीह से बहुत पढ़ते था मबप है कि बहुमर रसों मेरह वहु बीक के पाथ आती थी कि बीक से सोट-माठ करके ही वहु अपने पर से जानी थी, कि यही कारण था कि उसके लिए बीक से नरेश से सहाइ मोम भी थी आदि-आदि।

फिर नरेश वहु ने साथ मेरे योग का यही समृक शुरू हो गया जो सलूक अरिष्ठीन और बहुमर की उपाधि से विनियु हो आवे पर तिसी भी महिमा के साथ होता है। योग के प्रायः सभी मनस्तमे नरेश वहु को लामूक मदरों मेरह पूरने जाने। उसके साथ छिलोसी करता रहा उसे एकोत मेरह छहना लोगों ने घुरू कर दिया। उसकी मजबूरियाँ और उसकी असहाय मिरपाय जिहवी बहुत बहुत ही लोगों के विमान से लुप्त हो पही। उसकी जयानी और उसके नारीदेह के सामीप्य भी बात ही लोगों के मन मेरह उठने सभी। फिर इसे इस्तेमाल करने के लिए तुष्टकों और पहर्यजों का जाल भी लोग बुनने लगे।

शुरुआत राम बुझावनसिह के बहे लहके मेरही को। नरेश वहु को अपने पर भीका-बहुतम के लिए स्थावी रूप से उसने रक्षा दिया। याम ही उसके रहने के लिए अपने मकान के बाहर भी राम कोठरी भी है दी। हालांकि इसगे पहले नरेश वहु ने योग के दर्दी परों मेरह अपना याम शुरू कर दिया था। अपने जीविकोपार्वत की समस्या वहु हस कर चुनी थी, जैकिन राम बुझावनसिह का बहा लहका तो पहर्यजों के बीच उसे फैसाकर मनमानी करना चाहता था। इसीलिए उसने ऐसा दिया।

शुरू-शुरू मेरह नरेश वहु योग बाई भी और राम बुझावनसिह मेरह दो-तीन दिन के लिए अपने पर उस पनाह भी थी यह बात योग ही समझ मेरह आ पही थी क्योंकि तब स्थिति ही कुछ और थी। सेकिन इस बार जब